आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 दिसम्बर, 2015
वर्ष : 73 ★ अंक : 12 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 दिसम्बर, 2015★मार्गशीर्ष, 2072

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

आचार्य हीरा : आचार्यपद रजत साधनावर्ष

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :

Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जिनवाणी

हिन्दी-मासिक

卐 **संरक्षक**

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-26[illegible]63

卐 **संस्थापक**

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**

विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्[illegible]

दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,

जयपुर-302003(राज.)

फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 **प्रधान सम्पादक**

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,

नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)

फोन : 0291-2626279

E-mail : jinvani@yahoo.co.in

E-mail : editorjinvani@gmail.com

卐 **सह-सम्पादक**

नौरतन मेहता, जोधपुर

डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57

डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17

ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

तत्तो वि य उवट्टित्ता,
संसारं बहुं अणुपरियट्टंति।
बहुकम्मलेवलित्ताणं,
बोही होइ सुदुल्लहा तेसिं।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 8.15

फिर असुरयोनि में च्युत होकर,
भव में बहु चक्कर खाते हैं।
प्रचुर कर्म से लिप्त हुए वे,
बोधि सुलभ ना पाते हैं।।

दिसम्बर, 2015

वीर निर्वाण संवत्, 2542

मार्गशीर्ष, 2072

वर्ष 73 अंक 12

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ 51026632986

IFSC No. SBBJ 0010843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता

'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)

फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	बाल-दीक्षा का औचित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-सम्पादक	10
विचार-वारिधि-	आरम्भ और परिग्रह	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	11
प्रेरक-संदेश-	आचार्यप्रवर श्री हीरा का संदेश	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	12
प्रवचन-	जीवन में जो भी घटित होता है,...	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	18
शोधालेख-	आचार्य कुन्दकुन्द की कृतियों में जीवन-शैली	-प्रो. कमलेशकुमार जैन	21
जीवन-व्यवहार-	जीवन के सत्य	-आचार्यश्री विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म.सा.	30
व्रत-साधना -	ब्रह्मचर्य की साधना	-श्री पारसमल चण्डालिया	31
आ.पद रजतवर्ष-	गुरुवर मेरे हैं हीरा	-महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.	20
	गणि हीरा गुण की खान	-श्री धर्मचन्द जैन	37
काव्य-	वीर प्रभु की अंतिम वाणी (17)	-मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	38
प्रासंगिक-	स्वच्छता-अभियान की समस्या के विभिन्न आयाम	-डॉ. जीवराज जैन	42
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Ahimsa and Samayika	*-Sh. Tejraj P.*	48
नारी-स्तम्भ -	माता - भाग्य निर्माता (2)	-श्रीमती सुनीता मेहता	52
युवा-स्तम्भ -	युवा की धर्म से विमुखता : कारण और निवारण	-श्रीमती रुचि अनेकान्त जैन	55
स्वास्थ्य-विज्ञान -	शरीर में स्वयं रोग-मुक्त होने की क्षमता होती है	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	63
बाल-स्तम्भ -	दीपावली पर्व एवं उत्तराध्ययनसूत्र	-श्रीमती कमला सुराणा	70
विचार-	साधना के नौ अंग	-आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी म.	81
कविता/गीत-	'संथारा' आत्मजागरण है	-डॉ. प्रेमसुख सुराणा	47
	सूरज नया उगायें	-प्रवर्तक श्री गणेशमुनि शास्त्री	82
	मुक्तक	-डॉ. रमेश 'मंयक'	120
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	74
स्वाध्याय संघ-	पर्युषण रिपोर्ट-2015 का शेषांश	-संकलित	76
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	83
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	121

सम्पादकीय

बाल-दीक्षा का औचित्य

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

बाल-दीक्षा को लेकर देश में बार-बार विवाद उपस्थित होता रहता है। अभी गत माह अहमदाबाद के सेशन न्यायालय ने गुजरात पुलिस को आदेश दिया है कि आवश्यकता पड़ने पर मुनि श्री कीर्तियशसूरिजी को पकड़कर न्यायालय में लाया जाए। मुनि श्री को न्यायालय में उपस्थित होने के लिए गैर जमानती वारण्ट भी स्वीकृत किया गया। आचार संहिता के अनुसार जैन मुनि पद विहार ही कर सकते हैं, अतः मुनि श्री ने उपस्थित होने में असमर्थता व्यक्त की है।

ज्ञातव्य है कि 21 फरवरी 1997 को राजस्थान उच्च न्यायालय ने अपने ऐतिहासिक निर्णय में बाल-दीक्षा को उपयुक्त ठहराया है। निर्णय में कहा गया है कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 25 में भारतीय नागरिक को किसी भी धर्म को मानने, उसका आचरण करने एवं उसका प्रचार करने की समान रूप से स्वतन्त्रता प्राप्त है। यह यहाँ के नागरिकों का मौलिक अधिकार है। जिस प्रकार ईसाइयों में बालिका के नन बनने पर प्रतिबंध नहीं है तथा ब्राह्मण के जनेऊ संस्कार पर प्रतिबन्ध नहीं है उसी प्रकार जैन धर्म में अवयस्कावस्था में दीक्षा-ग्रहण करने पर संवैधानिक निषेध नहीं हो सकता। राजस्थान उच्चन्यायालय, जोधपुर के माननीय न्यायाधिपति श्री वी.जी.पलसीकर ने यह निर्णय जालोर के श्रीमन्तकुमार व्यास के द्वारा पत्र के रूप में दायर की गई जनहित याचिका पर हुई बहस के पश्चात् दिया। (निर्णय का प्रकाशन जिनवाणी के इसी अंक में द्रष्टव्य है) श्री व्यास ने अलवर-दीक्षा पर राजस्थान उच्चन्यायालय की जयपुर पीठ के द्वारा लगाई रोक के क्रम में बालोतरा में होने वाली 16 वर्षीया कु. किरण तातेड़ की दीक्षा को भी रोकने हेतु राजस्थान उच्चन्यायालय, जोधपुर को पत्र लिखा था। न्यायालय ने इस पत्र को जनहित याचिका के रूप में स्वीकार कर लिया तथा 21 फरवरी को उच्चन्यायालय के अधिवक्ता श्री मगराज सिंघवी ने संविधान के आधार पर जो प्रबल तर्क प्रस्तुत किए, उन पर विचार करते हुए माननीय न्यायाधिपति ने याचिका को निरस्त करते हुए जैन धर्म में दीक्षा-ग्रहण करने पर आयु का बंधन अस्वीकार कर दिया। इस निर्णय से यह स्पष्ट हो गया कि बाल-दीक्षा भारतीय संविधान की दृष्टि से उचित है। संविधान की दृष्टि से प्रमुख तर्क हैं-

1. भारत के लिखित संविधान में धर्म का आचरण भारत के नागरिकों का मौलिक अधिकार है। संविधान ने अनुच्छेद 32 से उच्चतम न्यायालय एवं अनुच्छेद 226 से उच्च न्यायालय को मौलिक अधिकारों की रक्षा करने का निर्देश किया गया है।

2. जैन धर्म में एवं जैन धर्म की दीक्षा ग्रहण करने में ऐसा कुछ भी नहीं है, जो नैतिकता एवं

जन-स्वास्थ्य को प्रभावित/दूषित करता हो। अतः बाल-दीक्षा को स्वास्थ्य आदि कारणों से प्रतिबन्धित नहीं किया जा सकता। शास्त्रीय दृष्टि से मुख्यतः निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर बाल-दीक्षा उचित प्रतीत होती है-

1. जब बालक पाँच समिति एवं तीन गुप्तियों का पालन करने में सक्षम हो, पंच महाव्रतों को धारण कर सकता हो, तभी उसे दीक्षा दी जा सकती है। यह योग्यता प्रायः आठ वर्ष से कम उम्र के बालक में नहीं आती है, इसलिए आगम में दीक्षा की जघन्य उम्र आठ वर्ष मानी गई है। भगवती सूत्र शतक 25 उद्देशक 7 में सामायिक संयत एवं यथाख्यात संयत की जघन्य स्थिति एक समय एवं उत्कृष्ट देशोन नव वर्ष कम पूर्वकोटि वर्ष कही गई है। जिन मनुष्यों की आयु पूर्वकोटि वर्ष होती है वे गर्भकाल सहित कुछ कम नौ वर्ष में प्रव्रज्या ग्रहण कर सकते हैं। इस दृष्टि से जन्म की अपेक्षा कुछ अधिक आठ वर्ष का मनुष्य दीक्षा ग्रहण कर सकता है। फिर विचारणीय बिन्दु यह है कि पूर्वाकोटिवर्ष वाला मनुष्य जब आठ वर्ष में दीक्षा ले सकता है तो उसी अनुपात में सौ वर्ष की आयु वाले मनुष्य को तो और भी पहले दीक्षा ग्रहण कर लेनी चाहिए। फिर भी आठ वर्ष का सक्षम बालक दीक्षा अंगीकार करने में समर्थ हो जाता है, क्योंकि प्राचीनकाल के आठ वर्ष के बालक से वर्तमान काल का आठ वर्षीय बालक मानसिक दृष्टि से कम विकसित नहीं होता है।

2. उत्तराध्ययनसूत्र में भगवान् महावीर ने गौतम स्वामी को सम्बोधित करते हुए बार-बार कहा है- 'समयं गोयम! मा पमायए' अर्थात् हे गौतम! समय मात्र का प्रमाद मत कर। काल की सूक्ष्मतम इकाई समय है। प्रमाद में बीता हुआ समय व्यर्थ जाता है। इससे यह भी ध्वनित होता है कि समय अमूल्य है। बीता हुआ समय वापस नहीं आता। इसलिए अणगार धर्म का समय टालना प्रमाद है। जीवन का क्या भरोसा? आचार्य शयम्भव ने यह जाना कि उनका सांसारिक पुत्र मनक आठ वर्ष का है तथा अब उसकी आयु मात्र छह माह शेष है तो उन्होंने उसकी वैराग्य भावना का आदर कर उसे दीक्षित किया तथा साध्वाचार की दृष्टि से संक्षेप में दशवैकालिक सूत्र की रचनाकर मनक का उद्धार किया। मनक ने मनुष्य जन्म को सार्थक किया। यदि दीक्षा सांसारिक भोग भोगने के पश्चात् ली जाती, तो मनक का जीवन कैसे सार्थक हो सकता था? इसी प्रकार अतिमुक्त कुमार ने भी बाल्यावस्था में ही भगवान महावीर के सान्निध्य में दीक्षा ग्रहण की थी।

3. उत्तराध्ययनसूत्र में दुर्लभचतुष्टय के अन्तर्गत मनुष्य जन्म, धर्मश्रवण, उस पर श्रद्धा एवं संयम में पराक्रम को उत्तरोत्तर दुर्लभ कहा गया है। (उत्तरा.3.1) इनकी दुर्लभता यदि किसी के लिए सुलभ हो जाये तो हम अन्तराय डालने वाले कौन होते हैं? धर्म की

दलाली करने वाले के कर्म निर्जरित होते हैं तथा भावना निर्मल बनती है, जबकि उसमें बाधक बनने वाला स्वयं तो पाप कर्मों का बन्धन करता ही है तथा अन्यों के भी पाप कर्म-अर्जन में निमित्त बनता है। यह अवश्य है कि किसी को बलात् दीक्षा देना उचित नहीं है। अतः बलात् दीक्षा देने या दिलाने से बचना चाहिए। दीक्षित होने वाले की योग्यता का आकलन पहले कर लेना उचित रहता है, उसकी रुचियों एवं वृत्तियों को जान लेना उचित रहता है, ताकि दीक्षा का निर्वाह वह निर्दोष रूप से कर सके।

4. आगम में अतिमुक्त कुमार, गजसुकुमाल आदि के द्वारा अवयस्क उम्र में दीक्षा ग्रहण कर लेने के उदाहरण विद्यमान हैं। आर्य वज्रस्वामी के लिए उल्लेख मिलता है (जैन धर्म का मौलिक इतिहास, भाग-2) कि उन्हें जन्म होते ही जातिस्मरण ज्ञान हो गया था तथा उनके पिता धनगिरि पहले ही जैन श्रमण बन गए थे। बालक भी श्रमण बनना चाहता था। इसलिए माँ सुनन्दा की गोद में ही क्रन्दन शुरु कर दिया। उसके द्वारा अनेक दिन तक ऐसा आचरण किए जाने पर माँ को यह क्लेशप्रद लगा। एक दिन गुरु सिंहगिरि के आदेश से धनगिरि उस बालक को भिक्षा में ले आए। बालक का नाम वज्र रखा गया। शय्यातरी के द्वारा उसका लालन-पालन हुआ एवं दीक्षा के योग्य उम्र आने पर उसे दीक्षा दी गई। ग्यारहवीं शती से लेकर 20 वीं शती के पूर्वार्द्ध तक शताधिक संतों ने बाल्यावस्था में दीक्षा ग्रहण की है। साध्वियों की सूची तैयार की जाये तो वह और भी ऊपर पहुँचेगी।

लघुवय में दीक्षा अंगीकार करना व्यावहारिक कारणों से भी उपादेय है-

1. यदि बचपन में वैराग्य भावना हो तो आचार्य उस बालक की पात्रता का परीक्षण कर अवश्य ही दीक्षा दे, क्योंकि सांसारिक कामभोगों में फंसने के बाद, परिवार बसा लेने के बाद, दीक्षा ग्रहण करना कठिन होता है। सूत्रकृतांग सूत्र में कहा गया है-

जस्सिं कुले समुप्पन्ने, जेहिं वा संवसे नरे।
ममाती लुप्पति बाले, अन्नमन्नेहिं मुच्छिए।।

व्यक्ति जिस कुल में उत्पन्न होता है, जिन लोगों के साथ रहता है उनके प्रति ममत्व करता है और दुःखी होता है। यह वास्तविकता है कि मनुष्य ममत्व करता रहता है और दुःखी होता रहता है, किन्तु महावीर जैसे विरले ही ऐसे साधक होते हैं जो परिवार को छोड़कर दीक्षा ग्रहण करते हैं। अन्यथा परिवार में फंसने के बाद पारिवारिक जनों के भरण-पोषण की चिन्ता बढ़ जाती है और वह दीक्षा में बाधक होती है। यदि कोई अपने को मजबूत करके परिवार छोड़कर दीक्षा हेतु निष्क्रमण करे तो उसे निकटवर्ती

लोग 'कायर' कहते हैं। इसलिए व्यावहारिक दृष्टि से भी बाल-दीक्षा उपयुक्त सिद्ध होती है। प्राचीन भारतीय आश्रम-व्यवस्था में प्रथम आश्रम ब्रह्मचर्याश्रम था। इस आश्रम में सबको रहना होता था। किन्तु कोई बाध्य नहीं था कि वह गृहस्थाश्रम का सेवन करे ही। वह आजीवन ब्रह्मचारी भी रह सकता था। ब्रह्मचारी के इस दृष्टि से दो भेद किए गए हैं- 1. नैष्ठिक 2. उपकुर्वाण। जो जीवन भर ब्रह्मचारी रहते थे उन्हें नैष्ठिक एवं जो विवाह होने तक ब्रह्मचारी रहते थे उन्हें उपकुर्वाण कहा जाता था।

महाकवि बाणभट्ट ने कादम्बरी के अंश शुकनासोपदेश में कहा है-'अयमेव चानास्वादितविषयरसस्य ते काल उपदेशस्य' अर्थात् जब तक विषय भोगों के रस का आस्वाद नहीं लिया है तब तक ही उपदेश का समय है। काम-भोगों का रस आने के पश्चात् हितकारी एवं सत्य उपदेश भी प्रभावहीन हो जाता है। कवि कहता है कि मन के निर्मल होने पर ही उपदेश की बातें प्रभाव डालती हैं-'**अपगतमले हि मनसि स्फटिकमणाविव रजनिकरगभस्तयो विशन्ति सुखेनोपदेशगुणाः।**'

दूसरी बात यह भी है कि काम-भोगों का सेवन करने के अनन्तर जो साधु बनता है वह उनके स्मरण एवं उद्दीपन के प्रसंगों से सर्वथा अप्रभावित नहीं रह पाता है। बाल-दीक्षित साधु यदि दृढ़ रहे तो वह इनसे बच सकता है।

2. एक अन्य व्यावहारिक एवं महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि बाल्यावस्था में दीक्षा ग्रहण करने वाला साधु आगम एवं शास्त्रों को कण्ठस्थ करने में जितना सक्षम होता है उतना वृद्धावस्था में दीक्षा ग्रहण करने वाला साधु नहीं। स्तोक हों, गाथाएँ हों या स्तोत्र, सबको स्मरण करने तथा प्राकृत एवं संस्कृत भाषाओं का पाण्डित्य पूर्वक अध्ययन करने के लिए लघुवय में दीक्षा ग्रहण करना अधिक उचित है।
3. जैन धर्म में यह परम्परा है कि साधु या साध्वी की उम्र संयमपालन के वर्षों के आधार पर आंकी जाती है। यदि दस वर्ष के बालक ने आज दीक्षा अंगीकार की है तथा उसके एक दिन बाद भी कोई 70 वर्षीय वृद्ध दीक्षा अंगीकार करता है तो वह उस बालक-साधु को वन्दन करता है। इसलिए जिसे अपेक्षाकृत कनिष्ठ साधु नहीं बनना है, वह बचपन में ही प्रव्रज्या अंगीकार करे।
4. यह अनुभव का सत्य है कि बालवय में दीक्षित साधु अधिकवय में दीक्षित साधु की अपेक्षा अधिक तेजस्वी होता है। अनेक आचार्य इसके उदाहरण हैं।

बचपन में ही दीक्षा-ग्रहण करना भारत की गौरवशाली परम्परा रही है। आचार्य श्री हस्तीमल जी म. ने 10 वर्ष की अवस्था में, श्री मधुकर मुनि जी ने 9 वर्ष, आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि जी ने 9 वर्ष, गणाधिपति श्री तुलसी जी ने 11 वर्ष, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने 9

वर्ष की उम्र में जैन भागवती दीक्षा ग्रहण कर सम्पूर्ण देश को अहिंसा, नैतिकता एवं मानवता का संदेश दिया है। भगवान् महावीर एवं उनके पूर्व से अब तक लघुवय में प्रव्रज्या अंगीकार करने की धारा निरन्तर प्रवाहित होती रही है। यही नहीं बौद्धों, ईसाइयों एवं हिन्दुओं में भी बचपन में दीक्षा दिए जाने की परम्परा अक्षुण्ण है। अद्वैत वेदान्त के प्रतिष्ठापक आचार्य शंकर ने तो बचपन में दीक्षा दिए जाने का एक अभियान चलाया। आज वैष्णव, रामस्नेही आदि समप्रदायों में भी बचपन में ही संत-जीवन अंगीकार करने की परम्परा सुरिक्षत है। इसलिए बालवय में दीक्षा भारतीय धर्म-संस्कृति की एक विशिष्ट परम्परा है। इस सम्बन्ध में सरकार या प्रशासन का अनावश्यक दखल नहीं हो सकता।

धर्मनिरपेक्ष देश भारत में सभी धर्मों की आचार-संहिताएँ मान्य हैं। फिर अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं परिग्रह रूप पंच महाव्रतों का पालन करने वाले जैन साधु-साध्वियों की आचार संहिता तो किसी भी प्रकार से देशविरोधी नहीं है। अहिंसा एवं अनेकान्त को लेकर चलने वाले जैन धर्म ने सदैव भारतीय संस्कृति की रक्षा की है। जैन संतों ने तो देश की आन्तरिक सुरक्षा की है तथा देश के नागरिकों को अनेक दुर्व्यसनों एवं बुराइयों से बचाया है।

'मानवाधिकार' के हनन के आधार पर यदि 'बाल-दीक्षा' को अनुचित समझा जाता है तो यह भी उचित नहीं, क्योंकि मानव का यह अधिकार है कि वह आत्म-कल्याण एवं जन-कल्याण के लिए अध्यात्म का मार्ग अपनाए। आध्यात्मिक-भावना को दबाना मानवता का हनन है। आज जब सर्वत्र हिंसा, आतंक, भ्रष्टाचार, अनैतिकता आदि का साम्राज्य है वहाँ दीक्षा का महत्त्व अधिक बढ़ा है।

दीक्षा के सम्बन्ध में यह तथ्य उल्लेखनीय है कि दीक्षा किसी को बलात् नहीं दी जा सकती। दीक्षार्थी की वैराग्य भावना होने पर भी उसको साधु-साध्वियों की जीवन-चर्या में जीने का प्रशिक्षण दिया जाता है, यदि वह उसमें रुचि नहीं रखता है तो उसे दीक्षा नहीं दी जा सकती। 'बाल-श्रम' एवं 'बाल-विवाह' में बालक के माता-पिता का आदेश चलता है, जबकि दीक्षा में उनका आदेश नहीं, अपितु बालक की भावना एवं योग्यता प्रमुख होती है। कभी-कभी दीक्षा की भावना से रहने वाले बालकों का मन पुनः कमजोर हो जाता है, तो उन्हें दीक्षा नहीं दी जाती। अधिक चंचलता होने पर एवं संयम के प्रति आदर भाव नहीं होने पर भी दीक्षा नहीं दी जानी चाहिए। दीक्षा-ग्रहण करने की योग्यता एवं भावना का परीक्षण करने के बाद यदि कोई आचार्य या साधु-साध्वी उचित समझते हैं तो दीक्षार्थी को दीक्षा प्रदान करते हैं, अन्यथा नहीं। ❖

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

जाणित्तु दुक्खं पत्तेयं सायं।

भोगामेव अणुसोयंति, इहमेगेसिं माणवाणं तिविहेणं जा वि से तत्थ मत्ता भवति अप्पा वा बहुया वा। से तत्थ गढिते चिट्ठति भोयणाए।

ततो से एगया विप्परिसिट्ठं संभूतं महोवकरणं भवति तं पि से एगया दायादा विभयंति अदत्तहारो वा से अवहरति, रायाणो वा से विलुंपंति, णस्सति वा से, विणस्सति वा से, अगारदाहेण वा से डज्झति।

इति से परस्स अट्ठाए कूराइं कम्माइं बाले पकुव्वमाणे तेण दुक्खेण मूढे विप्परियासमुवेति।

-आचारांग सूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, द्वितीय अध्ययन : चतुर्थ उद्देशक, सूत्र 82

अर्थ- दुःख और सुख प्रत्येक आत्मा का अपना-अपना है, यह जानकर (इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करे)। कुछ मनुष्य, जो इन्द्रियों पर विजय प्राप्त नहीं कर पाते, वे बार-बार भोग के विषय में ही (ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की तरह) सोचते रहते हैं।

यहाँ पर कुछ मनुष्यों को (जो विषयों की चिंता करते हैं) (तीन प्रकार से)- अपने, दूसरों के अथवा दोनों के सम्मिलित प्रयत्न से अल्प या बहुत अर्थ-मात्रा (धन-संपदा) हो जाती है। वह फिर उस अर्थ-मात्रा में आसक्त होता है। भोग के लिए उसकी रक्षा करता है। भोग के बाद बची हुई विपुल सम्पत्ति के कारण वह महान् वैभव वाला बन जाता है। फिर जीवन में कभी ऐसा समय आता है, दायाद हिस्सा बाँटते हैं, चोर उसे चुरा लेते हैं, राजा उसे छीन लेते हैं, वह अन्य प्रकार (दुर्व्यसन आदि या आतंक-प्रयोग) से नष्ट-विनष्ट हो जाती हैं। गृह-दाह आदि से जलकर भस्म हो जाती है।

अज्ञानी मनुष्य इस प्रकार दूसरों के लिए अनेक क्रूर कर्म करता हुआ (दुःख के हेतु का निर्माण करता है) फिर दुःखोदय होने पर वह मूढ़ बनकर विपर्यास भाव को प्राप्त होता है।

विवेचन-संसार मे कितनी भी वस्तुओं, धन-धन्यादि का संचय कर लिया जाए, किन्तु वह सदा साथ नहीं रहता। उसका विनाश या वियोग अवश्यम्भावी है। अतः उसके संचय के लिए क्रूर कर्म करना उचित नहीं है, क्योंकि क्रूर कर्मों का परिणाम स्वयं को भोगना पड़ता है। स्वयंकृत पापकर्मों का फल स्वयं को भोगना होता है, अतः रात-दिन भोगों का या भोग-सामग्री का चिन्तन करना एवं उसका संचालन करना उचित नहीं है। कभी मनुष्य परिवारजनों के लिए ऐसा करता है, तो उसका भी फल उसे ही भोगना पड़ता है, अतः अज्ञानी जीव क्रूर कार्य करके उत्पन्न दुःख से विपर्यास को प्राप्त होता है।**- सम्पादक**

विचार-वारिधि

आरम्भ और परिग्रह

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- जो पदार्थ यथार्थ में आत्मा का नहीं है, आत्मा से भिन्न है उसे अपना स्वीकार करना परिग्रह है। परिग्रह के मुख्य दो भेद हैं- आभ्यन्तर और बाह्य। रुपया-पैसा, महल-मकान आदि बाह्य परिगह हैं और क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, मोह आदि विकार भाव आभ्यन्तर परिग्रह कहलाते हैं।
- जिस धन के लिए मनुष्य इस लोक में सुखों का परित्याग करता है और परलोक को बिगाड़ता है वह धन उसके क्या काम आता है? इष्टजन का वियोग क्या धन से टल जाता है? जब विकराल मृत्यु अपना मुख फाड़कर सामने आती है तो क्या धन देकर उसे लौटाया जा सकता है? सोने-चाँदी और हीरों से भरी तिजोरियाँ क्या मौत को टाल सकती हैं? आखिर संचित किया हुआ धन का अक्षय कोष किस बीमारी की दवा है? चाहे गरीब हो या अमीर खायेगा तो खाद्य-पदार्थ ही, हीरा मोती तो खा नहीं सकता। फिर अनावश्यक धन-राशि एकत्र करने से क्या लाभ है? मानव-जीवन जैसी अनमोल निधि को धन के लिए विनष्ट कर देने वाले क्यों नहीं सोचते की धन उपार्जन करते समय कष्ट होता है, उपार्जित हो जाने के पश्चात् उसके संरक्षण की प्रतिक्षण चिंता करनी पड़ती है और संरक्षण का प्रयत्न असफल होने पर जब वह चला जाता है, तब दुःख और शोक का पार नहीं रहता।
- मनुष्य की वास्तविक आवश्यकताएँ बहुत कम होती हैं, किन्तु वह उन्हें स्वेच्छा से बढ़ा लेता है। आज तो मानव ही नहीं, देश भी गैर जरुरी आवश्यकताओं के शिकार हो गए हैं। विदेशों में क्या भेजें और कैसे विदेशी मुद्रा प्राप्त करें, यह देश के नेताओं की चिन्ता है। जब उन्हें अन्य पदार्थ भेजने योग्य नहीं दिखते, तो उनकी नजर पशु-धन की ओर जाती है। बढ़िया किस्म के वस्त्रों और मशीनों की पूर्ति के लिए धन कहाँ से दिया जाए? इसका एक रास्ता पशु-धन है। एक समय भारतवासी सादा जीवन व्यतीत करते थे, पर विदेशों का ऋण नहीं था, मगर आज विचित्र स्थिति बन गई है। नन्हें-नन्हें बच्चों को दूध न मिले और गोमांस विदेशों में भेजा जाए, यह सब आवश्यकताओं को सीमित न रखने का फल है।
- परिग्रह आरम्भ को छोड़कर नहीं रहता। वह जन्मा भी आरम्भ से है और उसका समर्थन भी आरम्भ ही करता है। आरम्भ से ही परिग्रह बढ़ता है। परिग्रह अपने दोस्त आरम्भ को बढाने का ध्यान रखता है। आरम्भ और परिग्रह के प्रति मनुष्य का अतिप्रबल आकर्षण रहा है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रेरक-संदेश

आचार्यप्रवर श्री हीरा का संदेश : विहारचरिया इसीणं पसत्था

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्य पदारोहण का यह रजतवर्ष चल रहा है। हमारे निवेदन पर उन्होंने विचरण-विहार, ठहरने के स्थान, आहार आदि के सम्बन्ध में श्रावक-श्राविकाओं द्वारा ध्यातव्य बिन्दुओं के बारे में हिण्डौन चातुर्मास में जो भाव अभिव्यक्त किए हैं, उन्हें यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। **-सम्पादक**

आगम में उल्लेख है- विचरण-विहार मुनि जीवन का प्रशस्त मार्ग है। बृहत्कल्प सूत्र की गाथाएँ निर्देशित कर रही हैं-

णो कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा वासावासासु चारए।
कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा हेमंतगिम्हासु चारए।।

साधु-साध्वियों को चातुर्मास में विहार करना नहीं कल्पता। उन्हें हेमन्त व ग्रीष्मऋतु में विहार करना कल्पनीय होता है। वैराज्य अथवा विरुद्ध राज्य में बार-बार जाना नहीं कल्पता। वहाँ जाने-आने का प्रसंग अपवाद मार्ग के अन्तर्गत स्वीकृत है। अगर वे ऐसा करते हैं तो तीर्थंकर व राजा की आज्ञा का अतिक्रमण करते हुए अनुद्घातिक चातुर्मासिक प्रायश्चित्त स्थान के भागी होते हैं।

उत्तराध्ययन सूत्र भी विहार के सम्बन्ध में उद्घोष कर रहा है- **काले कालं विहरेज्ज रट्ठे बलाबलं जाणिय अप्पणो य।** अर्थात्- साधु यथायोग्य कालानुसार अपनी शक्ति-अशक्ति को जानकर विभिन्न क्षेत्रों में विहार करें। **उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा पियमप्पियं सव्वं तितिक्खएज्जा।''** संयमी साधक प्रतिकूलताओं की उपेक्षा करता हुआ विचरण करें। भगवान महावीर तो घोर उपसर्ग सहन करने लाढ़ देश विचरण करने पधारे-

असमाणो चरे भिक्खू नेव कुज्जा परिग्गहं।
असंसत्तो गिहत्थेहिं अणिएओ परिव्वए।।

भिक्षु राग द्वेष से रहित हो मासकल्पादि नियमानुसार असमान (विलक्षण) होकर, गृहस्थों से निर्लिप्त होकर गृहबंधन से मुक्त रहता हुआ परिभ्रमण करे। विचरण करते समय साधु चर्याओं के सम्यक् परिपालन में सजगता रखे। विहारचर्या ऋषियों के लिये प्रशस्त है। विचरण किसे कहते हैं? महापुरुषों ने सरल भाषा में कथन रूप में कहा है- वीतराग के पथ

पर चरण बढ़ाने वालों का चलना 'विचरण' कहलाता है। विचरण दो प्रकार का बतलाया है- (1) आत्मरूप भाव विचरण (2) आगम अनुरूप द्रव्य विचरण।

आगम अनुरूप साधक आत्माओं का द्रव्य विचरण– साधुओं का द्रव्य विचरण नवकल्पी व सतियों का पंचकल्पी बताया है। बिना किसी विशेष कारण के चारित्रात्माएँ कल्प से अधिक एक स्थान पर नहीं विराजते। आगम–मर्यादा का प्राणप्रण से पालन करना अभीष्ट समझते हैं।

साधु–साध्वी के विचरण से चार की वृद्धि और संयम–जीवन में चार की शुद्धि होती है। साधु–साध्वी–श्रावक–श्राविका रूप इन चार तीर्थ की वृद्धि में विचरण–विहार सहायक होता है और ज्ञान–दर्शन चारित्र–तप, मोक्ष मार्ग के इन चारों साधनों की विहार–विचरण से शुद्धि होती है।

विचरण–विहार करने से मुनि–जीवन में नूतनता और निर्लिप्तता बनी रहती है। साथ ही श्रावक–श्राविकाओं एवं जनसमुदाय के जीवन में संसर्ग/सन्निधि से त्याग–वैराग्य, श्रद्धा एवं आस्था का आयाम सुदृढ़ बनता है। आत्म रूप भाव विचरण तो आठों याम चलता ही रहता है। आगम अनुरूप द्रव्य विचरण का कालमान आगम में शेष काल के आठ मास बताए गए हैं। इन आठ मास में साधु–साध्वी ग्रामानुग्राम विचरण करते हैं। इसी संदर्भ में नीतिकारों द्वारा कथित ये पंक्तियां भी उद्घाटित कर रही हैं–

संत बड़ा परमार्थी बणिया धर्म का ऊँट।
पाँच साथ बैठायले, ले जावे बैकुण्ठ।।

वास्तव में संत बड़ा परमार्थी होता है, जहाँ–जहाँ भी विचरण होता है, संसर्ग में आने वालों को धर्माचरण के मार्ग की ओर उन्मुख कर बैकुण्ठ का मार्ग प्रशस्त कर देता है। इसी कारण संत को ऊँट की तरह उपकारी बताया गया है।

आठ मास के विचरण में श्रावक–श्राविका भी अपने स्व विवेक का बोध जगायें। आगम अनुरूप द्रव्य विचरण के समय आत्मरूप भाव विचरण को पायें। श्रावक–श्राविका वर्ग के लिये विचरण–विहार विषयक निम्न कुछ बातें ध्यातव्य हैं–

1. विहार–सेवा संवर के साथ हो। संवर के प्रत्याख्यान कर लेने पर पाँच अभिगम अर्थात् (i) सचित्त का त्याग- सेल, घड़ी, मोबाइल, रिमोट का त्याग सहज ही हो जाता है। (ii) अचित्त का विवेक- यतना के साथ रहा जा सकता है। (iii) उत्तरासंग- संवर के प्रत्याख्यान कर लेने के बाद खुले मुँह बोलने की संभावना नहीं रहती। (iv) अंजलीकरण- संवर ग्रहण करने पर हाथों का नियंत्रण स्वतः ही हो जाता है। (v) विहार के समय मौनपूर्वक चलने पर स्वतः ही पांचवें नियम मन की एकाग्रता का

पालन हो जाता है। इस तरह यों कह सकते हैं कि पाँचों ही अभिगम का पालन हो जाता है।

2. संतों के साथ यदि विहार में कोई भी भाई साथ नहीं है तो ऐसी अवस्था में बहिनें साथ में विहार न करें। इसी प्रकार यदि महासतियाँ जी के विहार में कोई भी बहिन साथ में नहीं चल रही है तो भाई साथ में नही चलने का उपयोग रखें।
3. विहार के समय चाहे आगे चलना हो या पीछे, पूरे विनय के साथ चलें। जैसे- कभी कोई पीछे चल रहा है, किसी कारणवश संत-भगवंत रुक जायें तो पीछे चलने वाला इतना नजदीक भी पीछे से नहीं चल सके कि संतों के रुकने के साथ वह भिड़ जाये। संत-सतियों के बराबर नहीं चले। कुछ फासला रखकर पीछे ही चलें। व्यवस्था की दृष्टि से यदि आगे रहकर चलना पड़े तो कुछ आगे साइड ध्यान रखकर ही विहारचर्या के स्वरूपानुसार गति रखें।
4. विहार करवाते समय श्रावक-श्राविकाएँ, साधु-साध्वी के संयम पालन में सहयोगी बनें, इस हेतु विचरण के समय मार्ग में किसी भी प्रकार की बातचीत करता हुआ नहीं चले। ईर्या समिति के चारों कारणों का पालन करता हुआ उपयोग सहित विहार करवाये। यदि मार्ग संकरा है तो पंक्तिबद्धता से चलने का ध्यान रखें। समीप में प्रायः वनस्पति आदि हो सकती है, उन्हें विराधना नहीं पहुँचाते हुए गमनागमन करें।
5. विहार समय यदि उपानत् पहने हुए हैं, मुँहपत्ती भी लगा रखी है तो ऐसी स्थिति में उपानत् उतारने का विवेक रख कर्मो की निर्जरा करें। अर्थात् मुँहपत्ती का प्रयोग हो उपानत् का त्याग हो।
6. वर्तमान में सड़कों पर वाहनों की बहुलता होने से आवागमन अधिक रहा हुआ है। वाहन चालकों को भी असुविधा न हो, साधु-साध्वी भी सुरक्षित विचरण कर सकें, इसके लिये प्रशिक्षित मार्ग प्रदर्शक नियमों का उल्लंघन नहीं करते हुए, सावधानी के साथ वाहनों से बचाव करते हुए विचरण के समय सहकार करें।
7. विहार प्रारम्भ होने से पहले मार्ग की निश्चितता है। कभी ऐसा होता है- जब दो ओर से पहुँचने के रास्ते हैं, तब कुछ भाई कहते हैं- इधर से पधारो, तथा दूसरा कहता है- वो रास्ता लम्बा है, ऐसी ऊहापोह की स्थिति न हो। गन्तव्य स्थल सम्बंधी जानकारी की पूर्व में गवेषणा आवश्यक है।

स्थान सम्बन्धी ध्यातव्य बिन्दु

1. संत-सतियों को जहाँ पर ठहरना है, वह स्थान किराये का न हो। कच्चे पानी, बिजली आदि का संघट्ट का स्थल न हो। यदि संत हैं, तो वहाँ सूर्यास्त से पहले बहिनों का तथा

सतियाँ जी हैं तो भाइयों को रहना नहीं कल्पता है। उन्हें विराजने के स्थल को छोड़ देना चाहिए। सूर्योदय पश्चात् आने में कोई रूकावट नहीं है। समीप में खाने-पीने की अखाद्य वस्तुओं का व्यवसाय वाला स्थल न हो।

2. जीवोत्पत्ति रहित स्थान उपलब्ध कराये जाने की प्रधानता हो। जहाँ हरी वनस्पति का संघट्टा होने की संभावना हो, कीड़ी-मकड़ी युक्त स्थान हो, ऐसी जगह का विवर्जन करना चाहिए।
3. परठने की दृष्टि से जहाँ दस प्रकार की स्थण्डिल भूमि की उपलब्धता हो, ऐसे स्थलों की गवेषणा आवश्यक है। आजकल स्वच्छता अभियान राष्ट्रीय स्तर पर चला हुआ है, ऐसी स्थिति में बड़े शहरों में तो विकट समस्या है ही, अन्य कस्बों, गाँवों में भी समस्या आने वाली है। समाधान के लिये सुविज्ञ श्रावकों का इस पर चिंतन कर राष्ट्रीय स्तर पर समाचारी का पालन करने वाले चरित्रात्माओं के संदर्भ में संगठित हो प्रयास किये जाने नितान्त आवश्यक लगते हैं।
4. जिन स्थलों/स्थानों के सम्बन्ध में जन समुदाय में विपरीत धारणा बनी हुई है, ऐसे अशांत भवनों में जहाँ तक संभव हो संत-सती वर्ग को नहीं ठहराया जाना चाहिये। सती वर्ग के लिये गांव के मध्य अच्छे संस्कार वाले घरों के समीप ही ठहराये जाने का विशेष ध्यान रखा जाना अपेक्षित है।
5. मौसम के अनुसार विराजने का स्थल हो- जैसे वर्षाऋतु मे बौछारों का पानी अन्दर तक नहीं पहुँचे, ग्रीष्म ऋतु में लू-अंधड़, तूफान आदि से बचाव वाला स्थल हो, सर्दी मे किवाड़-खिड़कियाँ युक्त दरवाजे हों। ताकि संत-सती वर्ग की साधना-आराधना में प्रकृति प्रकोप से व्यवधान नहीं आये। पानी का भराव वाला स्थान व पथ न हो ताकि परठने जाने में दोष न लगे।

आहार पानी की गवेषणैषणा विषयक बिन्दु

1. उद्गम के 16 दोष हैं, जो गृहस्थ दाता के निमित्त से साधु को लगते हैं। यदि स्वाध्याय निरन्तर चलता हो तो इन दोषों के बारे में जानकारी हो जाने पर इन दोनों को टालकर निर्दोष वस्तुओं का प्रतिलाभ लिया जा सकता है। जानकार श्रावक विचरण के समय इनका विवेक रखकर अन्यान्य क्षेत्रों में दलाली का सुलाभ सहज प्राप्त कर सकते हैं।
2. संत-सतियों के लिए कहकर आहार पानी तैयार करवाना दोष का कारण है। इस विषयक श्रावक-श्राविकाओं में जागृति नितान्त आवश्यक है।
3. बाजार से मिठाई आदि खरीदकर, सब्जियाँ आदि लाकर छोटे-छोटे गाँवों में जैन-जैनेतर घरों में साधु-साध्वियों को बहराने के निमित्त से रख देना संयमी आत्माओं के

संयमी जीवन में दोष लगाने में सहकार करना है। श्रावक-श्राविका निर्दोष दलाली करने के गुर पहले सीखें, फिर दलाली करें, ताकि साथ रहने का मकसद सार्थक हो सके।

4. संत-सतियों के विचरण-विहार में साथ रहकर, संत जैसी प्रवृत्ति रखने का अभ्यास कर संत जैसा जीवन जीने का प्रयास करें। हो सकता है कोई ऐसा रत्न छिपा हो, जो भविष्य में संयम पथ पर आरूढ़ हो सके।

सर्वोत्कृष्ट धर्म संचय का आचरण करके श्रुतज्ञान से तत्त्व को उपलब्ध कराने वाला अनुत्तर ज्ञानधारी यशस्वी महर्षि मुनिवर अंतरिक्ष में सूर्य के समान धर्मसंघ में 'बहता पानी निर्मला' सदृश विचरण विहार का कल्प काल के अनुसार क्रम बनाये रख यत्र-तत्र-सर्वत्र प्रकाश रूपी आभा से उदीप्त करता रहता है।

साधु-साध्वियों के संयमी जीवन में विचरण विहार वाली परमोपकारी प्रवृत्ति कल्प काल के अनुसार चलती रहती है। कभी परिचित तो कभी अपरिचित क्षेत्र में भी सुदूर तक जाने का प्रसंग बन जाता है। पर जागरूक श्रद्धावान श्रावक/श्राविकाओं की सार संभाल से विचरण क्रम सरल व शासन प्रभावना वाला बना हुआ है। प्रबुद्ध श्रावकों की अग्लान भाव से सेवाएँ पीढ़ी दर पीढी हर क्षेत्र में रही हैं। दक्षिण प्रवास के समय विचरण विहार के दौरान जो अनुभूति हुई, वह अनुकरणीय है। वहाँ क्षेत्रानुसार सीमा बंधी हुई थी। ज्योहीं सीमा प्रारम्भ होती, उससे पहले ही श्रावकगण पहुँचकर दूरी मार्ग की स्थिति ठहरने का स्थल जैन-जैनेतर (शाकाहारी) घरों की पूरी जानकारी साथ लेकर आते। परठने आदि की दृष्टि से व्यवस्था प्रायः कर विद्यालय भवन में ही करने का खयाल रखते और इसके लिये वे निरन्तर मार्ग में पड़ने वाले समस्त विद्यालयों के कर्मचारियों से सतत सम्पर्क बनाये रखते थे। अतः संत-सती कभी भी पधारें, बाधा नहीं आती। पूर्व की बात करें- हर प्रान्त में ऐसे सेवापरायण श्रावक मौजूद थे, जो समूचे प्रान्त की पूरी जानकारी रखते-कहाँ, कौन श्रावक हैं? जो संभलाने का पूरा दायित्व निभा सकता है। उनमें से कई श्रावक वर्तमान में हमारे बीच नहीं हैं- पृथ्वीराज जी कवाड़- पीपाड़ वाले, पूनमल्ली- चेन्नई, पारसमल जी सुराणा- नागौर वाले- चेन्नई, विशनचंद जी मुथा कोसाणा वाले- लासूर, पूरे दो महीने की विहार सेवा करना अपना फर्ज समझते, सेवा भी अहोभाव के साथ हुआ करती। कर्नाटक से गणेशमल जी भण्डारी निमाज वाले, बैंगलोर, आंध्रा से किशोर जी छाजेड़, हैदराबाद, मध्यप्रदेश से मोहनलाल जी कटारिया नागपुर, घेवरचंद जी नाहर बरेली, सैलाना वाले प्यारचंद जी रांका, मारवाड़ से कुन्दनमल जी भंसाली, जोधपुर ताराचंद जी सिंघवी, पाली आदि ऐसे प्रबुद्ध श्रावकों की उल्लेखनीय सेवाएँ आज भी स्मृति में है। क्षेत्र स्तर पर श्रद्धा समर्पण के साथ कई

स्थानों पर आज भी विचरण विहार की सेवा का अच्छा रूप है। एक दिवसीय, त्रिदिवसीय या अधिक अवधि तक सेवा देने वालों की कमी नहीं है। श्रावक संघ, श्राविका महिला मण्डल, युवा परिषद् के उत्साही भाई/बहिन उत्सुकता से समयदानी बन विचरण-विहार के क्षेत्र में सेवा देने की भावना से स्वयं आगे आएँ। हर क्षेत्र में सक्रिय कार्यकर्ताओं की टीम सुगठित रहेगी तो साथ रहने वाले वेतनभोगी कर्मचारी को भी सम्बल मिल सकेगा। नहीं तो कोई यह कहेगा कि विचरण विहार वेतन भोगी कर्मचारी के भरोसे चल रहा है।

विगत अढाई वर्ष से पोरवाल, पल्लीवाल क्षेत्र में विचरण का प्रसंग रहा। दोनों क्षेत्रों में श्रद्धा समर्पित कार्यकर्त्ताओं की अनवरत सेवाएं रहीं। समयदानियों की आज भी कमी नहीं है। अनेकानेक आतुरता से सेवा देने के लिये प्रतीक्षारत हैं कि भाग्योदय से हमें भी सेवा का पुनीत अवसर शीघ्र सुलभ हो। उनकी भावना का समादर कर जोड़ने का लक्ष्य रखें।

महिलाएँ धर्म-ध्यान, तप-त्याग में सदैव आगे रही हैं। यहाँ भी वे संगठित हो विहार सेवा में अपनी उपस्थिति दर्ज करायें। जिस संघ की युवाशक्ति ऊर्जावान, सशक्त, कर्मठ व सक्रिय है, वह संघ उन्नति के शिखर पर पहुँच पाने मे समर्थ हुआ है। युवा परिषद् की युवा टीम अपनी ऊर्जा का उपयोग ज्ञानार्जन के साथ विचरण-विहार के क्षेत्र में भी प्रस्फुटित कर समयदानी बने। ऐसी मंगल भावना है।

विहार-चर्या की आचार-संहिता का पालन करते हुए विचरण-विहार को प्रशस्त बनायें।

-जगदीश जैन

अभिमत

'जिनवाणी' आज बालक, युवा , वृद्ध सभी की जरूरत बन चुकी है। इसमें प्रकाशित सम्पादकीय, प्रेरक संदेश, युवा स्तंभ, चिन्तन एवं तत्त्व-ज्ञान और आलेख सभी वय के लोगों के लिए ज्ञानपूर्ण हैं। परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए 'जिनवाणी' की उपयोगिता है।

मैं पिछले तीन वर्षों से 'जिनवाणी' का नियमित पाठक हूँ। जिनवाणी सर्वधर्म समभाव तो सिखाती ही है, इसके साथ ही वर्तमान परिस्थितियों में मुझे जिस ज्ञान की, अध्यात्म की, विचार की, गुणों की आवश्यकता है, वह सब भी मुझे जिनवाणी में प्रति माह पढने को मिलती है। जिनवाणी में प्रकाशित एक-एक लेख सोचने की शक्ति का दायरा बढ़ाता है। जिनवाणी आज वैचारिक क्रांति ला रही है। मानवीय गुणों की नई दिशाएँ इसमें मिलती हैं।

आपके द्वारा जिनवाणी राजकीय सुमेर पुस्तकालय, नेहरू पार्क वाचनालय, गांधी शांति प्रतिष्ठान, सूचना केन्द्र एवं न जाने कितने संस्थानों में भेंट की जाती है, जो मेरे जैसे असंख्य युवकों, विद्यार्थियों के लिए परम सौभाग्य की बात है।*- अशोक, प्लॉट नं. 33, सिन्धी मुस्लिम बस्ती, श्री राम हॉस्पीटल के पीछे, पाल रोड़, जोधपुर (राज.)*

प्रवचन

जीवन में जो भी घटित होता है, वह अपने अतीत का प्रतिबिम्ब है

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा महावीर भवन, अलवर में 28 सितम्बर, 2015 को फरमाए इन प्रवचनांश का संकलन-सम्पादन श्री ओमप्रकाशजी गुप्ता, राजस्थान टाइम्स, अलवर द्वारा किया गया है।-**सम्पादक**

क्या जीवन में कभी फिल्म देखने पिक्चर हॉल गए? क्या सोचा कि पर्दे पर चित्र कहाँ से आते हैं? सच यह है कि पहले से ही रील में कुछ भरा गया है, वही पर्दे पर दिखाई देता है। लाइट, प्रोजेक्टर, लाइटमैन आदि इन सभी का इसमें सहयोग होता है, तभी फिल्म पर्दे पर दिखाई देती है। इसी तरह अपने जीवन में जो भी अच्छा-बुरा घटित होता है, वह अपने अतीत का प्रतिबिम्ब है। अनादिकाल से मेरे जीव ने जो-जो कर्म किए, उनके ही तो प्रतिफल फिल्म की रील की तरह जीवन में प्रकट होते हैं। जो मैंने पूर्व में तरह-तरह की करनी करके रील में भरा है, वह चाहे अच्छा है या बुरा है, चाहे सातारूप है या असातारूप, उन सबका जिम्मेवार अन्य कोई दूसरा नहीं, वरन् मैं स्वयं ही हूँ। फिर हम सुख में फूलते और दुःख में मुरझा क्यों रहे हैं? जब सुख का कोई कारण बनता है, तब यह मैंने किया और यदि दुःख का कोई कारण प्रकट होता है, तब दूसरे को या भगवान को भी दोषी ठहराने से अज्ञानी आदमी नहीं चूकता।

अक्सर दुःख आने पर व्यक्ति ऐसा कह देता है कि हे भगवन्! मैंने तो किसी का अहित या बुरा किया नहीं, फिर मेरे साथ यह बुरा बर्ताव क्यों? चूंकि व्यक्ति सिर्फ वर्तमान भव को ही देखता है और पिछला भव याद नहीं रहता, तभी तो वह दुःख-कष्ट-पीड़ा-तनाव की स्थिति आने पर भगवान को ही दोषी ठहराने लग जाता है। वह इस परम सत्य को भूला हुआ है कि हर दुःख व सुख का कारण मेरा स्वयं का कर्म ही है, फिर भगवान को बीच में लाकर उन्हें दोषी ठहराना, अज्ञानता का नया पाप कर्म है। जब भौतिक सुख आता है, तब तो भगवान याद नहीं आते और दुःख उदय में आते ही भगवान याद आते हैं, यही तो स्वार्थ की पराकाष्ठा है, जिसे हमें मिटाना है। वर्तमान में यदि कोई पत्नी या पति या भाई-बेटा-मित्र बनकर अथवा अन्य किसी भी रूप में दुश्मन बन रहा है, अपने साथ बुरा बर्ताव कर रहा है, तंग या परेशान करने में सीमाएँ तक लांघ देता है, तो यह सब अपने पूर्व अतीत के दुष्परिणामों का ही प्रतिफल है। जैसे फिल्मी रील दिखाने में प्रोजेक्टर, बिजली आदि

सहयोगी हैं, वैसे ही ये तमाम लोग पाप के सहभागी रहे हैं। यदि शरीर में कोई भयंकर बीमारी उत्पन्न हो गई, व्यापार चौपट हो गया, रिश्तेदारों व भाई-बंधुओं ने भी मुँह फेर लिया, अपना पुत्र भी विरोधियों के साथ मिल गया, इन तमाम स्थितियों के लिए परमात्मा नहीं वरन् हम स्वयं ही दोषी हैं। फिर परमात्मा को भला-बुरा मत कहिए। जब बुरे कर्म किए मेरे जीव ने, तब किसी दूसरे को कभी दोष मत देना। पुण्य-पाप का कर्ता व्यक्ति खुद ही है। इसलिए अब चाहे स्थिति अनुकूल है या प्रतिकूल। बुरा हो रहा है या अच्छा हो रहा है। दुःख मिल रहा है या सुख की प्राप्ति हो रही है। अपमान हो रहा है या तिरस्कार। उन सभी हालातों में समतापूर्वक रहना और जीना शुरु करें।

जड़ पदार्थों के प्रति अपना वैराग्य भाव जागे, ऐसा सम्यक् पुरुषार्थ जागृत करने की साधना में तत्पर होने की आवश्यकता है। आत्मभाव में लीन होने के पथ का अनुसरण करने से ही अतीतकाल से अपने साथ चिपके हुए आ रहे कर्मों का पुराना जखीरा साफ हो सकेगा। आत्मा के गुणों को रोकने में जो भी बाधक तत्त्व हैं, उन्हें हटाने से ही आत्म-शुद्धि और फिर मुक्ति हो पाएगी। पहले के सिंचित्त कर्मों का लेखा-जोखा मिटाए बिना संसार में आज तक किसी को सिद्धत्व की प्राप्ति नहीं हुई, न कभी होगी। कर्मों का पूर्णतया सफाया करने की साधना से ही जीवन श्रेष्ठतम और आत्मा संसार के भंवरजाल से मुक्त हो पाती है।

जड़ के प्रभाव से मुक्त होने का ज्ञान अरिहंत वाणी के बिना सम्भव नहीं है। जो स्वयं भीषण से भीषण उपसर्ग सहन करके भी 'उफ' नहीं करते, जिन्होंने हँसते-हँसते अपने सिर पर आग के अंगारों को भी फूल समझा, कानों में ठुकते हुए कीलों को परमात्मा का अमृतरूपी रसायन मानकर शांत बने रहे, चण्डकोशिक जैसे भयानक सर्प के डंक देने पर भी उसे उपकारी मानकर आशीर्वाद दिया, ऐसे महापुरुषों का अंतरंग ज्ञान ही तो आत्मा के अभेद रहस्यों को उजागर कर पाता है। विपरीत हालातों में भी जो सम बने रहे, उनकी समता ही तो हमें सहन करने की ऊर्जा शक्ति प्रदान करती है। जड़ की जकड़ता को खत्म करने का ज्ञान उन्हीं अरिहन्त से प्राप्त हो पाता है, जिन्होंने ऐसा करके इसी पावन धरती पर मोक्ष पाया है। हम निमित्तों को दोष देना बिलकुल बंद कर दें, क्योंकि यह सब मेरे ही अपने दोषों-भूलों और बुरे कर्मों का दुष्परिणाम बनकर भिन्न-भिन्न तरह से प्रकट होता है, होता रहेगा। जब तक चेतन पर जड़ का प्रभाव रहेगा, तब तक हम संसार सागर से मुक्त और दुःखों से पिण्ड नहीं छुड़ा सकते। जड़ का जड़ पर, जड़ का चेतन पर, चेतन का जड़ पर और चेतन का चेतन पर प्रभाव पड़ता है। जब नीला व पीला रंग मिलाया जाता है, तब वह हरा रंग हो जाता है। गर्म दूध में थोड़ा सा जामन मिला दिया जाए, तब वह दही में परिवर्तित हो जाता है। दूध में यदि नींबू के सत् के रूप में थोड़ी सी टाटरी डाल दी जाए, तब दूध का परिणाम फिर दूसरा ही

होगा। यानी दूध पर एक वस्तु प्रभाव बढ़ा देती है, एक घटा देती है। इसी तरह चेतन पर जड़ पदार्थ प्रभाव डालते हैं, किन्तु जड़ कभी चेतन पर शासन नहीं कर सकता। संसार की कोई भी परिस्थिति हो, उन सबका जिम्मेवार मैं स्वयं ही होता हूँ। इसलिए परिस्थिति का नहीं परिणति का परिवर्तन करना होगा। परिणति पर विजय पाने वाले ही संसार से मुक्त होने की राह पाते हैं। जो अपने को अनुभव करें, वह है महात्मा और जो आत्मा में बैठा है, वह है परमात्मा। असंख्यात्मक भवों के कर्मों का जो स्टॉक अपने ही कषायों के कारण हमने इकट्ठा कर रखा है, उन कषायों का अंत किए बिना उनसे छुटकारा नहीं पाया जा सकेगा। अतः जीवन के हर कदम पर कर्मों का वेलकम करते हुए 'सम' बने रहें, यही सच्ची साधना है। ध्यान रहे- जो भी रोग व शोक के हालात पैदा होते हैं, वे प्राकृतिक न्याय हैं जो हमारे द्वारा की गई भूल को सुधारने के लिए आते हैं। हमने जब-जब प्राण, भूत, जीव एवं सत्त्व को दुःख दिया, छह-काय के जीवों को स्वाहा करने में अविवेकी बन गए, उनकी आह ही तो बीमारी या दुःख बनकर अब कर्म-निर्जरा के लिए उदित होकर आती है। यदि अभी भी अज्ञानता व संसार में ही उलझे व फंसे रहे, तब अतीत के वे कर्म, वर्तमान में नए कर्म बंध के साथ आगे भी रूलाते रहेंगे। हम जागें और आत्मा को निर्मल व पवित्र करने की साधना में जुटें। यही स्वर्णिम मौका है। ■

गुरुवर मेरे हैं हीरा

महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.

(तर्ज :- जब से हुई है शादी.....।)

गुरुवर मेरे हैं हीरा, धीरा है गुण गम्भीरा।
हीरे की क्या कहूँ मैं, कोहिनूर सम सच्चा हीरा।।टेर।।
हो संघ बगिया के माली, सींचा हर वृक्ष डाली।
शब्द कोश मेरा खाली, महिमा तेरी निराली।
हस्ती के पट्टधर हीरा, गुण गाने मन अधीरा।।1।।
दर्शन से मिलती शान्ति, प्रवचन से मिटती भ्रान्ति।
आत्मा में होती क्रांति, छाया में पा विश्रान्ति।
तेरी शरण में आकर, मिट जाए भव की पीरा।।2।।
जन-मन में छाया हरष है, बगिया खिली सरस है।
आचार्य पदारोहण का, आया रजत बरस है।
तप त्याग की भेंट चढ़ाएँ, बनके 'सरल' और वीरा।।3।।

-संकलनकर्त्री: सुश्री खुशबू कोठारी

शोधालेख

आचार्य कुन्दकुन्द की कृतियों में जीवन-शैली

प्रो. कमलेश कुमार जैन

आचार्य कुन्दकुन्द जैन परम्परा के एक ऐसे आचार्य हैं, जिन्हें श्रमण परम्परा में अतिशय महत्त्व प्राप्त है। जैन समाज में भी उनके प्रति महान् आदर का भाव है और उनकी रचनाएँ अमृत का घूँट जैसी मानी जाती हैं, जनता यथाशक्ति उनका पान करना चाहती है। कुन्दकुन्दाचार्य ने निर्ग्रंथ परम्परा की श्रुत आगम-परम्परा के आधार पर अपने आगम-ग्रंथों की रचना की है। उनके पाँच आगम प्रसिद्ध हैं- समय पाहुड, पवयण पाहुड (पवयणसारो), णियमसारो, पंचत्थिकायो, अट्ठपाहुड। इन पाहुडों को इतना अधिक महत्त्व प्राप्त है कि परवर्ती काल में इन्हें परमागम भी कहा गया है। रयणसार और तिरुक्कुरल भी आचार्य कुन्दकुन्द की रचनाएँ मानी जाती हैं।

कुन्दकुन्द एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी आचार्य थे। उनकी वाणी सीधी हृदय पर असर डालती है। उनकी वर्णन शैली भी अनोखी है। उनकी यह शैली वस्तु का स्वरूप बहुत सरलता से हृदयंगम करा देती है। इसमें व्यर्थ का विस्तार नहीं है। नपे-तुले शब्दों में विषय को रखना इनके ग्रन्थों की विशेषता है। आचार्य के सम्बन्ध में कथन है-

आचिनोति च शास्त्राणि आचारे स्थापयत्यपि।
स्वमाचरते यस्मात् तस्माद्दाचार्य उच्यते।।

अर्थात् जो शास्त्रों का निर्माण/चयन करता है, शिष्यों को आचार में स्थापित करता है तथा स्वयं आचार का पालन करता है उसे आचार्य कहा जाता है। कुन्दकुन्दाचार्य में ये सभी विशेषताएँ अपनी सार्थकता प्राप्त करती हैं। वे एक समाजसुधारक और अनुशासक आचार्य के रूप में भी जगह-जगह निर्देश देते दिखाई देते हैं।

समयसार में कुन्दकुन्दाचार्य का महान् आध्यात्मिक योगी रूप अनुभव में आता है, जहाँ उन्होंने स्वसमय-परसमय, निश्चय-व्यवहार पद्धति के द्वारा आत्मा के अनन्त वैभव को स्पष्ट और उजागर किया है, जो अन्यत्र दुर्लभ है। प्रवचनसार में वे एक महान् दार्शनिक आचार्य के रूप में दिखाई देते हैं। यहाँ पर उन्होंने ज्ञान, ज्ञेय और चारित्र इन तीनों की चर्चा करते हुए इनके सम्बन्धों की सूक्ष्म एवं युक्ति संगत दार्शनिक व्याख्या की है। इसी प्रकार

*आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के जयपुर चातुर्मास में 6-7 अक्टूबर, 2012 को आयोजित 'जैन जीवनशैली' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधालेख।

पंचास्तिकाय में उन्होंने षड्द्रव्यों एवं नवपदार्थों का व्याख्यान करके लोकव्यवस्था एवं मोक्षमार्ग का उत्कृष्ट विवेचन किया है। नियमसार एवं अष्टप्राभृत में उन्होंने विशेष रूप से मुनि के स्वरूप एवं उसकी चर्या के साथ, गृहस्थ श्रावक की चर्या एवं चारित्र का सुन्दर व सशक्त निर्देश दिया है। यहाँ पर वे एक समर्थ अनुशासक आचार्य एवं प्रभावशाली समाज सुधारक के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं।

कुन्दकुन्दाचार्य की प्रायः सभी रचनाएँ लघुकाव्य हैं, परन्तु उनका विषय अत्यन्त गम्भीर, गहन एवं महत्त्वपूर्ण है। यही कारण है कि अमृतचन्द्रसूरि ने इनके तीन ग्रन्थों पर वैदुष्यपूर्ण गम्भीर टीकाएँ लिखी हैं। जयसेनाचार्य ने भी अमृतचन्द्रसूरि के समान तीन ग्रन्थों पर, पद्मप्रभमलधारिदेव ने नियमसार पर तथा श्रुतसागरसूरि ने षट्प्राभृतों पर व्याख्याएँ लिखी हैं। इन सभी व्याख्याओं की अपनी स्वतन्त्र उपयोगिता एवं महत्ता है।

कुन्दकुन्दाचार्य का जैन परम्परा में विशेषकर दिगम्बर परम्परा में सर्वत्र जयघोष सुनाई देता है। उसका कारण है- कुन्दकुन्द के द्वारा प्रतिपादित वस्तु तत्त्व का, विशेषकर आत्म तत्त्व का सुन्दर एवं विशद वर्णन किया जाना। उन्होंने अपने ग्रन्थों में अध्यात्म धारा रूप अजस्र स्रोतस्विनी मन्दाकिनी को प्रवाहित किया है, जिसके पावन एवं शीतल प्रवाह में निमज्जन कर आज भी हजारों-लाखों प्राणी शान्ति तथा आनन्द को प्राप्त कर रहे हैं।

कुन्दकुन्दाचार्य के साहित्य को देखकर यह स्पष्ट पता चलता है कि कुन्दकुन्दाचार्य का लेखन मात्र बौद्धिक एवं सैद्धान्तिक ही नहीं है, अपितु अनुभूति परक एवं व्यावहारिक भी है। इससे यह भी पता चलता है कि यद्यपि वैयक्तिक साधना की दृष्टि से एकाकी जीवन लाभप्रद हो सकता है, किन्तु उस साधना से प्राप्त सिद्धि का उपयोग समाज कल्याण के लिए भी होना चाहिए।

'साहित्य समाज का दर्पण होता है' इस युक्ति के अनुसार कुन्दकुन्दाचार्य विरचित साहित्य में भी तत्कालीन देश, काल एवं धार्मिक, सामाजिक जीवन की जानकारी मिलती है। इस साहित्य में ऐसे बहुत से प्रसंग व मुद्दे देखने को मिलते हैं, जिनसे तत्कालीन समाज की जीवन शैली का स्पष्ट ज्ञान होता है और उन मुद्दों से वर्तमान काल की वैचारिक एवं धार्मिक समस्याओं के भी समाधान निकाले जा सकते हैं।

प्रस्तुत आलेख में कतिपय प्रमुख बिन्दुओं/प्रसंगों को लेकर कुछ चर्चा यहाँ पर प्रस्तुत की जा रही है।

वस्तु विवेचन का आधार-

वस्तु के स्वरूप का ज्ञान प्रमाण और नयों के द्वारा होता है। आचार्य कुन्दकुन्द ने नयों के द्वारा वस्तु तत्त्व का विवेचन किया है। वस्तुतः नयों का विवेचन शास्त्रीय और आध्यात्मिक

इन दो दृष्टियों के आधार पर किया जाता है। शास्त्रीय क्षेत्र में वस्तु तत्त्व का विवेचन द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक नयों के द्वारा किया जाता है और अध्यात्म दृष्टि से आत्मतत्त्व का विवेचन निश्चय और व्यवहार नय के द्वारा किया जाता है। 'आत्मनि' इति अध्यात्मम् अर्थात् जो आत्मा के आश्रित हो उसे अध्यात्म कहते हैं। वस्तु के एक-अभिन्न और स्वाश्रित-परनिरपेक्ष त्रैकालिक स्वभाव को जानने वाला नय निश्चय नय होता है और अनेक-भेदरूप वस्तु तथा उसके पराश्रित-पर सापेक्ष परिणमन को जानने वाला नय व्यवहार नय है। कुन्दकुन्द ने इन्हीं दो नयों को स्वीकृत किया है। निश्चय दृष्टि को परमार्थ और व्यवहार दृष्टि को अपरमार्थ कहा जाता है। इस बात को कुन्दकुन्दचार्य ने समयपाहुड में लिखा है कि व्यवहार (अशुद्ध नय) अभूतार्थ है और शुद्ध नय अर्थात् निश्चय (शुद्धनय) भूतार्थ है- **ववहारोऽभूयत्थो भूयत्थो देसिदोऽसुद्धणओ।** -समयपाहुड, गाथा 11

स्वाध्याय की उपयोगिता एवं महत्त्व

शास्त्रों के अध्ययन से श्रेय-अश्रेय, हेय-उपादेय का ज्ञान होता है, अतः निर्ग्रंथ मुनि और गृहस्थ श्रावक दोनों को आगमों का अध्ययन-स्वाध्याय कर अपनी श्रद्धा को सुदृढ़ करना चाहिए और चारित्र को निर्दोष बनाना चाहिए। क्योंकि जो श्रमण या श्रावक आगम ज्ञान से रहित होता है वह निज और पर को नहीं जान पाता, और जो निज और पर को नहीं जान पाता, वह भेद ज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकता। जो भेदज्ञान से रहित होता है, वह कर्मों का क्षय कैसे कर सकता है? कुन्दकुन्दाचार्य कहते हैं कि मुनिगण आगम से सब कुछ जानते हैं, इसलिए वे आगम चक्षु हैं। संसार के साधारण प्राणी इन्द्रियों से जानते हैं, इसलिए वे इन्द्रिय चक्षु हैं। देवगण अवधिज्ञान से जानते हैं अतः वे अवधिचक्षु हैं और सिद्ध भगवान् अपने केवलज्ञान के द्वारा समस्त पदार्थों को जानते हैं, इसलिए वे सर्वतश्चक्षु कहलाते हैं। जो श्रमण आगम का स्वाध्याय करके अपनी तत्त्वश्रद्धा को सुदृढ़ नहीं करता है उसके संयम नहीं होता। फिर जो संयम से रहित है, वह श्रमण कैसे हो सकता है?

आगमहीणो समणो णेवप्पाणं परं वि याणादि।
अविजाणंतो अत्थे खवेदि कम्माणि किध भिक्खू।।
आगमचक्खू साहू इंदिय चक्खूणि सव्वभूदाणि।
देवा ये ओहिचक्खू सिद्धा पुण सव्वदो चक्खू।।
आगमपुव्वा दिट्ठी ण भवदि जस्सेह संजमो तस्स।
णत्थित्ति भणइ सुत्तं असंजदो हवदि किध समणो।।
णहि आगमेण सिज्झादि सद्दहणं जदि ण अत्थि अत्थेसु।
सद्दहमाणो अत्थे असंजदो वा ण णिव्वादि।।

-प्रवचनसार,चारित्राधिकार, गाथा 33,34,36,37

कुन्दकुन्दाचार्य का कहना है कि साधु के लिए आगम का अध्ययन करना मात्र ही जरूरी नहीं है, अपितु तत्त्वार्थ का श्रद्धान करना भी आवश्यक है और मात्र श्रद्धान ही कार्यकारी नहीं है, उसके साथ संयम का आचरण भी परमावश्यक है, क्योंकि तत्त्व और पदार्थ विषयक श्रद्धान के अभाव में मात्र आगम के ज्ञान से जीव सिद्ध या मुक्त नहीं हो सकता। यदि पदार्थ का श्रद्धान तो हो पर संयम का अभाव हो, तब भी जीव निर्वाण अवस्था को प्राप्त नहीं हो सकता।

ज्ञान की गरिमा एवं फल

ज्ञान मनुष्य जीवन का सार है- **णाणं णरस्स सारो।** (दर्शनपाहुड 31) मुनि और गृहस्थ दोनों के लिए स्वाध्याय और आगमों के ज्ञान का प्रयोजन स्व-पर का ज्ञान प्राप्त करना है और शरीर, संसार तथा भोगों के प्रति मूर्च्छा या मोह का त्याग करना है। यदि कोई साधक आगम का ज्ञाता होकर भी पर-पदार्थों में मूर्च्छा को नहीं छोड़ता है, तो वह मोक्ष को प्राप्त नहीं कर सकता-

परमाणुपमाणं वा मुच्छा देहादिएसु जस्स पुणो।
विज्जदि जदि सो सिद्धिं ण लहदि सव्वागमधरो वि।।

-प्रवचनसार, चारित्राधिकार, गाथा 39

निर्ग्रंथ-परम्परा में अधिक ज्ञान की अपेक्षा नहीं है। यहाँ पर तिल तुष मात्र का ज्ञान भी कार्यकारी हो जाता है। जैन धर्म में सामान्य ज्ञान की भी उतनी महत्ता नहीं है, जितनी सम्यक् चारित्र पूर्वक हुए अल्पज्ञान की। इसीलिए कुन्दकुन्दाचार्य का उपदेश है कि अज्ञानी (मिथ्यादृष्टि/ अविवेकी) जीव सैकड़ों, हजारों और करोड़ों भव में भी जिन कर्मों का क्षय नहीं कर पाता है, उन कर्मों का नाश तीन गुप्तियों के धारक ज्ञानी (सम्यक्त्वी) जीव के द्वारा उच्छ्वास मात्र के समय में हो जाता है। परन्तु बारह अंग और चौदह पूर्वों का पाठी जीव भी सम्यक् चारित्र को धारण किए बिना सभी कर्मों का क्षय करने में समर्थ नहीं होता। कुन्दकुन्द कहते हैं-

जं अण्णाणी कम्मं खवेइ भवसयसहस्सकोडीहिं।
तं णाणी तिहिं गुत्तो खवेइ उस्सासमेत्तेण।।

-प्रवचनसार, चारित्राधिकार, गाथा 38

इन्द्रिय विषय और सुख-दुःख

इन्द्रियों के विषयों में जिनकी आसक्ति है, उनको स्वाभाविक दुःख होता है, क्योंकि यदि उन्हें दुःख स्वाभाविक नहीं है तो वे विषयों की प्राप्ति के लिए यत्न ही क्यों करते? कुन्दकुन्द कहते हैं- इन्द्रिय जन्य सुख परमार्थतः दुःख ही है। क्योंकि इन्द्रियों से प्राप्त होने वाला सुख पराधीन है, क्षुधा, तृषा आदि की बाधा से युक्त है। बीच-बीच में नष्ट होता

रहता है, बन्ध का कारण है, विषम है तथा दुःखरूप ही है-

जे सिं विसयेसु रदी तेसिं दुक्खं वियाण सब्भावं।
जदि तं ण हि सब्भावं वावारो णत्थि विसयत्थं।।
सपरं बाधासहियं विच्छिण्णं बंधकारणं विसमं।
जं इंदिएहिं लद्धं तं सोक्खं दुक्खमेव तहा।।

-प्रवचनसार, ज्ञानाधिकार गाथा 64,73

सांसारिक दुःखों से छुटकारा कैसे प्राप्त हो?

कुन्दकुन्दाचार्य का निर्देश है कि यदि व्यक्ति दुःखों से पूर्ण मुक्ति चाहता है तो उसे मुनि पद धारण करना चाहिए। क्योंकि सम्यग्दर्शन रूप विवेक दृष्टि से मोक्षमार्ग की पूर्णता सम्यक् आचरण अर्थात् सम्यक्चारित्र से ही होती है। जब तक सम्यक् चारित्र नहीं होता, उसमें भी परम यथाख्यात चारित्र नहीं होता, तब तक मोक्ष प्राप्त नहीं होता। इसलिए मोक्ष का साक्षात् मार्ग चारित्र है, अतः सभी को चारित्र धारण करने का प्रयास करना चाहिए-

पडिवज्जदि सामण्णं जदि इच्छदि दुक्खपरिमोक्खं।

-प्रवचनसार, चारित्राधिकार, गाथा 1

वास्तविक सुख कहाँ है?

कुन्दकुन्दाचार्य का कहना है कि जिस प्रकार ज्ञान आत्मा का अनुजीवी गुण है, उसी प्रकार सुख भी आत्मा का अनुजीवी गुण है। अतः प्रत्येक आत्मा में सुख का अनन्त सागर लहरा रहा है, पर उस ओर इस आत्मा का लक्ष्य नहीं बनता। अज्ञान के कारण यह आत्मा शरीर, धन-धान्य आदि पर-पदार्थों में सुख की खोज करता है और उन्हें सुख का स्थान समझकर उनमें रागभाव करता है। आचार्य कुन्दकुन्द दृष्टि प्रदान करते हुए कहते हैं- यह आत्मा स्पर्शनादि इन्द्रियों के द्वारा इष्ट विषयों को प्राप्तकर स्वयं स्वभाव से ही सुखरूप परिणमन करता है। शरीर सुख रूप नहीं है और न ही शरीर सुख का कारण है। शरीरों में भी वैक्रिय शरीर सुखोपभोग की अपेक्षा उत्तम माना गया है, परन्तु वह भी सुख रूप नहीं है और न ही सुख का कारण है, क्योंकि जड़रूप शरीर से चैतन्य गुण के अविनाभावी सुख की उत्पत्ति नहीं हो सकती। अतः इन्द्रियों के विषय वस्तुतः सुख के कारण नहीं हो सकते। इसी बात को दृष्टान्त द्वारा समर्थन करते हुए आचार्य कहते हैं कि जिस प्रकार जिस जीव की दृष्टि अन्धकार को हरने वाली होती है, उसे दीपक की जरूरत नहीं पड़ती। उसी प्रकार जिसकी आत्मा स्वयं सुखरूप है, उसे विषयों से क्या प्रयोजन हो सकता है?

पव्या इट्ठे विसये फासेहिं समस्सिदे सहावेण।
परिणममाणो अप्पा सयमेव सुहं ण हवदि देहो।।

एगंतेण हि देहो सुहं ण देहिस्स कुणइ सग्गे वा।
विसयवसेण दु सोक्खं दुक्खं वा हवदि सयमादा।
तिमिरहरा जइ दिट्ठी जणस्स दीवेण णत्थि कादव्वं।
तध सोक्खं सयमादा विसया किं तत्थ कुव्वंति।।

-प्रवचनसार, ज्ञानाधिकार, गाथा 65-67

वंदनीय कौन?

लोक में यह चर्चा होती ही रहती है कि वंदन करने योग्य कौन है? वंदना किसकी की जाये? इस प्रश्न का समाधान आचार्य श्री ने इस प्रकार दिया है कि सम्यग्दर्शन आत्मा के समस्त गुणों में महान् है। सम्यग्दर्शन ही धर्म का मूल कारण है, अतः सम्यग्दर्शन से विहीन की वन्दना नहीं करनी चाहिए। क्योंकि जो सम्यक्त्व से रहित हैं, उन्हें हजारों, करोड़ों वर्षों तक उत्तम और कठिन तप करने पर भी रत्नत्रय की प्राप्ति नहीं होती। इसलिए वंदना उनकी करनी चाहिए जो दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप तथा विनय में निरन्तर लीन रहते हैं, जो गुण धारकों का गुणगान करते हैं, वे ही वंदना करने योग्य हैं।

दंसणमूलो धम्मो उवइट्ठो जिणवरेहिं सिस्साणं।
तं सोऊण सकण्णे दंसणहीणो ण वंदिव्वो।।
सम्मत्त विरहियाणं सुट्ठुवि उग्गं तवं चरंताणं।
ण लहंति बोहिलाहं अवि वाससहस्स कोडीहिं।।
दंसण णाण चरिते तव विणये णिच्चकालसुपसत्था।
एदे दु वंदणीया जे गुणवादी गुणधराणं ।।

-दंसण पाहुड, गाथा 2,5,23

कुन्दकुन्दाचार्य का स्पष्ट निर्देश है- जो असंयमी भी है वह वन्दनीय नहीं है, भले ही वह वस्त्र रहित हो। वस्त्र का त्याग देना ही संयम नहीं है, अपितु वस्त्र त्यागपूर्वक सम्यग्दर्शनादि गुणों का प्रकट होना ही संयम कहलाता है। सम्यग्दर्शन आदि गुणों के बिना वस्त्र रहित और वस्त्र सहित- दोनों ही एक समान हैं, उनमें एक भी संयमी नहीं है-

असंजदं ण वंदे वच्छ विहीणोवि तो ण वंदिज्ज।
दोण्णिवि होंति समाणा एगो वि ण संजदो होदि।।

-दंसण पाहुड, गाथा 26

लिंग और मोक्ष मार्ग

जिनागम का कथन नय विवक्षा पर आधारित है। श्रोता और वक्ता दोनों को नय विवक्षा को स्पष्ट करते हुए अपनी बात कहनी और सुननी चाहिए, अन्यथा विसंवाद की

संभावना बनी रहती है। कुन्दकुन्दाचार्य का निर्देश है कि कुछ लोग लिङ्ग धारण करने को मुनि कहते हैं और इन्हें मोक्ष का मार्ग बताते हैं, परन्तु कोई लिङ्ग मोक्ष का मार्ग नहीं है, मोक्ष का मार्ग तो सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र की एकता है, इसलिए मोक्षमार्ग में आत्मा को लगाओ, उसी का ध्यान करो, उसी का चिन्तन करो, और उसी में विहार करो, अन्य द्रव्यों में नहीं। **-समयसार, सर्वविशुद्धि अधिकार, गाथा 408-412**

परन्तु कुन्दकुन्द स्वामी ने उक्त कथन करके मुनि लिङ्ग या श्रावक गृहस्थ लिङ्ग की अपेक्षा का निषेध नहीं किया है। इसलिए वे लगे हाथ अपनी नय विवक्षा को प्रकट करते हुए स्पष्ट कहते हैं कि व्यवहार नय दोनों लिंगों को मोक्षमार्ग कहता है, पर निश्चय नय मोक्षमार्ग में सभी लिंगों को इष्ट नहीं मानता।

ववहारिओ पुण णओ दोण्णिवि लिंगाणि भणइ मोक्खपहे।
णिच्छयणओ ण इच्छइ मोक्खपहे सव्वलिंगाणि।।

-समयसार, सर्वविशुद्ध गाथा 414

आत्मा के साथ कर्मों का बन्ध क्यों होता है?

कुन्दकुन्दाचार्य ने इस विषय की चर्चा करते हुए एक मार्मिक बात कही है। वे कहते हैं कि रागी जीव कर्मों को बांधता है और राग से रहित आत्मा कर्मों से मुक्त होता है। वास्तव में जीव के कर्म बन्ध का यही सार है। वस्तुतः जीव की राग परिणति ही कर्म बन्ध का कारण है, जबकि आत्मा का स्वभाव वीतरागी है, अतः वीतरागी आत्मा का स्वभाव ध्यान में रखकर राग को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए-

रत्तो बंधदि कम्मं मुंचदि कम्मेहिं रागरहिदप्पा।
एसो बंध समासो जीवाणं जाण णिच्छयदो।।

-प्रवचनसार, ज्ञेयाधिकार, 87

शाश्वत सुख प्राप्ति का उपाय- दुःख मुक्ति और शाश्वत सुख का आधार कर्मों का क्षय है। यह कर्म क्षय सम्यक् दृष्टिपूर्वक चारित्र धारण करने से होता है। यह चारित्र साम्यभाव स्वरूप होता है, मोह और क्षोभ से रहित आत्म परिणति साम्यभाव कहलाती है-

चारित्तं खलु धम्मो धम्मो जो सो समो त्ति णिद्दिट्ठो।
मोहक्खोहविहीणो परिणामो अप्पणो हु समो।।

-प्रवचनसार, ज्ञानाधिकार 7

चारित्रगुण का विकास मुनिचर्या में होता है जो भव्य जीव मुनिपद धारण करने को उत्सुक होता है, उसे अपने भाई बन्धुओं से पूछकर अपने माता-पिता, स्त्री पुत्रादि से छुटकारा प्राप्त करना चाहिए। उसके बाद ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप और वीर्य इन पाँच आचारों को प्राप्त करना चाहिए-

आपिच्छ बंधुवग्गं विमोहदो गुरुकलत्तपुत्तेहिं।
आसिज्ज णाणदंसण-चरित्ततववीरियायारं।।

-प्रवचनसार, चारित्राधिकार, गाथा 2

उदासीन व्यक्ति अपने बन्धुवर्ग, माता-पिता आदि बड़े जनों से किस प्रकार अनुमति प्राप्त करे, इस विषय में व्याख्याकार अमृतचन्द्रसूरि ने बहुत सुन्दर बात कही है। वे कहते हैं- मुनिपद धारण करने का इच्छुक भव्य जीव अपने बन्धुवर्ग से पूछता है- इस जन के शरीर सम्बन्धी बन्धुजनों के शरीर में रहने वाले आत्माओं! इस जन का आत्मा आप लोगों का कुछ भी नहीं है, यह आप निश्चय ही जानो। इसीलिए आप से पूछा जा रहा है। आज इस जन की ज्ञान ज्योति प्रकट हुई है। अतएव यह आत्मा अनादि बन्धु स्वरूप स्वकीय आत्मा के पास जाता है। इच्छुक व्यक्ति योग्य आचार्य के पास जाकर उनसे प्रार्थना करता है- "हे भगवन्! मुझे चरणों में आश्रय दो। मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं अन्य लोगों का नहीं हूँ और अन्य लोग मेरे नहीं हैं। मेरा किसी के साथ ममत्व भाव नहीं है, अतः यथाजात मुद्रा को धारण करना चाहता हूँ। आचार्य भी शिष्य की योग्यता देखकर उसे अट्ठाईस मूलगुणों (पाँच महाव्रत, पाँच समिति, पाँच इन्द्रिय दमन, छह आवश्यक, केशलोंच, आचेलक्य, अस्नान, भूमिशयन, अदन्तधावन, एकभक्त स्थित भोजन) का उपदेश देते हैं।

मुनि प्रमाद रहित होकर गमनागमनादि क्रियाओं को करता है। कुन्दकुन्दाचार्य के अनुसार समता, वन्दना, स्तुति, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय और कायोत्सर्ग ये छह आवश्यक हैं। इनका यथार्थ रीति से पालन करने वाला श्रमण ही यथार्थ श्रमण है। जो श्रमण आवश्यक से रहित होता है, वह चारित्र से भ्रष्ट माना जाता है। आवश्यक सहित श्रमण अन्तरात्मा होता है और आवश्यक से रहित श्रमण बहिरात्मा होता है। -प्रवचनसार, चारित्राधिकार, गाथा 3-8

कुन्दकुन्दाचार्य ने संसार और शरीर के स्वरूप के चिन्तन से संवेग और वैराग्य भाव उत्पन्न करने हेतु अनुप्रेक्षाओं का विवेचन किया है। तत्त्वों-पदार्थों के स्वरूप का बार-बार चिन्तन करना, बार-बार देखना-विचार करना अनुप्रेक्षा है। अनुप्रेक्षा को भावना भी कहते हैं। अनुप्रेक्षाओं की संख्या 12 है। इन भावनाओं के चिन्तन से संसार शरीर एवं भोगों के प्रति वैराग्य भाव उत्पन्न होता है। उनके प्रति मोह का भाव शिथिल होता है। संसारी प्राणी का सबसे प्रबल शत्रु मोह या मूर्च्छा भाव है, पर-पदार्थों के प्रति इसकी आसक्ति दुःख का कारण बनती है। अतः अनित्य, अशरण आदि 12 अनुप्रेक्षाओं के चिन्तन द्वारा श्रमण और श्रावक को अपने वैराग्य भावों को सुदृढ़ करना चाहिए।

शुभयोग की उपयोगिता तथा महत्ता- शुभयोग की मोक्ष मार्ग में कितनी महत्ता है, इसे स्पष्ट करते हुए कुन्दकुन्द कहते हैं कि शुभयोग की प्रवृत्ति सर्वथा निरर्थक नहीं है, क्योंकि

उससे अशुभयोग का निराकरण होता है और शुद्धोपयोग के द्वारा शुभयोग का निरोध होता है-

सुहजोगस्स पवित्ती संवरणं कुणदि असुहजोगस्स।
सुहजोगस्स णिरोहो सुद्धुवजोगेण संभवदि।।

-द्वादशानुप्रेक्षा, गाथा 63

क्या वर्तमान काल में ध्यान संभव है?

लोक में यह चर्चा प्रायः होती रहती है कि वर्तमान काल में ध्यान नहीं सध सकता, क्योंकि यह निकृष्ट काल है, इसमें मन की चंचलता, भावों की एकाग्रता, चित्त की वृत्तियों का निरोध असंभव है। आचार्य कुन्दकुन्द ने इस विषय की चर्चा करते हुए फटकार लगाई है कि कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि वर्तमान काल में ध्यान और योग साधना का होना संभव नहीं है। ऐसा वही लोग कहते हैं जो कमजोर हैं, जिन्हें कल्याण की इच्छा नहीं है, व्रतों के प्रति आदर नहीं है, त्याग के प्रति उत्साह नहीं है, सम्यक् क्रियाओं में रुचि नहीं है, जीवों के प्रति आदर नहीं है तथा जो अपने भावों की संभाल नहीं कर पाते। कुटिल सोचते हैं, वक्र बोलते हैं और वक्र ही करते हैं, ऐसे निकम्मे चारित्रमोह से घिरे प्राणी ही ऐसा बहाना बनाते हैं।

उन्हीं को ध्यान के लिए यह काल उपयुक्त नहीं लगता, उन्हें ही ध्यान की विपरीतता दिखती है, जिनको न तो पदार्थों के स्वरूप के प्रति श्रद्धा है और न उनके स्वरूप की जानकारी है, जिन्हें कभी मुक्ति को प्राप्त नहीं करना है, जो संसार के सुखों में लीन रहते हैं, इन्द्रियों के व्यापार में सुख का अनुभव करते हैं, अहिंसादि व्रतों, ईर्यादि समितियों और मनोगुप्ति आदि गुप्तियों के विषय में कर्त्तव्यविमूढ़ हैं तथा इसके उपयोग एवं महत्ता से अपरिचित हैं।

उन्हें ही यह लगता है कि इस भरत क्षेत्र में दुषमा नाम पाँचवें हुण्डावसर्पिणी काल में मुनियों को भी धर्म-ध्यान नहीं हो सकता तथा कोई भी मुनि धर्मध्यान में स्थित होकर आत्म-स्वभाव में स्थिर नहीं हो सकता। ऐसा जो मानता है वह महा अज्ञानी है, क्योंकि आज भी सद्दृष्टि, सद्ज्ञान और सम्यक् आचरण रूप रत्नत्रय से शुद्ध साधक आत्मा का ध्यान कर स्वर्ग में इन्द्रपने को प्राप्त हो सकता है, लोकान्तिक देवों के पद को प्राप्त कर सकता है और वहाँ से च्यव करके केवल ज्ञान प्राप्त करके मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।

इस तरह आचार्य कुन्दकुन्द ने अपनी रचनाओं में तत्त्वों के स्वरूप का जो प्रतिपादन किया है वह दुःख संतप्त संसारी मनुष्य के लिए शीतल जल एवं मनोरम छाया के समान अत्यन्त ग्राह्य है। मुमुक्षु प्राणी को इनका सर्वतोभावेन लाभ उठाना चाहिए।

-प्रोफेसर, जैनदर्शन विभाग, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, त्रिवेणीनगर, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर-302015 (राज.)

जीवन-व्यवहार

जीवन के सत्य

आचार्य श्री विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म.सा.

कान जो लम्बे रख सकता है
अर्थात् जो ज्यादा सुन सकता है।
आँख जो बड़ी रख सकता है
अर्थात् जो दूर तक देख सकता है।
और जीभ जो छोटी रख सकता है
अर्थात्
जो कम बोल सकता है
उसे जीवन में क्लेश एवं
संक्लेश का शिकार बनने के
मौके बहुत कम आते हैं।

मानव के स्वभाव की दो विचित्रताएँ
हमेशा दृष्टि के समक्ष रखने जैसी हैं।
पाप के क्षेत्र में
वह जो करते हुए
नहीं डरता वह कहते हुए डरता है।
और धर्म के क्षेत्र में वह
जो कहता रहता है
वह करने की हिम्मत नहीं करता।
करुणता ही है ना?

सज्जन की जिन्दगी
खुली किताब जैसी होती है।
समझदार व्यक्ति वह किताब
खोलकर उसके पन्ने पढ़कर
अपने जीवन को सज्जन जैसा
बनाने के लिए प्रयत्नशील रहता है।
जबकि दुर्जन वह किताब खोलकर
उसके पन्ने अपनी इच्छानुसार
फाड़ते रहकर अपने जीवन को
अधिक खराब बनाता रहता है।

"घुड़सवार घोड़े पर चढ़कर घुड़सवारी
करना सीखे इतना ही पर्याप्त नहीं है,
उसे घोड़े से उतरना भी आना चाहिए।"
मेक्सिको की यह कहावत
इतना ही कहती है कि
मानव को आगे बढ़ना आये
इतना ही पर्याप्त नहीं है,
उसे रुकना भी आना चाहिए।
जीवन को जाँच लो,
यह कला आत्मसात् हुई है भला?

-'इशारा' पुस्तक से साभार

व्रत-साधना

ब्रह्मचर्य की साधना

श्री पारसमल चण्डालिया

साधारणतया वीर्य रक्षा को ही ब्रह्मचर्य कहा जाता है। किन्तु वास्तव में ब्रह्मचर्य का अर्थ है समस्त इन्द्रियों का संयम। जब तक समस्त इन्द्रियों पर संयम न रखा जाए तब तक पूर्ण बह्मचर्य का पालन नहीं हो सकता। अतः इन्द्रिय विषयों- कामभोगों पर नियंत्रण आवश्यक है। देव, दानव से लगाकर सभी जीवधारी काम के कीचड़ में फंसे हुए हैं। क्योंकि-

काम भोग प्यारा लगे, फल किम्पाक समान।
मीठी खाज खुजावतां, पीछे दुःख की खान।।

जो लोग कामभोगों की तुच्छता को समझ लेते हैं और उनका त्याग करना चाहते हैं वे भी मन की चंचलता और इन्द्रियों की अदम्यता के कारण उनका त्याग करने में असमर्थ हो जाते हैं। ऐसी अवस्था में ब्रह्मचर्य का पालन करना सचमुच ही अत्यन्त दुष्कर है। फिर भी आत्मा में अनन्त शक्ति है और इतनी शक्ति है कि यदि उसके प्रयत्न अनुकूल दिशा में किये जाए तो वह इन्द्रियों का दमन करके और मन की नकेल अपने हाथों में संभाल कर उनका स्वामी बन सकता है। जिन्होंने इस पथ का अनुसरण किया है वे सब प्रकार के काम-विकार पर विजय प्राप्त कर सके हैं, वे पूर्ण ब्रह्मचारी बने हैं। उनके पवित्र चरणों में देव, दानव, गंधर्व, यक्ष, राक्षस और किन्नर देवता भी मस्तक झुकाते हैं। कहा भी है-

देव दाणव गंधव्वा, जक्ख रक्खस किन्नरा।
बंभयारिं णमंसंति, दुक्करं जे करेंति तं।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन 16, गाथा 16

ब्रह्मचर्य की प्रशंसा करते हुए उचित ही कहा है-

मेरु गरिट्ठो जह पव्वयाणं एरावणो सारबलो गयाणं।
सिहो बलिट्ठो जह सावयाणं, तहेव सीलं पवरं वयाणं।।

जैसे समस्त पर्वतों में मेरु पर्वत बड़ा है, समस्त हस्तियों में ऐरावत बलिष्ठ है, वन्य पशुओं में सिंह बलवान् है। उसी प्रकार समस्त व्रतों में ब्रह्मचर्य श्रेष्ठ व्रत है। ब्रह्मचर्य इतना महान् व्रत है कि उसके यशोगान का अंत नहीं हो सकता।

भगवान् ने स्वयं सूयगडांग सूत्र में कहा है- 'तवेसु वा उत्तम बंभचेरं' ब्रह्मचर्य समस्त तपों में उत्तम है।

ब्रह्मचर्य की महत्ता से प्रेरित होकर प्रत्येक धर्म के अनुयायी और प्रत्येक देश के निवासी उसकी आवश्यकता का अनुभव करते हैं और मुक्त कण्ठ से उसकी प्रशंसा करते हैं। किन्तु आधुनिक युग में पाश्चात्त्य संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण आज की युवा पीढ़ी ब्रह्मचर्य पालन से भटक रही है। प्राचीन काल में बालक जब विद्याभ्यास के योग्य वय प्राप्त कर लेता था तब उसे कलाचार्य के समीप विविध कलाओं का अभ्यास करने के लिए भेज दिया था। वहाँ का वातावरण अत्यन्त स्वच्छ, सर्वथा विकार हीन, शांत और सौम्य होता था। बालक पच्चीस वर्ष की अवस्था तक ब्रह्मचर्य का पालन करता हुआ सब प्रकार की विद्या और कला की शिक्षा ग्रहण करता था। इस प्रकार बाल्यकाल में पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करने के कारण लोगों का शारीरिक संगठन खूब दृढ़ होता था और वे दीर्घ जीवन प्राप्त करते थे। साथ ही स्वस्थ, बलिष्ठ और विविध प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न होते थे। आज गुरुकूल परम्परा विच्छिन्न हो जाने और कॉन्वेन्ट स्कूलों में सहशिक्षण प्राप्त करने के कारण बालक-बालिकाएँ विकारमय वातावरण में बाल्यावस्था व्यतीत करते हैं और माता-पिता अपनी शान शौकत एवं प्रदर्शन की भावना से ऊँची से ऊँची किस्म के आधुनिक मोबाइल फोन और लेपटॉप बच्चों को दे कर उनके जीवन में सर्वनाश की सामग्री प्रस्तुत कर देते हैं। इंटरनेट, फेसबुक, चेटिंग आदि माध्यमों से काम राग वर्द्धक अश्लील नाच गान, कामोत्तेजक चित्र-दृश्यों को देखने, सुनने और तद्विषयक वार्ता के कारण कोमल चित्त वाले बालक-बालिकाओं का मन आरम्भिक अवस्था में ही अत्यन्त दूषित हो जाता है। उनका नैतिक पतन हो जाता है और वे स्वच्छंदाचारी बन कर उच्छृंखल बन जाते हैं। जिसका परिणाम समाज के सामने है। इण्टरनेट के इस दौर में हमारी युवा पीढ़ी को इतना भ्रमित कर दिया गया कि वह दिशा ही भटक गई है। अतः वर्तमान परिस्थितियों में बालक-बालिकाओं को ब्रह्मचर्य पालन हेतु शील धर्म के संस्कार देने की नितांत आवश्यकता है।

स्त्रीजन से युक्त मकान में रहना, मनोरंजन स्त्री कथा कहना, स्त्री से अत्यन्त घनिष्ठता रखना- एक ही आसन पर बैठना और स्त्रियों के अंगोपांग देखना, स्त्री-सम्बन्धी मनोरम ध्वनि सुनना, रुदन सुनना, गीत सुनना, स्त्रियों के साथ पहले भोगे हुए भोगों का स्मरण करना, बलवर्द्धक आहार या पान का सेवन करना, परिणाम से अधिक भोजन पान करना, प्रियकारी शरीर-शुषूषा करना-शरीर को सजाना; ये सब कामभोग, आत्म-गवेषणा करने वाले ब्रह्मचारी पुरुष के लिए तालपुट नामक विष के समान सिद्ध होते है। जिनका नववाडों से क्रमशः त्याग किया जाता है।

यदि इन नववाडों का सम्यक् पालन करने हेतु क्रमिक अभ्यास जारी रखा जाय तो

विकारों पर विजय प्राप्त की जा सकती है। नववाड़ों के अलावा ब्रह्मचर्य साधना हेतु निम्न बातें अत्यन्त उपयोगी हैं-

1. **भावों की पवित्रता-** भावना में अद्भुत शक्ति है। उसका शरीर और वचन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। शुभ भावना भाने से व्यक्ति पवित्र बनता है और अशुभ भावना भाने से व्यक्ति निकृष्ट बनता है। अतः बचपन से ही बालक-बालिकाओं में ऐसे शील के संस्कार दिए जायें कि वे ब्रह्मचर्य के महत्त्व को समझकर इस प्रकार पवित्र संकल्प लें-

1. जब तक विद्या अध्ययन पूर्ण न हो तब तक मुझे पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना है।
2. ब्रह्मचर्य पालन मेरा पवित्रतम कर्त्तव्य है।
3. प्राण जाएं तो जाएं मेरा ब्रह्मचर्य व्रत अखंडित रहे।
4. मैं अपना सर्वस्व लुटा कर भी ब्रह्मचर्य का पालन करूँगा।
5. संसार की कोई भी शक्ति मुझे अपने शीलव्रत से च्युत नहीं कर सकती।
6. मेरा निश्चय सुमेरु की तरह अटल और अकम्प है और रहेगा।
7. इस संसार में मलिन और निकृष्ट प्रलोभन मुझे कदापि आकर्षित नहीं कर सकेंगे।

इत्यादि रूप से अपने संकल्प में दृढ़ता लाने से चित्त में स्थिरता उत्पन्न होती है। प्रलोभनों पर विजय पाने की शक्ति जागृत होती है। ब्रह्मचर्य पालन की भावना रखने वाले प्रत्येक प्राणी को इस प्रकार चिन्तन करते हुए पवित्र संकल्प ग्रहण करना चाहिये, शुभ भावना भानी चाहिये।

2. **कामभोगों की भयंकरता को समझें-** विषय भोग से शारीरिक हानि होती है, आत्मिक हानि होती है, धर्म की हानि होती है, इस लोक में हानि होती है और परलोक में भी हानि होती है। अतः विषय भोग त्याज्य हैं। आगमकारों ने कामभोगों का वास्तविक स्वरूप समझाते हुए कहा है-

सल्लं कामा, विसं कामा, कामा आसीविसोवमा।
कामे य पत्थेमाणा, अकामा जंति दुग्गइं।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन 9, गाथा 53

कामभोग शल्य के समान हैं, काम भोग विष के समान हैं, कामभोग दृष्टि विष सर्प के समान हैं। कामभोग की अभिलाषा करने वाले कामभोग न भोगने पर भी दुर्गति पाते हैं। इस प्रकार काम भोगों को भयंकरता को समझकर शील की आराधना की जा सकती है।

3. **सत्संगति-** बालक-बालिकाओं को बचपन से ही पूज्य संत-सतियों की संगति करानी चाहिए। ताकि अज्ञान, चित्त विकार आदि दोष दूर हों, सद्गुणों की वृद्धि हो।

सत्संगति की महिमा बताते हुए कहा है-

सत्संगवे निःसंगत्वं, निःसंगत्वे निर्मोहत्वम्।
निर्मोहत्वे निश्चलतत्त्वं, निश्चलतत्त्वे जीवन्मुक्तः।।

अर्थात् संतजनों की संगति से मनुष्य निःसंग (अनासक्त) बनता है, निःसंग होने से निर्मोह हो जाता है, निर्मोह होने से नित्य तत्त्व अर्थात् आत्मा की उपलब्धि होती है और आत्मा की उपलब्धि होने पर जीवन्मुक्त हो जाता है। जीवित रहते हुए भी शरीर की विद्यमानता में भी अपर मोक्ष-आर्हन्त्य दशा- प्राप्त हो जाती है।

वास्तव में संत-पुरुषों का समागम एकान्त हित का कारण है और आत्मश्रेय का प्रथम सोपान हैं चरित्रनिष्ठ पूज्य संत-सतियों के हृदय की पवित्रता का प्रभाव उनके समीपवर्तियों पर पड़ता है, फलस्वरूप अशुभ विचारों वाला नीच प्राणी भी पवित्रता प्राप्त कर सकता है। संत-सतियों की संगति से पूर्वकृत दोषों की आलोचना, निन्दा एवं प्रायश्चित करके अपने जीवन में निखार लाया जा सकता है।

4. **सादा जीवन-** स्त्रियों का असली गहना उसका शील और सदाचार है। अतः "सादा जीवन उच्च विचार" की युक्ति को अपना आदर्श बनाकर आज की युवा पीढ़ी तड़कीले-भड़कीले, अर्द्धनग्न, पारदर्शी वस्त्रों का त्याग करे। फैशन परस्ती और आधुनिकता के नाम पर बिना सोचे समझे अपने संस्कारों को भूल कुछ भी पहन लेना समझदारी नहीं हो सकती। अतः आडम्बर फैशन से दूर रह कर संयमित जीवन जीया जाय तो शील की सुरक्षा एवं ब्रह्मचर्य पालन संभव है। माता-पिता बचपन से ही बालक-बालिकाओं को ऐसी वेशभूषा पहनाएँ जो अपनी संस्कृति और सभ्यता के अनुकूल हो, ब्रह्मचर्य रक्षा में सहयोगी हो।

5. **सत्साहित्य-** जिस साहित्य में ब्रह्मचर्य की महिमा है, शील पालन करने वाले महापुरुष एवं शीलवती नारियों का चित्रण है ऐसे धार्मिक ग्रंथों-सद्साहित्य का पठन करने से भी शील के संस्कार मजबूत बनते हैं, ज्ञान वृद्धि होती है, शुभ भावों में प्रबलता आती है, हृदय स्वच्छ-विकार रहित बनता है और पवित्र विचारों से अनुपम आनन्द की उपलब्धि होती है।

ब्रह्मचारी महापुरुषों के जीवन चरित्र अवश्य पढ़ने चाहिये, उनसे ब्रह्मचारी को बड़ा सहारा, बड़ा बल मिलता है। उन्होंने ब्रह्मचर्य की साधना के लिए जिन उपायों का अवलम्बन किया था उनका हमें ज्ञान होता है। विपत्ति काल में उन्होंने चट्टान की तरह दृढ़ता रखकर अपने पवित्र प्रण को, प्राणों की परवाह नहीं करके भी निभाया, यह बात हमें भी शक्ति और दृढ़ता प्रदान करती है। उनकी ब्रह्मचर्य में स्थिरता देखकर

हृदय में साहस की वृद्धि होती है और ब्रह्मचर्य-रक्षा का प्रबल भाव उत्पन्न होता है। आजकल अनेक पुरुष कामरागवर्द्धक पुस्तकें, पत्रिकाएँ, उपन्यास आदि पढ़कर अपना समय बर्बाद करते हैं क्योंकि ऐसी सामग्री के पठन-पाठन से सुप्त काम वासना जाग उठती है और नैतिक पतन होते देर नहीं लगती अतः सात्त्विक साहित्य वाचन का ही लक्ष्य रहना चाहिए।

6. **दृष्टि की निर्मलता**- पुरुष स्त्री को और स्त्री पुरुष को विकार रहित निर्मल दृष्टि से देखे। जैसे माता और बहिन पर दृष्टि पड़ते ही चित्त में एक प्रकार की श्रद्धा पूर्ण सात्त्विकता का उदय होता है, विकारों को कोई स्थान नहीं रहता, उसी प्रकार अन्य स्त्री/पुरुषों पर अपनी दृष्टि रखे। कहा भी है-

शील रतन के पारखुं, मीठा बोले वैन।
सब जग से ऊँचा रहे, जो नीचा राखे नैन।।

आगमकार तो राग भाव एवं दृष्टि विकार के शमन का उपाय बताते हुए दशवैकालिक सूत्र के अध्ययन 2, गाथा 4 में फरमाते हैं-

''ण सा महं णो वि अहं पि तीसे।
इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं।।''

7. **आधुनिक संसाधनों के प्रयोग का विवेक**- बालक-बालिकाएँ आधुनिक संसाधनों- मोबाईल, फोन, दूरदर्शन, लेपटॉप आदि के प्रयोग का विवेक रखें। प्राप्त साधनों का दुरुपयोग नहीं करते हुए अध्ययन, अध्यापन आदि एवं सुरक्षा आदि में ही सहयोगी समझ कर इनका सदुपयोग करे। माता-पिता को भी चाहिए कि वे बालक-बालिकाओं की गतिविधियों, कार्यकलापों का ध्यान रखते हुए उन्हें हित शिक्षाएँ देते रहें। मोबाइल आदि के निरन्तर उपयोग से होने वाली हानियों से अवगत कराते रहे। मन-मस्तिष्क को स्थायी शांति देने वाले धार्मिक-नैतिक जीवन एवं शील का महत्त्व समझाते रहें।

अश्लील, व्यभिचार वर्द्धक सिनेमा एवं दूरदर्शन के ऐसे धारावाहिक स्वयं न देखे और बच्चों को भी प्रेरणा कर, ऐसे दृश्यों से दूर रखे।

8. **व्यसन-त्याग**- आजकल युवापीढ़ी में अनेक दुर्व्यसन घर बनाये हुए हैं। कल्ब, कीटी पार्टियाँ, गलत संगति, धार्मिक ज्ञान के अभाव, पाश्चात्त्य संस्कृति के प्रभाव से आज बालक-बालिकाएँ सिगरेट, शराब, अफीम, चरस, स्मैक, गुटका, तम्बाखु आदि दुर्व्यसनों के आदि बनकर अपने जीवन को पतन के गर्त में धकेल रहे हैं। इन विषाक्त वस्तुओं के सेवन से ब्रह्मचर्य की आराधना में बाधा पड़ती है। इन नशीले

पदार्थों के सेवन से वीर्य उत्तेजित्त होकर पतला पड़ जाता है, पुरुषत्व शक्ति क्षीण होती है, पित्त विकृत हो जाता है, नेत्र ज्योति मंद होती है, मस्तिष्क और छाती कमजोर हो जाती है, खांसी, दमा और कफ की वृद्धि होती है। इस प्रकार स्वास्थ्य के साथ ब्रह्मचर्य को हानि पहुँचती है, अतः व्यसनों का त्याग करना आवश्यक है।

9. **खान-पान विवेक-** आधुनिकता के नाम पर शुद्ध सात्त्विक खाने को छोड़कर भक्ष्य-अभक्ष्य का ध्यान रखे बिना बाजारों में चटखारे लेकर खाना आज की युवापीढ़ी को पसंद है जबकि नववाड़ों में पौष्टिक आहार विकारोत्पादक मसाले आदि के भोजन के त्याग का उपदेश है। घर के खाने का त्याग कर आजकल लड़के-लड़कियाँ रात्रि में होटलों में खाना पसन्द करते हैं। सात्त्विक भोजन के अभाव में तामसिक भोजन स्वास्थ्य और ब्रह्मचर्य पालन पर बुरा प्रभाव डालता है। जमीकंद सेवन, फास्टफूड, पिज्जा-बर्गर आदि तेज मसालेदार भोजन के सेवन से विषय वासना भड़कती है, जो ब्रह्मचर्य पालन में बाधक है। अतः जिह्वा इन्द्रिय पर संयम रखना अत्यन्त आवश्यक है।

ब्रह्मचर्य की साधना करने वाले स्त्री-पुरुष का कर्त्तव्य है कि- ''जैसा खावे अन्न वैसा होवे मन'' के अनुसार वे न केवल अपने खान-पान के सम्बन्ध में वरन् अपने प्रत्येक व्यवहार में खूब सतर्क और विवेकवान बनें, विरोधी व्यवहारों से सदैव बचते रहें तब ही ब्रह्मचर्य व्रत स्थिर रह सकता है।

ब्रह्मचर्य व्रत का यथाविधि पालन करने वाले व्यक्ति में एक प्रकार का विचित्र तेज आ जाता है। उसमें ऐस शक्तियाँ आविर्भूत होती है जिनकी कल्पना साधारण लोग नहीं कर सकते। इतिहास साक्षी है ब्रह्मचर्य के प्रताप से सीता के लिए अग्नि जल बन गई, सुदर्शन के लिए शूली के सिंहासन का रूप धारण कर लिया। यह सब ब्रह्मचर्य का अलौकिक प्रभाव है। शील की महिमा अपरम्पार है। आलोयणा में कहा है-

शील रतन मोटो रतन, सब रतनां की खान।
तीन लोक की संपदा, रही शील में आन।।

ब्रह्मचारी पुरुष अक्षय और अनन्त सुख प्राप्त करता है। इस लोक में उसे अद्भुत शांति, संतोष, निराकुलता और स्वस्थता प्राप्त होती है। साथ ही वह आवागमन के चक्र से छूट जाता है। इस प्रकार ब्रह्मचर्य व्रत उभय लोक हितकारी, सुखकारी है, एकान्त कल्याणकारी प्रियकारी है, वही नर और नारी का परम् आभूषण है। उसके बिना अन्य आभूषण दूषण रूप हैं, व्यर्थ है। ब्रह्मचर्य ही जीवन का परम साध्य है, उसके बिना जीवन अनुपयोगी है। जिन्होंने सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं वे भी धन्य हैं। इस

प्रकार ब्रह्मचर्य के महत्त्व को समझकर आज की युवापीढ़ी उसकी उपयोगिता का ज्ञान करे, उसकी विधि पूर्वक आराधना कर सुखी जीवन जीते हुए आदर्श उपस्थित करे। क्योंकि-

दृढ़ वक्ष स्थल भुज दण्ड सबल, कंचन जैसी काया है।
आँखों में चमक, चेहरे पे दमक यह ब्रह्मचर्य की काया है।।

-7/14, उत्तरी नेहरू नगर, बिट्ठल बस्ती, ब्यावर-305901 (राज.)

गणि हीरा गुण की खान

श्री धर्मचन्द जैन

(तर्जः- प्रभु शान्ति-शान्ति दातार......।)

(परमश्रद्धेय आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 53 वें दीक्षा-दिवस के उपलक्ष्य में प्रस्तुत गीतिका)

गणि हीरा गुण की खान, संयम है जिनका महान्।
मुख मण्डल सूर्य समान, हम सब मिल करें प्रणाम।
वन्दन हो, शत-शत हो वन्दन, वन्दन हो, शत-शत हो वन्दन।
हम पायें सुख निधान, गणि हीरा की खान......
गुरु हस्ती से संयम पाया, अपने जीवन को सरसाया।
पाया है आगम ज्ञान, गणि हीरा.........।।1।।
अनुशासित है जीवन चर्या, जप-तप से संयम है भरिया।
हमें देते सत्पथ ज्ञान, गणि हीरा.........।।2।।
संयम जीवन तेजस्वी है, प्रवचन शैली वर्चस्वी है।
जग में यश छाया महान्, गणि हीरा.........।।3।।
तत्त्वों का बोध कराते हैं, आत्म का शोध कराते हैं।
जागृत बन पाये ज्ञान, गणि हीरा.........।।4।।
आओ हम सब मिलकर गायें, संयम जीवन में प्रगटायें।
मिल जाये मोक्ष महान्, गणि हीरा.........।।5।।
स्वाध्याय हमारा दर्पण हो, जीवन में पूर्ण समर्पण हो।
तब रहती 'धर्म' की शान, गणि हीरा.........।।6।।

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

काव्य

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी (17)

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

श्रद्धेय मुनिश्री द्वारा रचित यह पद्यानुवाद सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष एवं उत्कृष्ट कवि श्री सम्पतराजजी चौधरी-दिल्ली द्वारा संशोधित-सम्पादित है।-**सम्पादक**

(तर्ज:- गुण सौरभ से रहे महकता, ऐसा अपना घर हो)

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी, सुनलो और सुनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।
उत्तराध्ययन में गुंजित होती, प्रभु शिक्षा अपनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।

(उनतीसवाँ अध्ययन : सम्यक्त्व पराक्रम)

विधि सुन्दर बतलाई प्रभु ने, सुनो वीरपथ गामी,
कैसा हो पुरुषार्थ भवी का, रहस्य बडे आयामी,
श्रद्धा से आराधन करके, सम्यक् चरण बढ़ालो।।476।।
आराधन का सुन्दर अवसर, भावसंधि को जानो,
ध्रुव लक्ष्य को पाने हेतु, उत्तम क्षण पहचानो,
एक निष्ठ हो पूर्ण वीर्य से, मुक्ति पथ पर चालो।।477।।
क्षण-क्षण जागृत रहना तुमको, पूर्ण शौर्य दिखलाना,
समकित में हो पराक्रम ऐसा, दूजा जन्म न पाना,
करें साधना तन मन वच से, जीवन सफल बनालो।।478।।
भंते! कृपा करो बतलाओ, क्या संवेग से मिलता,
मुक्ति पद की उत्कंठा से, क्या जग-सुख है रुचता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।479।।
श्रेष्ठ धर्म श्रद्धा से साधक, संवेग भाव से सजता,
क्लिष्ट कषायों को क्षय करके, कर्म-बन्ध नहीं करता,
दर्शन आराधक बन करके, शीघ्र परमपद पा लो।।480।।
भंते! कृपा करो बतलाओ, क्या निर्वेद से मिलता,
संसार विरक्ति से प्राणी, क्या वर्जन है करता,

बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमा लो।।481।।
भव खेद जब जागृत होता, विषय भोग ना रमता,
आरम्भ को तज देता क्षण में, भवपथ छेदन करता,
जन्म-मरण का मार्ग छोड़ के, शिवपथ को अपनालो।।482।।
धर्म की श्रद्धा से भंते! क्या होता है बतलाओ,
धर्म आचरण की अभिलाषा, क्या होती समझाओ,
बोध प्राप्त करने के उत्सुक, अपना शीश नमालो।।483।।
धर्म की श्रद्धा से तज देता, साता सुख आसक्ति,
अणगारी बन साधक पाता, संयोग-वियोग से मुक्ति,
दुःखों का उच्छेदन करके, निराबाध सुख पालो।।484।।
गुरु साधर्मिक सेवा करके, जीव कहो क्या पाता,
पर्युपासना करने से प्रभु! कैसे वह सरसाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।485।।
गुरु साधर्मिक सेवा से वह, विनय धर्म को पाता,
भक्ति और बहुमान के द्वारा सद्गति से जुड़ जाता,
विनयशील बन करके सारे, कारज सिद्ध करालो।।486।।
गुरु से भूल निवेदन करके, भन्ते! प्राणी क्या पाता,
गुण-दोषों का समीक्षण करके, कैसे वह सरसाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।487।।
आलोचन करने से प्राणी, भाव शल्य तज देता,
कपट रहित हो जाने से वह, ऋजुता को वर लेता,
मोक्ष मार्ग के विघ्न हटाने, दोष सभी प्रगटालो।।488।।
अपनी निन्दा करके प्राणी, जग में क्या पाता,
तिरस्कार निज दोषों का, क्या परिणाम है लाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।489।।
दोष मुक्ति हित व्याकुल साधक, आत्मनिन्दना करता,
पश्चात्ताप से ग्रंथि भेदकर, क्षपक श्रेणी पर चढ़ता,
दोष-शुद्धि की प्यास जगाकर, परम शान्ति को पालो।।490।।
भंते! बतलाओ गर्हा से, जीव प्राप्त क्या करता,

भूल प्रकट करके वह अपनी, कैसे दोष है तजता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।491।।
आत्मा की गर्हा करने से, आत्म-अनादर पाता,
अशुभ योग से निवृत्त होकर, शुभ योगों में जाता,
घाती कर्मों की परिणति को, इससे क्षीण करालो।।492।।
भंते! सामायिक साधन से, जीव यहाँ क्या पाता,
समभावों में रहकर के क्या, संचित्त कर्म खपाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।493।।
करता सामायिक में साधक, सावद्य योग से विरति,
राग-द्वेष को तज देने से, शुभ योगों में परिणति,
कर्म-निर्जरा करने के हित, समता सर में नहालो।।494।।
चौबीसी के स्तवन से, जीव प्राप्त क्या करता,
उनका गुण कीर्तन करके, किस बाधा को हरता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।495।।
अहोभाव से गुण संकीर्तन, मिथ्या मोह भगाता,
दर्शन की विशुद्धि होती, समकित निर्मल पाता,
हरता है दर्शन की बाधा, अर्हत भक्ति जगालो।।496।।
वन्दन करने से हे भंते! प्राणी क्या फल पाता,
विनय भाव से गुरुजनों को जब वह शीश नमाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।497।।
भाव भक्ति से पूज्यजनों को, वंदन जो है करता,
नीच गोत्र का क्षय करके वह, उच्च बंध है करता,
जग में लोकप्रिय बन करके, भाग्योदय चमकालो।।498।।
प्रतिक्रमण करने से भंते! प्राणी को क्या मिलता,
गफलत में जो दोष लगे तो, उनसे कैसे बचता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।499।।
अतिचार के सब छिद्रों को, प्रतिक्रमण है ढकता,
नव कर्मों का आना रुकता, शुद्धचरण में रमता,
संयम में एकरस हो करके, शांत समाधि पालो।।500।।

काया के उत्सर्ग से भंते, कहो जीव क्या पाता,
ममत्व त्याग करके तन का, कैसे दुःख घटाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।501।।
अतिचारों की शुद्धि होती, भारहीन हो रहता,
छोड़ सभी चिन्ताओं को, प्रशस्त ध्यान में रमता,
सुख पूर्वक विचरण करता है, देहाध्यास छुडालो।।502।।
प्रत्याख्यान के करने से प्रभु! कहो जीव क्या पाता,
व्रत नियम के लेने से वो, कैसे दोष छुड़ाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।503।।
पदार्थों की ममता छूटे, शीतलीभूत हो रहता,
अव्रत की क्रिया नहीं लगती, व्रत नियम जब धरता,
दशविध प्रत्याख्यान को करके, भावी दोष को टालो।।504।।
स्तव- स्तुति मंगल से, जीव यहाँ क्या पाता,
भक्ति से गुण कीर्तन करके, कैसे लाभ कमाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।505।।
भावों से गुण अर्जन करके, रत्नत्रयी से सजते,
अन्तक्रिया या कल्पों के, योग्य आराधन करते,
बोधि से सम्पन्न होकर के, उच्च गति को पालो।।506।।

(क्रमशः)

संकलनकर्ता- नवरतन डागा, पूर्व महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, 'लक्ष्य' 76, नेहरुपार्क, बखतसागर स्कीम, जोधपुर-342003 (राज)

सूचना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा "बनें आगम अध्येता" प्रतियोगिता के अन्तर्गत खुली पुस्तक परीक्षाओं में 70 तथा इससे अधिक के प्राप्तांक प्राप्त करने वाले विजेता प्रतिभागियों की पुरस्कार राशि उनके बैंक खाते में नेफ्ट द्वारा हस्तान्तरित की जायेगी।

अतः प्रतिभागी अपना नाम, स्थान का उल्लेख करने के साथ निम्न जानकारी भिजवाने का श्रम करावें:- Name of Bank, Name of Account holder, Bank Account Number, Bank Place, Bank IFS code, Micr Code, Mobile No.

प्रासंगिक

स्वच्छता-अभियान की समस्या के विभिन्न आयाम

डॉ जीवराज जैन

डॉ. जीवराज जैन का यह आलेख शौचालय की प्रासंगिक समस्या का सम्यक् निरूपण करता है तथा इस आलेख को प्रधानमंत्री, जल संसाधन मंत्री आदि को प्रेषित किया जाए। लेख के कुछ बिन्दुओं को उद्धृत करके भी पत्र लिखा जा सकता है।**-सम्पादक**

1. **स्वच्छता अभियान और समाज-** स्वच्छता की महत्ता से आप सभी परिचित हैं। हम जितनी कम गन्दगी पैदा करेंगे, उतना ही देश प्रदूषित होने से बचेगा। इसीलिये हमें बचपन से स्वच्छता के संस्कार दिए जाते हैं। जैसे भोजन में जूठन नहीं छोड़ना, संसाधनों का न्यूनतम उपयोग करना आदि वास्तव में स्वच्छता के ही संस्कार हैं। कहते हैं कि स्वच्छ मन में ही अहिंसा और कल्याण की भावना विकसित हो सकती है। लेकिन यदि हमने बाहर से मल को हटाकर, अपने नीचे सेप्टिक टेंक में इकट्ठा करके सड़ने दिया, तो उस छद्म स्वच्छता के कारण हमारा पर्यावरण और स्वास्थ्य द्विगुणित होकर प्रदूषित होता ही रहेगा। आज इस आभासित (VIRTUAL) स्वच्छता से सतर्क/सावधान रहने की आवश्यकता है। इस आभासित स्वच्छता के मूल सत्य को समझ कर ही सही बुद्धिमानी से काम लें।
2. **खुले में त्याग करना हो गया है कानून विरुद्ध-** सरकार ने कानून बनाया है कि कोई भी व्यक्ति बाहर खुले में बड़ी नीत (मलत्याग) या परठना नहीं कर सकता है। ऐसा करना कानूनन अपराध माना जायेगा। कई जगहों पर इसे सख्ती से लागू करना शुरू कर दिया गया है। तो भला हमारे लोग इस राजाज्ञा का उल्लंघन कैसे कर सकते हैं? भले ही रेलवे लाइन के सहारे खेत या जंगल जैसे निरवद्य या निर्दोष स्थानों में मलत्याग करते हों, कानून की नज़र में खुले में की जाने वाली यह क्रिया अपराध है। यदि यह समझ सही है तो इससे हमारे वे लोग कैसे निपटेंगे, जो फ्लश सिस्टम काम में नहीं लेते हैं। यानी गरीबी के कारण शौचालय का प्रावधान नहीं कर सकते हैं?

   अतः हमारी आर्थिक स्थिति के तहत हमें विकल्प ढूंढने की छूट और सहायता दी जाए। समस्या के विभिन्न पहलुओं पर विचार करके उचित समाधानों के विभिन्न विकल्प ढूँढ़ने का प्रयास करते हैं।

3. **स्वच्छता अभियान और शौचालयों का ताबड़तोड़ निर्माण**– शौचालयों के निर्माण को जबर्दस्त प्राथमिकता देकर हर राज्य सरकार घोषणाएँ कर रही हैं कि वो–

1. कितने सामुदायिक शौचालय,
2. कितने व्यक्तिगत शौचालय और
3. कितनी पंचायतों को खुले में शौच से मुक्त कराएगी।

इन सभी अभियानों का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण को दूषित होने से बचाना तथा जन-स्वास्थ्य का संरक्षण करना और स्वच्छ भारत बनाना है।

हम उपर्युक्त तीनों मुद्दों का विश्लेषण करेंगे कि इस उद्देश्य की पूर्ति में वे कैसे और कहाँ तक सफल हो सकेंगे? कहीं हम गड्ढे से निकल कर कुएं में तो नहीं गिर रहे हैं। अतः इसके लिए सरकार को क्या सावधानियाँ रखनी हैं?

4. **व्यक्तिगत शौचालयों का निर्माण**

1. शौचालय के नीचे मल, जिस पिट या टेंक में इकट्ठा होता है, वहाँ अपघटित होता हुआ वह मल मीथेन गैस को लगातार उत्सर्जित करता रहता है। इस तरह साधारण शौचालय अपने आसपास के वातावरण को मीथेन गैस से निरंतर प्रदूषित करते रहते हैं।
2. मीथेन गैस एक ग्रीन हाउस गैस (GHG) होती है, जो कि पर्यावरण और जन-स्वास्थ्य के लिए कार्बन-डाई-ऑक्साइड गैस से भी 100 प्रतिशत ज्यादा हानिकारक होती है।
3. यह प्रदूषण एक स्थायी स्रोत है।
4. इसके अलावा फ्लश सिस्टम में पानी का बहुत अधिक दुरुपयोग भी होता है। **ज्वलंत प्रश्न यह है कि क्या साधारण शौचालय के इन दुष्परिणामों से अनभिज्ञ है सरकार?**

5. **सरकारी नीति के बारे में निष्कर्ष**– वैज्ञानिक तौर पर देखा जाए तो एक दीर्घगामी सम्पोषित प्रगति के लिए मानव मल को मीथेन गैस में परिवर्तित कर, उसको नवीनीकृत ऊर्जा स्रोत के रूप में काम में लेना ही होगा, क्योंकि मानव मल खुले में या शौचालय में लम्बी अवधि तक बराबर प्राप्त होता ही रहेगा। जीवाश्म धन की जगह मानव-मल से प्राप्त मीथेन गैस को जलाना पर्यावरण के लिए ज्यादा लाभदायक होता है।

अतः सरकार को मात्र शौचालयों के बजाय एकीकृत प्रणाली, जैविक केंद्र (बायो-सेंटर्स) को प्रोत्साहित या समर्थित करना चाहिए। परिष्कार करने की व्यवस्था के

बिना लोक-शौचालयों का निर्माण करना एक जघन्य अपराध घोषित किया जाए।

6. **सामुदायिक शौचालय की आवश्यकता और सतर्कता-** जन स्वास्थ्य और पर्यावरण के दृष्टिकोण से न तो शौचालयों से उत्सर्जित गैस को हवा में छोड़ा जा सकता है और न ही इनके पिट या सेप्टिक टंकियों से निकाल कर, शहर में बहने वाले तरल या ठोस मानव मल को सीधे तालाबों या खुले में या नदियों में छोड़ने की इजाजत दी जा सकती है। इस नियम का उल्लंघन करना मानवता के प्रति एक भयंकर दण्डनीय अपराध समझा जाना चाहिए।

   हम सबका अनुभव यह भी बताता है कि साधन बनाने के साथ-साथ उसमें रख रखाव का समुचित जिम्मेदाराना प्रावधान होना उससे भी ज्यादा आवश्यक होता है । अन्यथा मनरेगा की परिसम्पतियों की तरह वे भी बनने के वर्ष में ही खंडहर में परिवर्तित होकर अनुपयुक्त हो जाएंगे। एक विश्वख्यात अर्थशास्त्री के मुताबिक निर्माण के वक्त ही इनकी 10 साल की सक्रिय उम्र सुनिश्चित करानी चाहिए।

7. **पंचायतों को खुले में शौच से मुक्त कराना-**
   1. पुराने जमाने में, जब आबादी दूर दूर बिखरी होती थी या गाँव भी छोटे होते थे। उस समय खुले में या प्रकृति में मल त्याग करना, स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए कोई समस्या नहीं बनता था, खासकर जब मल-विसर्जन में बिल्ली-पद्धति अपनाई जाती थी। यानी अपने मल को मिट्टी, रेत और पत्तों से ढक दिया जाता था। सिपाही और आदरणीय साधक लोग भी इसी विकल्प को अपनाते हैं और बिल्कुल स्वच्छ और स्वस्थ रहते हैं। दूरदराज स्थानों में भी लोग इसी तरीके को काम में लेते हैं।
   2. लेकिन आज के जमाने में घनी आबादी के इलाकों में खुले में मल त्याग करना एक विशिष्ट समस्या और मान व इज्जत का सवाल बन गया है। यह समस्या साधारणतया गरीबी और उपेक्षा से जुड़ी हुई है। साफ और सुरक्षित चालू शौचालय उपलब्ध कराने से, महिलाओं और लड़कियों को गोपनीयता के साथ साथ मानसिक फायदा भी दिलाता है। लेकिन पर्यावरण के दृष्टिकोण से मात्र एकीकृत सामुदायिक शौचालयों का निर्माण ही अपेक्षित होना चाहिए।

8. **बापू द्वारा मल-मूत्र त्याग के बारे में बनाई गयी नियमावली**
   1. राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने ('नवजीवन', 24-5-1925 में) मल-मूत्र त्याग के बारे में भारतीय व्यवस्था और नागरिकों के लिए जो नियम प्रतिपादित किये थे, वे आज भी पर्यावरण संरक्षण और जन-स्वास्थ्य सुरक्षा के दृष्टिकोण से बहुत ही ज्यादा प्रासंगिक नज़र आते हैं। इसमें एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण तथ्य उजागर होता

है, जो समाज को ध्यान में रखना है।

2. बापू की नियमावली अनुशासित समाज के लिए व्यापक रूप से जनहित और पर्यावरण सुरक्षा को सम्पोषित करती है। ऐसी आदर्श लेकिन कठिन नियमावली की समुचित परिपालना वही समुदाय सुनिश्चित कर सकता है जो स्व-अनुशासित और उच्च कोटि का जिम्मेदार हो। आज देश में फैले स्वच्छंद माहौल में, ऐसे जनहित में समर्पित कोई आदर्श समुदाय बन जाए तो हम गर्वानुभूति से अपना सिर ऊंचा कर सकते हैं।

9. **नियमावली (APPENDIX)**– इसके नियम बताते हैं कि मल-मूत्र का यत्र-तत्र विसर्जन नहीं करके, केवल चिन्हित स्थानों पर ही त्याग और विसर्जन करना चाहिए। जो लोग जलमार्ग में, जलपथ में , जलाशय के तीर पर, जल स्थान पर, मल-मूत्र त्याग करते हैं, करवाते हैं या करने वालों की अनुमोदना करते हैं, उन सबको समुचित सामाजिक और न्यायिक दंड मिलना चाहिए। (MAHATMAA HAS PRESCRIBED ALL THE ABOVE RULES, METHODS AND DIRECTIONS FOR DEFECATION FOR THE SELF-DISCIPLINED COMMUNITY.)

10. **सरकार के लिए उपयुक्त और अनिवार्य प्रायश्चित्त**– चिंतन और शोध से पता चलता है कि बापू की नियमावली के तहत खुले में मल-मूत्र त्याग और विसर्जन करना, पर्यावरण-संरक्षण और जन-स्वास्थ्य सुरक्षा के दृष्टिकोण से, अपेक्षाकृत ज्यादा उपयोगी और हितकारी है। जैसे चार्ट-1 और 2 में की गयी तुलना से स्पष्ट ज्ञात होता है कि-

1. साधारण शौचालयों द्वारा पर्यावरण 3 से 5 गुना ज्यादा खराब होता है।
2. इनके कारण जन-स्वास्थ्य दो गुना ज्यादा खराब होता है।
3. इनके कारण कीमती जल का 10 गुना ज्यादा दुरुपयोग होता है।
4. मानव-मल खाद की उपलब्धता 90 प्रतिशत तक घट जाती है।

इन चौंका देने वाले तथ्यों के मद्दे नज़र, यह बात स्पष्ट हो जाती है कि सरकार एक भयंकर भूल करती आ रही है। अतः इसके निराकरण के लिए हमें सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ, देश के सभी साधारण शौचालयों को संवर्धित-शौचालयों में परिवर्तित कर देना चाहिए। यानी राष्ट्र की जनता के स्वास्थ्य के साथ हो रहे इस तांडव को अविलम्ब विराम देना है।

सरकार की भूतकाल में हुई विनाशकारी गलती का यही प्रायश्चित्त, सबसे ज्यादा उपयुक्त हो सकता है।

11. सारांश और सुझाव-

1. जहाँ सूर्य-रोशनी और हवा नहीं आती हो, या अन्यों को तकलीफ हो सकती हो, वहाँ पर मल-मूत्र त्यागना और परठना, असामाजिक और दंडनीय माना जाय।
2. खुले में मल-त्याग की पुरानी व्यवस्था वैज्ञानिक विश्लेषण से ज्यादा स्वास्थ्यप्रद सिद्ध होती है, यदि उसको आधुनिक जमाने में भी सावधानी और अनुशासन के साथ अपनाया जावे। अतः इस व्यवस्था को केवल स्वानुशासित लोगों को ही अपनाने की अनुमति दी जा सकती है।
3. लेकिन फ्लश करके मल-मूत्र को साधारण सेप्टिक टेंक मे इकट्ठा करने से, वह पर्यावरण के प्रदूषण का भी भयंकर स्रोत बनता है तथा साथ-साथ में जल के अति दुरुपयोग और अनंत जीवों की हिंसा का कारण भी बनता है।
4. चूँकि शौचालयों की प्रचलित व्यवस्था स्वास्थ्य और पर्यावरण दोनों के लिए बहुत ही हानिकारक सिद्ध होती है। अतः देश के सभी पुराने शौचालयों को प्राथमिकता के साथ शीघ्र ही उपचार संयंत्रों से (जैविक केंद्र) जोड़ देना अति-आवश्यक है। यह सुनिश्चित करना भी आवश्यक है कि ये संयंत्र हमेशा सक्रियता से काम करते रहें।
5. कोई भी नयी कॉलोनी या बड़ी इमारत को बनाने की अनुमति तभी दी जाए, जब उस में मल-उपचार के संयंत्र लगाने का प्रावधान हो। अन्यथा यह कानूनन अपराध घोषित किया जाना चाहिए। *-40, कमानी सेण्टर, जमशेदपुर (छतीसगढ़)*

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का परिणाम

जिनवाणी के अक्टूबर-2015 के अंक में 'स्वास्थ्य-विज्ञान स्तम्भ' के अंतर्गत **'स्वावलम्बी चिकित्सा पद्धतियाँ क्यों विश्वसनीय?'** के प्रश्नों के उत्तर 22 प्रतियोगियों से प्राप्त हुए। सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों के नाम इस प्रकार हैं-

पुरस्कार एवं राशि-	नाम	
प्रथम पुरस्कार (1000/-रु.)	श्रीमती रेखा जसवंत नंगावत-मैसूर(कर्ना.)	(69/70)
द्वितीय पुरस्कार (750/-रु.)	श्रीमती कमलेश जैन-सुवासरा(म.प्र.)	(68.5/70)
तृतीय पुरस्कार (500/-रु.)	श्री दिलीपकुमार जैन-चित्तौड़गढ़(राज.)	(68/70)

अन्य प्रतियोगी अपने अंक मालूम करना चाहें तो चंचलमल जी चोरड़िया-94141-34606 (मो.) से सम्पर्क कर सकते हैं। प्रतियोगी अपना नाम व फोनमय पूरा पता उत्तरपुस्तिका एवं लिफाफे पर अवश्य लिखें। पता नहीं लिखे जाने पर उसे प्रतियोगिता में शामिल नहीं किया जाएगा।

कविता

'संथारा' आत्मजागरण है

डॉ. प्रेमसुख सुराणा

संथारा एक पुनीत पथ,
आत्म जागरण का सन्देश देता।
आत्महत्या ग्लानि पथ,
आत्मभाव विस्मृत करता।।
हम श्रमण पथ के अनुयायी हैं,
संथारा जीवन का अन्तिम प्रण है।
प्राणों का अर्घ्य भी दिया है,
हम कभी रुके नहीं हैं।।
किसी चुनौती के सम्मुख, कभी झुके नहीं हैं।
आज! जबकि श्रमण जीवन की
समस्त निधियाँ दाँव पर लगी हैं।
और
एक घनीभूत अन्धेरा,
हमारे जीवन के सारे आलोक को।
निगल लेना चाहता है।
हम ध्येय के लिए,
अहिंसा पथ अपनाने के लिए,
जीने जूझने और आवश्यकता पड़ने पर
"मोक्ष मार्ग"
"संथारा आत्मोत्थान" के संकल्प को दोहराते हैं।
आग्नेय परीक्षा की इस घड़ी में आइए
अर्जुन की तरह उद्घोष करें।
"संथारा आत्म जागरण है"
"मोक्ष पथ का"
न कि आत्महत्या.......
न कि आत्महत्या.......

-वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं 'योगाचार्य', अजमेर (राज.)

Enlish-Section

Ahimsa and Samayika

Sh. Tejraj P. (M.A. (Jaino&Pkt), M.A. (Pkt-Ext), B.E.(E&C), D.Pharm.)

The Entire history of human race, whether or not one has the courage to acknowledge, is full of wars, savagery and unimaginable cruelty towards all kinds of living beings. Having improved his killing abilities, he is more rapid and efficient, employing his genius in inventing newer weapons of mass destruction, today's man has acquired immense power of the negative type. Human life, even of the most important and most powerful person, hangs by a thread, a delicate thread which can be snapped by any intelligent maniac in seconds.

Innocent lower beings have always been suffering at the hands of man and will continue to be at his mercy. Man has devastated the environment to an alarming extent. Man has waged more wars and killed more fellow beings in the 20th Century than ever before - saw two world wars and later drew Korea, Vietnam, Chechnya, Bosnia, Ireland, China, India, Pakistan, Israel, Iraq, Palestine. Argentina, Columbia, Russia, Afghanistan, Iran, Somalia, Sri-Lanka and scores of other Nations to wars with-in and with one another. If not war it is terrorism, extortion, exploitation, etc. The burden on Human history is very heavy, prospects are more scaring, annihilation of hundreds of thousands of innocent lives in fraction of a second has become a Real possibility, Hiroshima and Nagasaki keep haunting us. It is high time a stock of this reality was taken to devise a foolproof strategy for a safer future. Every passing minute is producing a new Death Warrant against more infinite creatures, the innocent helpless big and small creatures, apart from man himself. These ecological Alarms (global warming, acid rain, raising sea-levels, birth of highly potent new pathogens, falling & failing economies, greed & extremism, terrorism, the list goes on and on......) ringing all-round have forced man to wake

up and seek possible and effective solution or simply perish.

Global peace, today tops the priority list on the table of every-one of the contemporary thinker worth his salt.Today's most oft asked question is - 'How to protect the man's world from himself?'. To eradicate conflicts among groups (nations or otherwise) and to stop violence, particularly in the name of religion or on any other pretext, some give a slogan - 'ONE RELIGION WORLD' & 'ONE WORLD RELIGION', but these neither seem feasible nor practicable. Diverse Ideologies & Practices already in existence have to be preserved. The varieties in thoughts, Habits, Culture & Intellectual levels of the Human Beings are vast. Any attempt at disturbing them could adversely lead to eruption of more conflicts.Therefore, unity and diversity are both equally essential for a true fellowship of faiths. This essentially requiring that no one should ever undermine any of these threats. A solution possibly lies in developing a network of multi-faith Peace Academies, made of intelligent and understanding Inter-Nationals, with each upholding another's individual prestige and positive values. The common goal is to resolve the tensions and conflicts, to make life peaceful. For this common goal each one will have to contribute positively in his own way, according to his ability and position. Every faith, if working for that particular common goal has equal right to exist and work - then they should be given equal regard too.

According to Acarya Siddhasena Diwakara (5th century A.D.) the divergent view points/faiths may be charged as false only when they negate the truth-value of others and stake a claim that their's is the exclusive truth. The fact is that every value or faith in its own sphere is right, but if all them arrogate to themselves the whole truth disregard the views of their rivals, they do not attain the right-view and when they encroach upon the province of other view-point and try to refute them, they are wrong. Rightness of particular faith depends on the acceptance of rightness of others. The Acarya further maintains that one who advocates the view of synoptic character of truth never

discriminates the different faith as right or wrong and thus pays all of them equal regard. Today, when communal harmony & equilibrium is facing serious threat from fundamentalism, unity of world religions not only becomes essential but it is the only option available to protect the human race from itself.

Unity of world religion does not imply omnivorous unity in which all lose their entity and identity. That type of unity in which all the alien faiths conjoin to form an organic whole without losing their own independent existence and given equal regard. A harmonious existence and work for a common goal i.e., the welfare of mankind, seems to be the only way to get rid of religious conflicts and violence from this earth - develop a tolerant out-look to establish harmony among various religions.

Around the 6th century B.C., then existing cultural scenario of this country was peculiarly intriguing. People who were barred consumption of tamasika vegetables like Garlic and Onion by their religious sanction would perform sacrificial rituals and relish animal flesh as prasada. Their so called Gods were offered live animals in sacrificial ceremonies and those ceremonially butchered animal would be 'religiously' eaten, with 'devotion'. Stories recall instances where even human beings were lead to the sacrificial-alter and were ceremoniously beheaded, allegedly to propitiate these so called 'Gods' (samraicca-kaha). The very people who would otherwise hurry to a cleansing/purifying bath in disgust, when a shadow of a 'lower' person fell on them, would eagerly offer a lowly creature packed with muck, shit, urine, etc., to their Deities. That these-so-called 'Gods' would be pleased to receive dead body as ceremonial offering, is highly improbable and beyond reasoning? If at all there was reason, a question arises - why were these 'Gods' gods only to the offerer and not to those helpless offered sacrificial animals? If at all those 'Gods' were Gods of any sort, where was there a need to get the animals killed at the hands of mortals and get their dead bodies offered, as price for

divine benefits? What could have been their requirement for such demand, that 'Gods' had to make the mortals kill other beings for their pleasure?

The very definition of sacrifice bars one from snatching another's belonging; one's 'life' is it's/his-her most precious belonging - all, be small or big, desire very much to live. Co-operation is an important and essential requirement for co-existence among the beings. The supporters of theories like - **jivojivasya bhojanam** (life thrives on life) & struggle for existence are definitely not deep thinkers, for they only see the surface of human nature and fail to realize the truth behind **paraspropagraho jivanam** of the Tattvarthasutram - Living beings originate, develop and exist with the co-operation of fellow beings; not by killing each-other.

Existence of living beings depends on mutual co-operation, sacrifice of one's own interest in the interest of the fellow being and a genuine regard for others' lives, ideologies, faiths & necessities. If one claims a right to help of others for living, is his right, then this right also imposes the duty, that, he too help other to live, otherwise it is breach of trust. Rights and duties go together like the two faces of a coin. The principle of equality of all beings essentially requires that each one has a right to live just as myself & therefore one does not get any right to take another's life. Which ever be the faith or religion, the act of killing does not find sanction in any religious teachings. To the contrary, man has been projected as a savior of all, particularly the lower beings. While non-violence is the natural human condition to which violence is totally inimical. Man is nonetheless in thrall to violence because he is continually obliged to engage in the essentially destructive-activities of eating and drinking in order to support his body phisiologically and psychologically. **(Continue)**

-Sr. Research Fellow & Resource Person,
National Institute of Prakrit Studies and Research, S'belgola.
Res.Kh210, AshokaRoad, Mysuru-570001.(mob:+919448055702)

नारी-स्तम्भ

माता - भाग्य निर्माता (2)

श्रीमती सुनीता मेहता

माता व शिशु का सम्बन्ध प्रकृति प्रदत्त अटूट सम्बन्ध है। बच्चे का संसार में जन्म लेने का माध्यम माता है। माता के बिना बच्चों का न तो जन्म सम्भव है, न ही विकास और न ही संस्कार। ऐसा कोई साधन या व्यक्ति नहीं है जो माता की उपयोगिता व आवश्यकता की जगह ले सके या कम कर सके। टेस्ट ट्यूब बेबी के आज के विज्ञान की सफलता में भी माता का रोल खत्म नहीं होता है। वहां पर भी उस टेस्ट-ट्यूब बेबी के गर्भ को किसी स्त्री के पेट में रखकर ही विकसित किया जाता है। पौधे के पनपने और विकास के लिये जिस तरह से किसान या माली की भूमिका अनिवार्य है, उसी तरह से बच्चे के गर्भ में जन्म, पालन, फिर जन्म पश्चात् विकास व शिक्षा में माता की भूमिका को दरकिनार नहीं किया जा सकता। लेकिन विशेषता यह है कि माता इस सारी प्रक्रिया में अपने बच्चे में संस्कारों का निर्माण भी कर सकती है, करती है और वह चाहे जैसा अपने शिशु को बना सकती है।

माँ के विचारों का जीव पर गहरा प्रभाव होता है। जो माँ सोचती है वैसा ही गर्भ में जीव संस्कारित होता है। माँ एक मूर्तिकार है उसके हर भाव, सोच, व्यवहार, विचार से गर्भ की प्रतिमा का आकार बनता है। गर्भ का जीव मात्र ग्रहण करना जानता है। इसलिए आहार से लेकर विचार तक वह मात्र ग्रहण ही करता रहता है।

आहार व व्यवहार

अच्छी सेहत व सही व्यवहार व्यक्ति को मानसिक, शारीरिक व सामाजिक रूप से परिपूर्ण बनाता है। गर्भस्थ जीव मानो एक गुरुकूल में है और उसका गुरु है सिर्फ 'माँ'। माँ का हर व्यवहार हर एक सोच, हर एक कार्य जाने अनजाने में जीव पर अपनी छाप छोड़ता ही है। सजगता और जागरूकता माँ का कर्त्तव्य है। नौ महीनों में माँ को आहार का विशेष ध्यान रखना चाहिये। माँ को नौ महीनों में बाजार में बने खाद्य पदार्थ खाना उचित नहीं है, क्योंकि वह खाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होने के साथ उसमें खाना बनाने वाले के भाव भी जुड़े हुए रहते हैं जो बुरे भी हो सकते हैं, जो कि बच्चे पर बहुत ही बुरा असर कर सकते हैं। उदाहरण के लिए आजकल बच्चे का जन्म होते ही माँ और बच्चा दोनों ही पीलिया बीमारी के शिकार होते हैं। यह दूषित खाना ग्रहण करने का ही नतीजा है। जबकि 20-30 साल पहले ऐसी बीमारी कम थी।

माता का प्रभाव शिशु पर

खाना जितना सात्त्विक होगा विचारों में उतनी ही सरलता आयेगी। इसका उदाहरण एक सत्य घटना है। एक माँ अपने बच्चे को क्रोध की अवस्था में स्तनपान करा रही थी, थोड़ी देर बाद देखा कि बच्चा कोई हलचल नहीं कर रहा है। डॉक्टर को बुलाया तो उसने बच्चे को देखकर कहा कि यह मर गया है। कारण जानने के बाद डॉक्टर ने बताया कि माँ गुस्से में बच्चे को दूध पिला रही थी तो वह दूध बच्चे के लिए अमृत के स्थान पर जहर बन गया और उसकी मौत हो गई।

स्पष्ट है कि माता का आहार ही नहीं हर व्यवहार, उसका उठना, बैठना, चलना, फिरना, सोना, जागना, आचार, विचार, सोच तथा भाव व भावनाएं शिशु के निर्माण, विकास एवं संस्कार में महत्त्वपूर्ण एवं निर्णायक असर डालते हैं। इन्हीं सब क्रिया-कलापों के अनुसार ही बच्चे का विकास होता है व संस्कार प्राप्त करता है। अतः बच्चे के सुनहरे भविष्य के निर्माण के लिये, सुसंस्कार के लिये माता को पदे-पदे सावधानी रखनी चाहिये, उसे हर कार्य व क्रिया सोच समझकर अच्छे भावों के साथ करनी चाहिये।

शिशु का प्रभाव माता पर

जिस प्रकार माँ शिशु पर अपना प्रभाव छोड़ती है, उसी प्रकार शिशु भी माँ पर शुभ व अशुभ प्रभाव डाल सकता है, क्योंकि जीव का भी पूर्व कर्मों के कारण अपना प्रभाव होता है। गर्भ धारण पश्चात् माँ के सपने, व्यवहार, खुद का आचरण, रुचि व नजरिये में यदि परिवर्तन आये तो यह शिशु का माँ पर प्रभाव है। जैसे मिलनसार होने का माँ का स्वभाव अब अकेलापन पसन्द करता है। या ऐसा भी हो सकता है कि गर्भस्थ स्त्री को सबके साथ रहना सबको खिलाकर खाने में आनन्द का अनुभव होता है। यदि माँ के मन में शुभ विचारों का संचार हो रहा है तो उसे बनाये रखना चाहिये उन्हें और बढ़ाना चाहिये, पल्लवित करना चाहिये। अगर परिवर्तन खराब या अशुभ हो तो उसमें उपयुक्त साधना विधि से सुधार करना चाहिये। धर्म गुरूओं से मार्गदर्शन लेकर उचित जप-तप व संयमित आचरण से उसे नियंत्रित किया जा सकता है, सुधारा जा सकता है।

आपसी सम्बन्ध एवं क्षमा/मैत्री

माँ के लिए आवश्यक है कि वह अपने से जुड़े सभी के साथ प्रेम व मैत्री की भावना रखे। नौ माह के लिए पुराने सारे भेद भाव मिटाकर सारी पिछली समस्याओं को भुलाकर उसे हर व्यक्ति से प्रेम का रिश्ता कायम करना चाहिए। इससे आने वाला शिशु भी मैत्री की भावना से सबको बांधेगा व सबसे जुड़ा हुआ रहेगा। सबके साथ सम्बन्ध अच्छे होने से

माता अपने कर्मबंधन से बचेगी व बच्चे को भी अशुभ कर्म-बन्धनों से बचायेगी। इसके लिए माता व पिता दोनों क्षमापना का पाठ "खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे" को नित्य सुबह शाम गुनगुनाये, वैसे ही भाव रखे।

जन्म के पश्चात् के संस्कार

आज के दूषित वातावरण में असंस्कारित शिशु अपनी ही बात रखता है चाहे वह पहनने के वस्त्र की बात हो अथवा खानपान की बात हो। चार वर्ष की आयु में बच्चे से पूछें कि उसके पिताजी कैसे हैं? वह कहेगा बहुत महान् हैं। 6 वर्ष की आयु में पूछें तो कहेगा मेरे पिताजी सबकुछ जानते हैं। उसके बाद 10-15 वर्ष की उम्र में पूछेंगे तो कहेगा अच्छे है, लेकिन गुस्सा बहुत करते हैं, तुनक मिजाज होते जा रहे हैं, जमाने के साथ नहीं चलते, पुराने खयालों के हैं। इस तरह उसका नजरिया बदल जाता है। लेकिन अगर उसको अच्छे संस्कार मिलेंगे तो वह हमेशा कहेगा मेरे पिताजी महान् हैं। मुझे अनुशासन में पाला, इस योग्य बनाया कि आज मैं उनकी सेवा कर सकूँ। यह तभी होगा जब माँ त्याग, तपस्या, सेवा, प्यार, अनुशासन से अपने बच्चों का लालन-पालन करे।

जन्म के पश्चात् माता व पिता दोनों कभी भी बच्चे पर तथा एक दूसरे पर नाराज न हो, क्रोध नहीं करें। खाने-पीने का पूर्ण विवेक व सावधानी रखें। माता-पिता को एंटी-बायोटिक, स्टेराइड जैसी दवाइयाँ नहीं लेनी चाहिए, क्योंकि उसका प्रभाव बच्चे पर पड़ता है।

जब भी माँ बच्चे को दूध पिलाये उसको प्रसन्नचित्त होकर व शुद्ध भाव से पिलाये। माँ को आर्त्तध्यान नहीं करना चाहिए। किसी भी परिस्थिति में माँ को बिलकुल नहीं रोना चाहिए, क्योंकि माँ के ऐसे आर्त्तध्यान करने से बच्चे की इन्द्रियाँ जो अभी कच्ची हैं, कमजोर होंगी और साथ ही बच्चे में ऐसे संस्कार पैदा होंगे कि वह आगे जाकर कोई भी समस्या का धैर्यपूर्ण सामना नहीं कर पाएगा। इतना ही नहीं, हमेशा स्वयं दुःखी रहेगा और जो दुःखी रहता है वह किसी को सुखी नहीं कर पाता। वह खुशी को न जान पाएगा न खुशी से जी पाएगा। यहाँ माँ आर्त्तध्यान से पुण्य को पाप में संक्रमित कर देती है।

जन्म के बाद माँ यह न समझे कि उसका दायित्व खत्म हो गया। जब तक बच्चे की इन्द्रियाँ परिपक्व न हों, माँ की हर कोशिश रहनी चाहिए बच्चे को मजबूत बनाने की। दोनों मानसिक व शारीरिक शक्तियाँ माँ उसे अभी ही दे सकती है। माँ को छोटी से छोटी बात का ध्यान रखना चाहिए।

-पूर्व महामंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर (राज.)
-467 ए, सातवीं 'ए' रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 (राज.)

युवा-स्तम्भ

युवा की धर्म से विमुखता : कारण और निवारण

श्रीमती रुचि डॉ. अनेकान्त जैन

''ईसाभावेण पुणो केई णिंदंति सुंदरं मग्गं।
तेसिं वयणं सोच्चाऽभत्तिं मा कुणह जिणमग्गे।।''

नियमसार की इस गाथा में युवाओं के लिए एक सन्देश छिपा है कि कितने ही लोग ईर्ष्याभाव से इस सुन्दर मार्ग की निन्दा करते हैं, किन्तु उनकी बातों में आकर अश्रद्धा मत करना।

किसी भी स्वस्थ, चिन्तनशील एवं विकसित समाज, धर्म, दर्शन की संरचना में युवा शक्ति का महत्त्वपूर्ण हाथ होता है, क्योंकि युवावस्था वह अवस्था होती है, जिसमें मनुष्य सबसे ज्यादा जोश, ऊर्जा एवं शक्ति से परिपूर्ण होता है। बचपन खेल-कूद और जीवन की व्यावहारिकताओं को जानने-समझने में बीत जाता है। वृद्धावस्था में जीवन के साँझपन का अनुभव होता है। मगर तब तक शारीरिक बल एवं मानसिक जोश नदारद हो जाता है, इसीलिए 'युवावस्था' को जीवन का स्वर्णिम काल कहा गया है।

युवक में असीम ताकत होती है। कहा जाता है कि युवकों के शब्दकोश में असम्भव नाम का शब्द ही नहीं होता है। तारुण्य जीवन की स्वर्णिम अवस्था है। वह बाल सुलभ चपलता और वृद्धत्व की अक्षमता- इन दो तटों के बीच रहने वाला वह प्रवाह है, जो कभी तूफान की भांति और कभी सहजता से बहता रहता है। इस अवस्था में चिन्तन के स्रोत खुल जाते हैं, विवेक जागृत हो जाता है और कर्मशक्ति निखार पा लेती है। जिस देश या वर्ग की तरुण पीढ़ी जितनी सक्षम होती है, वह देश और वर्ग उतना ही सक्षम बन जाता है।

मनुष्य समाज को शरीर से उपमित किया जाए तो युवापीढ़ी उसके महत्त्वपूर्ण अंगों में से एक है। शरीर के महत्त्वपूर्ण अंग जितने स्वस्थ और पुष्ट रहते हैं, शरीर उतना ही क्रियाशील होता है। युवापीढ़ी जितनी उन्नत, स्वस्थ और सक्षम होगी, मानव समाज उतना ही उन्नत, स्वस्थ और सक्षम बन सकता है।

जो व्यक्ति या समाज जितना अधिक सक्षम होता है, उस पर उतनी ही अधिक जिम्मेदारियाँ आती हैं। जिम्मेदारियों का निर्वाह वही करता है जो दायित्वनिष्ठ होता है। समाज के भविष्य का समग्र दायित्व युवापीढ़ी पर आने वाला है, इसलिये दायित्व निर्वाह की क्षमता का अर्जन, स्थायित्व और समुचित उपयोग होना अपेक्षित है।

दो प्रकार की धारणाएँ

युवा पीढ़ी के प्रति दो प्रकार के दृष्टिकोण देखे जाते हैं। एक दृष्टि से युवकों को कोसा जा रहा है, क्योंकि वे उच्छृंखल हैं, अनुशासनहीन हैं, सामाजिक वर्जनाओं को तोड़ने वाले और अपनी आभिजात्य परम्पराओं की उपेक्षा तथा अवहेलना करने वाले हैं।

दूसरी दृष्टि युवा पीढ़ी की कुछ विरल विशेषताओं की ओर इंगित करती है। युवक कर्मठ होते हैं, उदार होते हैं, धुन के पक्के होते हैं और आर्थिक क्षेत्र में अपेक्षाकृत चारित्रनिष्ठ होते हैं। उक्त धारणाओं के आधार पर हमें युवकों को सापेक्ष दृष्टि से देखना चाहिये। उनकी अच्छाइयों को प्रोत्साहन देना है और त्रुटियों को मधुरता से दूर करना है। उनके प्रति घृणा के बीज न बोकर प्रेम की वर्षा करनी है। निराशा को तोड़कर नयी आशा का संचार करना है। ऐसा करने से युवापीढ़ी की क्षमताओं का विकास हो सकता है।

युवापीढ़ी की सार्थकता

आज युग करवट ले रहा है। वह अपने विकास के लिये युवा पीढ़ी का आह्वान करता है और चाहता है, नवनिर्माण में उसका महत्त्वपूर्ण योगदान। युवा चेतना भी अपनी कुछ आकांक्षाएँ रखती है और उनकी पूर्ति के लिये उसे नये और प्राचीन मूल्यों के साथ संघर्ष करना होता है। मूल्य दो प्रकार के होते हैं- शाश्वत और सामयिक। शाश्वत मूल्य अपरिवर्तनीय होते हैं। सामयिक मूल्यों को स्थिरता देने का प्रयास मूल्य-निर्धारण की चेतना को कुंठित करना है। कुंठित चेतना सत्य का साक्षात्कार नहीं कर सकती। अतः इन दोनों तरह के मूल्यों को समझते हुए शाश्वत मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में सामयिक मूल्यों के परिवर्तन को स्वीकार करके सन्तुलन बैठाना होगा।

धर्म से विमुखता का कारण और निवारण

दुनिया का शायद ही कोई धर्म या सम्प्रदाय रहा हो जिसमें दिखावा, पाखण्ड या फिर चमत्कारी कथाओं का समावेश न हुआ हो। धर्म मनुष्य की नैसर्गिक उन्नति में सहायक बना है, उसके ज्ञान को विकसित करने का एक सशक्त स्रोत रहा है, मनुष्य के लौकिक-पारलौकिक कल्याण का एक मात्र उपाय है तो साथ ही साथ धर्म के नाम पर हो रहे ढोंग, अज्ञान, हिंसा, अत्याचार, आतंकवाद आदि ने मनुष्य के आन्तरिक और बाह्य विकास को आदिम सभ्यता और राक्षसीय वृत्ति में ढकेलने में भी अपना पूरा योगदान दिया है।

धार्मिक विकृतियों की गाथाएँ भी उतनी ही प्राचीन हैं जितनी कि धार्मिक अभ्युदय की। आज कम समय में सब कुछ हासिल करने के जुनूनी युवा धर्मक्षेत्र में भी सबकुछ पका-पकाया चाहते हैं। यदि वे यह अपेक्षा रखते हैं कि उन्हें अध्यात्म किसी फास्टफूड की तरह मुँह में ठूँस दिया जाए और वे समस्त आत्मिक उपलब्धियों को क्षणभर में प्राप्त कर लें तब

ही उन्हें धर्म रास आयेगा तो हमें उनसे माफी मांगनी पड़ेगी। क्योंकि यहाँ ऐसा कोई भी इंजेक्शन तैयार नहीं हुआ है जो लगाते ही आत्मानुभूति के आनन्द में डुबो देगा और ऐसा कोई वैक्सीन अभी तक नहीं बन पाया है जो लगाते ही आपको मिथ्यात्व के पोलियो से सदा के लिये बचा लेगा। हम यह विनम्रता पूर्वक कहना चाहेंगे कि धर्म वह स्थल है, जहाँ परिश्रम के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं है।

मैं तो नयी पीढ़ी के पूरे समुदाय से आगाज़ करना चाहती हूँ कि वे धर्म से सिर्फ लाभ लेने की न सोचें, उसके मूल स्वरूप को बचाने का यत्न भी करें। इस पीढ़ी का स्वागत इसलिए भी है क्योंकि उसमें ढकोसलों के खिलाफ लड़ने का अदम्य साहस है। मैं यह कहना चाहती हूँ कि जिन ढकोसलों का उल्लेख करके तुम धर्म से विमुख हो रहे हो, उन्हीं ढकोसलों को धर्म से दूर करने का दायित्व तुम्हें ही निभाना है। यह धर्म आपका है, हम सबका है। आप इसे मेहमान बनकर मत अपनाइये, क्योंकि तब हमें बुराइयों को दूर करने की जगह उन पर पर्दा डालना पड़ता है और जब पर्दा उठता है तो तुम्हें ही बुरा लगता है। अपना घर समझकर आओ और अच्छाइयों, बुराइयों, दोषों को देखो और अच्छाइयों को सुरक्षित रखें, बुराइयों को दूर भगाएं। यह सामर्थ्य भी युवा पीढ़ी में है। फिर भी आज जो नयी पीढ़ी धर्म से विमुख हो रही है उसके कुछ प्रमुख कारण ये समझ में आते हैं-

कारण

कृत्रिम वातवारण से है नफरत- आज का युवा यथार्थवादी है। वह स्वप्न तो देखता है, लेकिन यथार्थ के धरातल पर। पारिवारिक संस्कारवशात् या फिर धार्मिक रहस्यों के कौतूहल से वह जीवन में एक बार धर्म की तरफ निहारता जरूर है, कुछ ऊपर-ऊपर की बातें उसे रास भी आने लगती हैं, स्वभाव की चर्चा में उसे रस आने लगता है, किन्तु जब वह धर्म क्षेत्र में ज्यादा प्रविष्ट होने लगता है तो वहाँ का बनावटी और कृत्रिम वातावरण उसे झकझोरने लगता है। दरअसल बाह्य सांसारिक, व्यावसायिक बनावटी वातावरण से उकता कर ही वह धर्म के स्वाभाविक वातावरण की तरफ आया था, ताकि उसे कुछ सुकून मिल सके, किन्तु यहाँ जब उसे खोखले उसूल और नाटकीय अध्यात्म दिखायी देता है तब वह शेष संसार की ही भांति उसे देखकर नफरत करने लगता है।

निवारण

समाज से अपेक्षाएँ- इस समस्या का समाधान स्थायी होना चाहिये। दर्द का समाधान दूसरा दर्द नहीं हो सकता। समाज को चाहिये कि कम से कम वह धार्मिक वातावरण को सांसारिक प्रपंचों से दूर रखे। उसे अधिक से अधिक ईमानदार, नैतिक और स्वाभाविक रखने का प्रयास करें। युवा वर्ग जिन पोस्टरों, विज्ञापनों, नारों से आकर्षित होकर धर्म शरण

में आता है कम से कम हम उन 'आत्मानुभूति और तत्त्वप्रचार' जैसे उद्देश्यों को यथार्थ में चरितार्थ भी करें। इसमें भी यदि पद, मान, प्रतिष्ठा की छलछद्म युक्त राजनीति से हम निज़ात नहीं पा सकते तो धिक्कार है ऐसे लक्ष्यों पर।

युवाओं से अपेक्षाएँ– इस कारण का एक निवारण यह भी हो सकता है कि युवा अपना तत्काल निर्णय लेने वाला दृष्टिकोण कुछ बदले। कुछ समस्याओं के समाधान वक्त के अनुसार होते हैं। आप यदि वास्तव में समाधान चाहते हैं तो धर्मक्षेत्र में व्याप्त इन बुराइयों में न उलझें। उनका सार ग्रहण करें। हो सके तो उस बुराई का हिस्सा बनने की अपेक्षा उसको दूर करने का प्रयास करें।

कारण

अनेक प्रश्नों के उत्तर नहीं है ?– ये धर्म से विमुख होने का एक प्रमुख कारण है। युवाओं के अनेक प्रकार के तथ्यात्मक प्रश्न हैं जिनके कोई सही उत्तर देने की बजाय, धार्मिक लोग उनके प्रश्नों को ही नकारा या बेहूदा घोषित करने लग जाते हैं या फिर उनके वैज्ञानिक प्रश्नों का ऐसा अंधविश्वासात्मक उत्तर देते हैं कि युवाओं को निराशा होने लगती है।

निवारण

समाज पक्ष से अपेक्षा– समाज को यह स्वीकार कर लेना चाहिये कि अब अशिक्षा का युग नहीं है और न ही अंधविश्वासों का जमाना है। युवाओं के हर तरीके के प्रश्नों को आप उनकी अश्रद्धा से न जोड़ें। उनके प्रश्न बताते हैं कि उनकी धर्म-दर्शन में गहरी रुचि है तभी तो जिज्ञासाओं का अम्बार लग रहा है। दिक्कत यह नहीं है कि उनके प्रश्नों के जवाब नहीं है, बल्कि दिक्कत यह है कि उनके स्तर का जवाब देने लायक लोग धर्म क्षेत्र में बहुत कम हैं। आज भी धर्म-दर्शन के वैज्ञानिक अध्ययन को बहुत अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता है। धर्म और विज्ञान को दोनों लोग विरोधी मानते हैं। जबकि ये दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। धर्म-अध्यात्म को भी दूषित करते हैं। धर्म क्षेत्र में योग्य, यथार्थवादी, पढ़े-लिखे, परिश्रमी और आडम्बरों से दूर रहने वाले तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले लोगों की संख्या यदि बढ़ जाये या फिर इस क्षेत्र में पूर्व से ही संलग्न लोग यदि इन बातों का प्रशिक्षण प्राप्त कर लें तो कायाकल्प हो सकता है। वे युवाओं को आकर्षित कर सकते हैं- उनके प्रश्नों के सटीक उत्तर देकर।

युवापक्ष से अपेक्षा– युवावर्ग से इस विषय में यह अपेक्षा है कि वे प्रश्न अवश्य करें और किसी से डरे बिना निःसंकोच समाज के समक्ष रखें, उन्हें झकझोरें। आप ढीले न पड़ें और यदि आपको संतोषजनक उत्तर प्राप्त नहीं होते हैं तो खुद तलाश करें। इतिहास गवाह है कि जितने भी महान् पुरुष हुए हैं उनके प्रश्नों के उत्तर कभी तत्कालीन समाज ने नहीं दिये।

उन्होंने अपने प्रश्नों के उत्तर स्वयं तलाशे हैं। भगवान महावीर, बुद्ध आदि सभी ने यही किया। अपनी साधना के बल से समाधान प्राप्त किया। आज वस्तुपरक, यथार्थवादी, वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले अनेक विचारक पुस्तकें लिखते हैं, आप उनका साहित्य पढ़ें, आपको अवश्य मार्गदर्शन प्राप्त होगा। आगम ग्रन्थ तो भगवान की वाणी के मूल स्रोत हैं- सदियों से उन्हें पढ़कर लोगों के मन में जिज्ञासाएँ होती आयी हैं। दार्शनिकों तथा विचारकों ने अपनी अनेक उलझनों को उनके माध्यम से सुलझाया है तथा कई पुस्तकें लिखी हैं। हमारी 99 प्रतिशत समस्याओं का समाधान तो वहीं से मिल जायेगा। मगर पढ़ने का प्रयास तो खुद को ही करना पड़ेगा। मेरा युवकों को यही सन्देश है कि केवल समस्याएँ ही न रखें, बल्कि समाधान का हिस्सा भी बनें।

कारण

परम्परा और विकास का अन्तर्द्वन्द्व- युवावर्ग इस समय परम्परा और विकास के जबरदस्त अन्तर्द्वन्द्व से ग्रसित है। परम्पराएँ उसे जड़ बना रही हैं और विकास उन्हें जड़ से उखाड़ रहा है। युवा भौतिक विकास की समस्त ऊँचाइयों को तो छूना चाहता है लेकिन अपने पारम्परिक मूल्यों और ऊर्जाओं के बिना वह इन ऊँचाइयों को भी अंततः अधूरा पाता है। पारम्परिक होता है तो परम्परा विकास का मार्ग अवरुद्ध करती है, अन्ततोगत्वा वह विकास से समझौता नहीं कर पाता है और पारम्परिक धार्मिक मूल्यों की उपेक्षा करके उन्हें सूली पर चढ़ा देता है तथा भौतिक विकास को ही अपनाता है।

निवारण

समाज वर्ग से अपेक्षा- समाज से यह अनुरोध है कि वह इस विडम्बना को समझे। भौतिक अभ्युदय की उनकी कामना इतना बड़ा अपराध नहीं है जो धर्म क्षेत्र उसे एक सिरे से नकारता फिरता है। निश्चित रूप से शुरूआती दौर में कोई भी युवा धर्म के पक्ष में खड़ा हो जाये, इतना ही बहुत है। देशकाल परिस्थिति के अनुसार हमेशा वेश-भूषा, खान-पान, रहन-सहन इन सबमें परिवर्तन होता है, विकास भी होता है, ह्रास भी होता है। हम धर्म का सम्बन्ध मात्र इन तुच्छ चीज़ों से जोड़ेंगे तो धर्म को कभी भी शाश्वत घोषित नहीं कर पायेंगे। हमें यह समझना होगा कि 'अध्यात्म के साथ भौतिक विकास' का सूत्र ही युवाओं की बेरुखी दूर कर सकता है। सब कुछ त्यागकर धर्म की शरण तो बहुत ऊँची अवस्था है- जो तभी प्राप्त की जा सकती है जब युवा धर्म की ओर उन्मुख हो। प्रथम द्वार पर ही मुनि जीवन अंगीकार करने के लिए प्रेरित करेंगे तो न तो समाज बन पायेगा और न ही व्यवहार धर्म।

युवा वर्ग से अपेक्षा- भौतिक विकास की आकांक्षा अनुचित नहीं है, किन्तु उसके भी

अपने नीतिगत तरीके हैं, जिनका मार्ग धर्म से होकर ही गुजरता है। युवाओं को एक भ्रांति यह भी हो गयी है कि धर्म का अर्थ मात्र और मात्र निवृत्ति है। धर्म में कभी भी कहीं भी ऐसी अप्रायोगिक दशा का चित्रण नहीं किया गया है। एकान्त रूप से मात्र भौतिक अभ्युदय भी तब अन्दर से काटने को दौड़ता है। उस सुख का भोग करने वाले हमारे अपने साथ नहीं होते, हमें अन्दर से अमृत से भरे हुए घट के समान तृप्त करने वाला अध्यात्म, पारम्परिक ऊर्जा और मूल्य हमारे साथ नहीं होते, उस समय तमाम भौतिक संसाधनों से घिरा मनुष्य खुद को अन्दर से कितना कुंठित और रीता पाता है- ये वे ही समझ सकते हैं जिन्होंने ऐसा भोगा है।

युवावर्ग को दृष्टिकोण परिवर्तित करने चाहिये। All in one की अवधारणा में अध्यात्म भी आता है। वरना All खण्डित हो जायेगा। अनेकान्त का सिद्धान्त कहता है कि अध्यात्मशून्य भौतिक विकास एकांगी है और वह मनुष्य की नैसर्गिकता का विनाश है अतः हम आध्यात्मिक कला को सीखकर उन भौतिक संसाधनों का उपयोग अधिक कुशलता के साथ उनमें ममत्व भाव स्थापित किये बिना कर सकते हैं। इसलिए विकास के साथ-साथ पारम्परिक ऊर्जा बहुत आवश्यक है, तभी सन्तुलित विकास हो सकता है।

कारण

भोगों के प्रति अत्यधिक आसक्ति- युवापीढ़ी भोगों के पीछे पागल है। पञ्चेन्द्रिय के विषय-भोग ही जीवन का एक मात्र लक्ष्य कभी नहीं हो सकता, अन्यथा मनुष्य जन्म की कोई सार्थकता नहीं रहेगी। भोगों के प्रति अत्यधिक आसक्ति युवाओं को धर्म से इसलिये विमुख कर रही है, क्योंकि यहाँ उन्हें भोगों को त्यागने की बात कही जाती है।

निवारण

समाज पक्ष से- अत्यधिक धन की उपलब्धि और सुविधा भोगों के प्रति आसक्ति को बढ़ाता है। समाज का यह दायित्व है कि वह अत्यधिक धनाढ्य और सुविधासम्पन्न लोगों को दान के लालच में ज्यादा महत्त्व या सम्मान न दे। इससे पीढ़ी को यह सन्देश जाता है कि जितना ज्यादा परिग्रह होगा, धर्म क्षेत्र में उतना ही ज्यादा सम्मान मिलता है। फलतः वे धर्माचरण के स्थान पर भोगाचरण और अधिक धनाढ्य होने को ही अपना लक्ष्य बनाते हैं।

युवा पक्ष से- अत्यधिक भोग की कांक्षा और आसक्ति दुःख उत्पन्न करती है अतः युवा वर्ग भी भोगों का सीमाकरण करने का अभ्यास करे और उपलब्ध भोगों के प्रति भी अधिक आसक्ति का भाव न रखे। यह कला वह अध्यात्म से भलीभांति सीख सकता है। जरूरी नहीं कि भोगों का त्याग ही कर दिया जाये, बस सावधानी यह रखनी है कि भोग हमारे ऊपर हावी न हो पायें। आखिरकार ये साधन हैं तो साधन ही बने रहें, कभी साध्य न बन जायें।

कारण

समय का अभाव– प्रायः युवापीढ़ी का यह आम कथन है कि 'समय के अभाव' के कारण वे धर्म से विमुख हैं। विशेषकर महानगरों में सुबह काम पर निकल जाना, रात्रि में देर तक घर पहुँचना, यह सब आजकल के जीवन की ऐसी विडम्बनाएँ हैं जिनके कारण वह चाहकर भी धर्मक्रिया आदि में प्रवृत्त नहीं हो पा रहा है। यदि रविवार आदि का समय मिलता भी है तो धर्मस्थलों के झगड़े-फसाद सुनकर मन कलुषित हो जाता है।

निवारण

समाज से अपेक्षा– धर्म-स्थल के माहौल को बहुत कूल और फ्रेंडली रखें। यदि युवा वर्ग कभी समय निकालकर आता भी है तो उसे वहाँ इतना आनन्द आना चाहिये, इतना सुकून मिलना चाहिये, इतने समाधान मिलने चाहिये कि वह यहाँ आने को तरसे। उसे उपयोगिता नज़र आनी चाहिये। मंदिरों में स्वाध्याय में फालतू की बातें न करके तथ्यात्मक बातें करें। कार्यक्रमों में समय की प्रतिबद्धता न होना, अनुशासन की कमी होना आदि युवाओं को बिल्कुल नहीं भाता। इसलिये वे धर्म के कार्यक्रमों में आने को समय की बर्बादी समझते हैं। अतः कार्यक्रमों में सुधार तथा उन्हें स्तरीय बनाने से युवा उस ओर आकर्षित हो सकते हैं।

युवाओं से अपेक्षा– युवक भी समय की कमी को एक बहाने के रूप में ज्यादा प्रस्तुत करते हैं। प्रायः देखा जाता है फेसबुक, ट्विटर, वाट्स एप, कम्प्यूटर गेम, टी.वी. आदि में घण्टों बर्बाद कर देते हैं, किन्तु जब स्वयं के कल्याण के लिये धर्म की बात आती है तो कहते हैं कि समय नहीं है। तमाम व्यस्तताओं के बीच भी जिस प्रकार हम नहाने-धोने, खाने-पीने के लिये थोड़ा समय अनिवार्यतः निकालते हैं उसी प्रकार धर्माराधना को भी, अनिवार्य रूप से छोटे रूप में ही सही, जीवन में सम्मिलित किया जा सकता है। यह समय हमें स्वाध्याय, जाप, सामायिक, आत्मचिन्तन, पूजन-अभिषेक आदि किसी भी रूप में अवश्य देना चाहिये। ध्यान रहे, यह धर्म वैकल्पिक व्यवस्था का नाम नहीं है, यह अनिवार्य है। हमारे खुद के सुख और शांति के लिये।

इसके अलावा भी अनेक कारण हो सकते हैं जैसे युवाओं को यह भ्रम हो गया है कि- धर्म आधुनिकता का विरोधी है, इसलिये वे विमुख हो रहे हैं। उनकी विमुखता के कुछ और कारण संक्षेप में निम्न प्रकार हैं- (i) उन्हें साम्प्रदायिक मतभेदों से चिढ़ होती है। (ii) वे अध्यात्म शून्य क्रिया-काण्डों से उकता गये हैं। (iii) धार्मिक चमत्कारों को यथार्थवादी नहीं मानते। (iv) धर्मात्माओं की कथनी-करनी के भेद नहीं भाते। (v) नरक-निगोद आदि धमकियों से उन्हें चिढ़ है।

इन सभी समस्याओं के समाधान के लिये हमें एक खुले संवाद का मार्ग अपनाना होगा। समाज में एक ऐसा माहौल तैयार करना होगा, जहाँ वे खुलकर प्रश्न पूछ सकें, उनके गुस्से को सुनना होगा, उनकी प्रतिक्रियाओं को सहना होगा और अपनी तरफ से एक सकारात्मक समाधान देना होगा। उनकी क्षमता को पहचानकर उन पर विश्वास करना होगा। कालिदास भी कहते हैं-

पुराणमित्येव न साधु सर्वं, न चापि काव्यं नवमित्यनवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते, मूढः परप्रत्ययनेयवृत्तिः।।

अर्थात् पुराना काव्य अच्छा है, नया खराब है, यह मान्यता गलत है। ऐसा नहीं होना चाहिये। जो सज्जन और विद्वान् लोग हैं, उन्हें परीक्षा करनी चाहिये कि कौनसा अच्छा है, कौन सा खराब है? केवल नये पुराने के आधार पर किसी को अच्छा या बुरा नहीं कहा जा सकता।

अतः यह नहीं मानना चाहिये कि युवा हमेशा गलत ही करते हैं या मानते हैं। वे भी ऐसी क्षमतायें रखते हैं जो पुराने से ज्यादा अच्छा करके दिखा सकते हैं। उन पर आपका भरोसा उन्हें धर्म में नये प्रयोगों हेतु आमंत्रित करेगा।

इस विषय पर बहुत ही सन्तुलित तरीके से आगे बढ़ना है। आज की पीढ़ी उम्र की उठान पर ही घनघोर हताशा और निराशा की शिकार है। ये बाहर से जितने विकसित और गतिमान दिखायी दे रहे हैं उनका अन्तर्जगत् उतना ही क्षत-विक्षत है। यही कारण है कि अपने अन्दर के खालीपन से घबराकर ये नशे जैसी प्रवृत्ति अपना लेते हैं। हमें इनका समाधान बनना पड़ेगा। अध्यात्म से जुड़ा व्यक्ति कभी निराशा, तनाव से नहीं घिरता। वह अपने अन्दर के सूनेपन को मिटाने के लिए ॐ का नाद स्वीकार करता है, तत्त्वज्ञान का बोध प्राप्त करता है और संसार में रहकर भी संसार से ऊपर उठकर जीने की कला सीख जाता है। यदि हम युवाओं को यह समझाने में सफल हो गये कि धर्म-अध्यात्म कला का नाम है। यह कोई कार्य नहीं है जिसके लिए अलग से बहुत समय देना पड़े। कला तो ऐसी है जो सीख ले उसका पूरा जीवन 'सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्' हो जाये। तब युवा कभी धर्म से विमुख नहीं होगा।

-जिन फाउण्डेशन, ए93/7ए, नई दिल्ली-110074

आवश्यकता

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ को दक्ष हिन्दी आशुलिपिकों की आवश्यकता है। अपनी योग्यता-विवरण के साथ निम्नांकित पते पर आवेदन करें।-
पूरणराज अबानी, महामंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोनः 0291-2636763

स्वास्थ्य-विज्ञान

शरीर में स्वयं रोग-मुक्त होने की क्षमता होती है

डॉ. चंचलमल चोरडिया

रोग की तीन अवस्थाएँ होती हैं- शारीरिक, मानसिक और आत्मिक। जिस अवस्था का रोग होता है, उसके अनुरूप यदि उपचार नहीं किया जाता है तो रोग से मुक्ति सम्भव नहीं होती। आजकल अधिकांश व्यक्ति मानसिक और आत्मिक रोगों को तो रोग मानते ही नहीं, क्योंकि मन की एवं आत्मा की शक्ति का न तो उन्हें सम्पूर्ण ज्ञान होता है और न वे उसको जानने एवं समझने का अपेक्षित प्रयास ही करते हैं। शरीर से मन की शक्ति बहुत ज्यादा होती है और मन से आत्मा की शक्ति अनन्तगुणी होती है। जब आत्मा पर आए कर्मों के आवरण दूर हो जाते हैं तो व्यक्ति अनन्तद्रष्टा अर्थात् त्रिकाल द्रष्टा बन जाता है। मन की शक्ति का उस समय आभास होता है जब व्यक्ति को चलने-फिरने में अत्यधिक कष्ट होता है, परन्तु उसके सामने मारणान्तिक भय उपस्थित होने पर वह दौड़ने लग जाता है। शारीरिक वेदना से तड़फने वाले एवं मृत्यु की शय्या पर अन्तिम श्वास गिनने वालों के सामने जब लम्बे समय के पश्चात् कोई स्नेही परिजन मिलने पहुँचता है तो क्षणमात्र के लिए वह सारे दुःख दर्द कैसे भूल जाता है? कहने का तात्पर्य यही है कि चिकित्सा करते समय एक मात्र शरीर को इतना अधिक महत्त्व न दें, जिससे आत्म विकार बढ़ें और मनोबल कमजोर हो। अन्यथा हमारा प्रयास घाटे का सूचक होगा, हमारी प्राथमिकताएँ गलत होंगी। यह तो नौकर को मालिक से ज्यादा महत्त्व देने के समान अबुद्धिमत्ता पूर्ण होगा। अपनी शक्तियों का अवमूल्यन अथवा गलत आकलन करने के तुल्य होगा। ऐसा करना कर्जा चुकाने के लिए ऊँचे ब्याज की दर पर दूसरों से कर्जा लेकर चुकाने के समान गलत आचरण होता है।

रोग के कारणों से बचना आवश्यक

केवल शारीरिक रोगों का ही विचार करें तो, उसके भी अनेक कारण होते हैं। जैसे हमारे पूर्व जन्म के उपार्जित असाता वेदनीय कर्मों का उदय, पैतृक संस्कार, असंयमित, अनियमित एवं अनियन्त्रित जीवन पद्धति, ज्ञानेन्द्रियों का दुरुपयोग, कषाय, प्रमाद एवं अशुभ प्रवृत्तिमय जीवन इत्यादि। पुराने एवं असाध्य रोग की स्थिति में जीव जब से माता के गर्भ में आता है तब से वर्तमान परिस्थितियों तक रोग के कारणों का अध्ययन करना होगा। सभी प्रकार के रोगों की अभिव्यक्ति शरीर में विभिन्न असन्तुलनों के रूप में प्रकट होती है। एक महत्त्वपूर्ण लोकोक्ति है- **'पैर गरम, पेट नरम और सिर ठण्डा, फिर डॉक्टर आवे**

तो मारो डण्डा' कितनी यथार्थपूर्ण है। अर्थात् जो शारीरिक श्रम करते हैं उनकी पगथली कभी ठण्डी नहीं रह सकती। जिनका पाचन एवं अवांछित तत्त्वों का शरीर से निष्कासन बराबर होता है, उनका पेट प्राय: नरम व स्वच्छ होता है। इसीलिए तो कहा गया है कि **'पेट साफ तो सब रोग माफ'**। जो तनाव मुक्त, चिन्ता मुक्त और मस्त रहता है उसका सिर ठण्डा रहता है। अर्थात् शारीरिक श्रम, सुव्यवस्थित पाचन एवं तनावमुक्त जीवन पद्धति शारीरिक स्वस्थता के लिए आवश्यक है तथा जितनी-जितनी इनकी उपेक्षा होगी, शरीर में रोगों की संभावना बढ़ती जायेगी। इन सब बातों का पालन व्यक्ति को स्वयं ही करना पड़ता है। बाजार से मिलने वाली दवाइयाँ नहीं कर सकती। अत: **स्वस्थ जीवन जीने के लिए व्यक्ति की सजगता, सम्यक् पुरुषार्थ, भागीदारी तथा स्वावलम्बी बनने की तीव्रतम भावना आवश्यक होती है।**

जिस प्रकार खेत में बीज बोने से पूर्व उसकी सफाई अति आवश्यक होती है, फूटे हुए घड़े को भरने से पहले उसके छिद्र को बन्द करना जरूरी है, तालाब खाली करने के लिए पानी की आवक रोकना अनिवार्य होता है। ठीक उसी प्रकार रोग के सही कारणों का निदान कर, उनको दूर किये बिना तथा भविष्य में उनसे बचने हेतु स्वास्थ्य के नियमों का पालन किये बिना, हम दीर्घकाल के लिये रोगों से पूर्ण रूपेण छुटकारा नहीं पा सकते।

सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा पद्धति कौनसी ?

स्वावलम्बी या परावलम्बी ? सहज अथवा दुर्लभ ? सरल अथवा कठिन, सस्ती अथवा मँहगी ? प्रकृति के सनातन सिद्धान्तों पर आधारित प्राकृतिक या नित्य बदलते मापदण्डों वाली अप्राकृतिक ? अहिंसक अथवा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हिंसा, निर्दयता, क्रूरता को बढ़ावा देने वाली ? दुष्प्रभावों से रहित अथवा दुष्प्रभावों वाली। शरीर की प्रतिकारात्मक क्षमता बढ़ाने वाली या कम करने वाली ? रोग का स्थायी उपचार करने वाली अथवा मात्र राहत पहुँचाने वाली ? सारे शरीर को एक इकाई मानकर उपचार करने वाली अथवा शरीर का टुकड़ों-टुकड़ों के सिद्धान्त पर उपचार करने वाली ?

अच्छी चिकित्सा पद्धति शरीर को स्वस्थ ही नहीं, नीरोग रखती है। अर्थात् जिससे शरीर में रोग उत्पन्न ही न हो। रोग होने का कारण आधि (मानसिक रोग), व्याधि (शारीरिक रोग), उपाधि (कर्मजन्य) विकार होते हैं। अत: अच्छी चिकित्सा तीनों प्रकार के विकारों को समाप्त कर समाधि दिलाने वाली होती है। अच्छी चिकित्सा पद्धति के लिए आवश्यक होता है- रोग के मूल कारणों का सही निदान, स्थायी एवं प्रभावशाली उपचार। इसके साथ-साथ जिस पद्धति में रोग का प्रारम्भिक अवस्था में ही सही निदान हो सके तथा जो

भविष्य में रोगों को रोकने में सक्षम हो। जो पद्धति सहज हो, सरल हो, सस्ती हो, स्वावलम्बी हो, दुष्प्रभावों से रहित हो, पूर्ण अहिंसक हो तथा जिसमें रोगों की पुनरावृत्ति न हो। जो चिकित्सा शरीर को स्वस्थ करने के साथ-साथ मनोबल ओर आत्मबल बढ़ाती हो तथा जो सभी के लिए, सभी स्थानों पर सभी समय उपलब्ध हो। अच्छी चिकित्सा पद्धति के तो प्रमुख मापदण्ड यही होते हैं। जो चिकित्सा पद्धतियाँ इन मूल सनातन सिद्धान्तों की जितनी पालना करती हैं, वे उतनी ही अच्छी चिकित्सा पद्धतियाँ होती हैं। अच्छी चिकित्सा का मापदण्ड भीड़ अथवा विज्ञापन नहीं होता, अपितु अन्तिम परिणाम होता है। मात्र रोग में राहत ही नहीं, स्थायी उपचार होता है। दवाओं की दासता से मुक्ति होती है।

चिकित्सा में भ्रम

चन्द समय के लिये तात्कालिक राहत पहुँचाने वाली चिकित्सा को प्रभावशाली चिकित्सा मानना एवं भविष्य में उससे पड़ने वाले दुष्प्रभावों की उपेक्षा करना अपने आपको धोखे में रखना होता है। जिस प्रकार दीमक लगी लकड़ी पर रंग रोगन करने से मजबूती नहीं आ सकती, कचरे को दबाकर अथवा छिपाकर रखने से उसमें अधिक सड़ान्ध एवं अवरोध की समस्या ही पैदा होती है, शत्रु को घर में शरण देना बुद्धिमत्ता नहीं; ठीक उसी प्रकार बाजार में मिलने वाली दवाइयाँ और इंजेक्शन, जो शरीर की प्रतिरोधक शक्ति क्षीण करती है, प्राय: रोग के कारणों को मिटाने के बजाय उसको दबाने अथवा रोग को अन्य रूप से प्रकट करने का मार्ग प्रशस्त करती हैं, जिनसे कभी-कभी भविष्य में अधिक घातक परिणाम होने की संभावना बनी रहती है। ऐसी स्थिति में रोगी के लिए दवा जीवन का अंग बन जाती है और आलम्बन छोड़ते ही समस्या उग्र रूप धारण करने लग जाती है।

जनसाधारण की ऐसी मान्यता हो गई है कि जितना महंगा उपचार होता है, डॉक्टर की फीस जितनी ज्यादा होती है, उतना ही उपचार प्रभावशाली होता है। भ्रामक विज्ञापन और डॉक्टरों के पास पड़ने वाली भीड़ ही उनकी योग्यता का मापदण्ड बन रही है। वास्तव में अंग्रेजी चिकित्सा का आधार वैज्ञानिक कम एवं विज्ञापन ज्यादा है, जिसका मूल कारण शरीर की असीम क्षमताओं के प्रति हमारा अज्ञान और डॉक्टरों के प्रति हमारी अन्ध श्रद्धा ही समझना चाहिये।

अनन्त शक्ति का स्रोत : मानव शरीर

मानव शरीर की संरचना, नियन्त्रण एवं संचालन इस विश्व का सबसे बड़ा आश्चर्य है। आधुनिक विज्ञान की शायद ही कोई ऐसी मशीन है जिससे मिलती-जुलती मशीन हमारे शरीर के अन्दर न हो। मस्तिष्क के जैसा सुपर कम्प्यूटर, हृदय एवं गुर्दे के जैसा शुद्धीकरण संयंत्र, आमाशय के जैसा रासायनिक कारखाना, लसिका तन्त्र की जैसी सफाई व्यवस्था,

नाड़ी तंत्र की जैसी मीलों लम्बी संचार व्यवस्था, अन्त:स्रावी ग्रन्थियों जैसी प्रशासनिक व्यवस्था, आँखों के जैसा केमरा, प्रकाश की गति से भी तेज गति वाला मन इत्यादि एक ही स्थान पर, अन्यत्र कहीं ढूंढने पर भी मिलने कठिन होते हैं। इससे भी बड़ा आश्चर्य तो यह है कि सारे अंग और अवयव शरीर में व्यवस्थित ढंग से अपना कार्य करते हुए एक दूसरे के साथ पूर्ण सहयोग, समन्वय एवं तालमेल रखते हैं। शरीर के किसी भाग में सुई अथवा पिन चुभने मात्र से सभी ज्ञानेन्द्रियाँ और मन अपना कार्य छोड़कर उस स्थान पर अपना ध्यान केन्द्रित कर देते हैं तथा जब तक चुभन दूर नहीं होती आँखों से अश्रु, मुँह से आह निकलने लगती है। प्रश्न खड़ा होता है कि जिस शरीर में इतना सहयोग एवं तालमेल हो, क्या उसमें कभी कोई अकेला रोग हमला बोल सकता है? वास्तव में जिस रोग के लक्षण प्रकट होते हैं, वह रोगों के परिवार का नेता होता है और उसके पीछे सैंकड़ों अप्रत्यक्ष सहयोगी रोगों का बहुमत होता है, जिनकी तरफ हमारा ध्यान ही नहीं जाता। आज रोगों के नाम पर रोगियों को गुमराह किया जा रहा है। रोगों की लंबी-लंबी व्याख्यायें की जा रही हैं, परन्तु स्वास्थ्य का मूलाधार गौण किया जा रहा है। मानो पेड़ को सुरक्षित रखने के लिए जड़ को सींचने के बजाय फूल पत्ती को सींचा जा रहा है। शरीर को टुकड़ों-टुकड़ों में बांट कर उसको देखने-समझने का प्रयास हो रहा है। जबकि उपचार करते समय जब तक पूरे शरीर को एक इकाई मानकर प्रकट हुए रोग का इलाज नहीं किया जायेगा, तब तक सम्पूर्ण आरोग्य-प्राप्ति की कल्पना मिथ्या है।

जब मानव का निर्माता परिपूर्ण हो तो उसके निर्माण में संकट से बचने के लिए सुरक्षा-व्यवस्था अवश्य होनी चाहिये। आवश्यकता है अपने आपको देखने-समझने एवं स्वयं की क्षमताओं को पहचानने की। अधिकांश असजग लोगों का आचरण अरबपति बाप के भिखारी बेटे के समान होता है, जो स्वयं के पास सुख-सुविधा एवं संकट से बचने के सारे उपाय होने के बावजूद डॉक्टरों और दवाओं के माध्यम से अपना स्वास्थ्य ठीक रखना चाहता है। हमारा खयाल हमें स्वयं को ही रखना पड़ता है। पाँच मिनट नाक एवं मुँह बंद कर दिया जाये तो हमारी जीवन-लीला समाप्त हो सकती है। परन्तु इतनी अमूल्य श्वास द्वारा प्राण ऊर्जा हमें बिना मूल्य मिल रही है। क्या कभी हमने चिन्तन किया कि हम पूरा श्वास लेते हैं या नहीं? जितना दीर्घ श्वास लेंगे, उतनी ही हमें प्राणवायु ज्यादा मिलेगी। आयु बढ़ेगी और शरीर में नई कोशिकाओं का निर्माण होगा। छोटा सा बालक कैसे श्वास लेता है? जरा ध्यान से देखें एवं उसके अनुरूप श्वास लेने का प्रयास करें। पानी हमें ही पीना पड़ेगा परन्तु पानी कब पीयें? कितना पीयें? कैसे पीयें? क्या इसके बारे में हमारा सम्यक् चिन्तन चलता है?

भोजन में भावों का महत्त्व

हमारा भोजन हमें ही खाना और पचाना पड़ेगा, परन्तु भोजन कैसा हो? कैसे खाया जाए? कहाँ खाया जाए? कब खाया जाए? किसके द्वारा एवं कैसे बनाया जावे? इन बातों की तरफ प्रायः हमारा ध्यान नहीं जाता है। भोजन में आज पौष्टिकता पर तो बहुत जोर दिया जाता है, परन्तु भावों की तरफ तनिक भी ध्यान नहीं दिया जाता है। घर में स्नेही परिजनों द्वारा बनाये गये भोजन में होटलों में मिलने वाले बिना प्रेम के भोजन की अपेक्षा ज्यादा शक्ति होती है। इसी कारण रूखी-सूखी खाने वाला मजदूर, नौकरों द्वारा बनाये गये पौष्टिक आहार लेने वाले अमीरों से ज्यादा शक्तिशाली होता है। आज घर में खाना पसन्द नहीं, अथवा बनाते हुए हमें आलस्य आता है। फलतः बाहर खाने को सभ्यता का सूचक समझने की भूल हो रही है। होटलों में बने भोजन में पदार्थों की कितनी शुद्धता, पवित्रता, स्वच्छता का खयाल रखा जाता है, यह तो जहाँ भोजन बनता है, वहाँ जाकर देखने से स्पष्ट पता लग जायेगा। उस भोजन बनाने वाले के भाव कैसे होते हैं, हम नहीं जानते। इसी कारण आज घर से होटल एवं होटल से हॉस्पिटल रोगों के मंच बन रहे हैं।

यदि आपको कोई घर पर बुलाये, अच्छे से अच्छे पौष्टिक पदार्थों से आपको भोजन करावे, परन्तु यदि आपकी उपेक्षा करे, अथवा भोजन करने के पश्चात् आपसे मात्र इतना सा कहे- 'आज तक आपको जिन्दगी में कभी किसी ने ऐसा भोजन कराया?' तो आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी? एवं आपको ऐसा भोजन क्या ताकत देगा। अतः भोजन में भावों की तरंगों का अत्यधिक महत्त्व होता है जिसकी तरफ शायद ही कोई डॉक्टर प्रेरणा देता है।

उपचार हेतु चेतना को सर्वोच्च प्राथमिकता आवश्यक

जीवित मानव शरीर में चेतना की शक्ति होती है, जिससे हमारे मन, इन्द्रियों एवं शरीर की सारी गतिविधियाँ संचालित और प्रभावित होती हैं। चेतना के चले जाने के पश्चात्, शरीर के सभी अंग और अवयव रहते हुए भी उनकी सारी गतिविधियाँ शान्त एवं निष्क्रिय हो जाती हैं। प्राणवायु, ऊपर से डाला गया रक्त, बाजार में उपलब्ध जड़ी-बूटियाँ, ताकत की दवाइयाँ, केप्सूल, इंजेक्शन जिन्हें हम हमारी ऊर्जा का स्रोत मानने का दावा करते हैं, पुनः जीवन संचालन में क्यों प्रभावहीन हो जाते हैं? इसका तात्पर्य यह है कि भोजन,पानी, हवा एवं उपचार के अन्य साधन जीवन संचालन में सहयोगी मात्र होते हैं। बडे.से बड़ा डॉक्टर एवं अच्छी से अच्छी दवा कारगर नहीं होती जब तक शरीर सहयोग नहीं करता। अतः उपचार करते समय चेतना की शक्ति एवं पवित्रता को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी चाहिये तथा उपचार हेतु काम में लाये जाने वाले साधन एवं सामग्री यथासंभव अहिंसक और शुद्ध होनी चाहिये।

शरीर में रोगमुक्त होने की क्षमता

जब कभी अंग्रेजी चिकित्सा पद्धति की उपलब्धियों की चर्चा की जाती है तो शल्य-चिकित्सा के क्षेत्र में प्राप्त सफलताओं का विवेचन करते हुए प्राय: जनसाधारण की जबान नहीं थकती। अनेक साधक भी उसकी आवश्यकता की वकालात करने लग जाते हैं। शल्य चिकित्सा की वाहवाही करते कभी इस बात का चिन्तन नहीं करते कि क्या उसका कोई प्रभावशाली विकल्प भी हो सकता है? आज के इस वैज्ञानिक युग में जब रोग की प्रारंभिक अवस्था में सही निदान एवं प्रभावशाली उपचार के बड़े-बड़े दावे किये जाते हैं वहाँ चन्द जन्मजात रोगियों को छोड़कर तथा अकस्मात् दुर्घटनाओं के अतिरिक्त अन्य रोगियों का उपचार के बावजूद रोग शल्य-चिकित्सा की स्थिति में क्यों पहुँचता है? क्या हमारे निदान अधूरे, अपूर्ण अथवा गलत होते हैं, जो रोग की प्रारंभिक अवस्था में उसका उपचार ढूंढने में समर्थ नहीं होते। वास्तव में शल्य चिकित्सा अंग्रेजी चिकित्सा के विकास का सूचक नहीं, अपितु उसके दुष्प्रभावों एवं खोखलेपन का सूचक होती है।

जो शरीर हृदय, फेंफडे, गुर्दे जैसे अंगों का निर्माण स्वयं करता है, रक्त एवं कोशिकाओं जैसी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करता है, क्या उसमें इतनी क्षमता भी नहीं होती है कि स्वयं को स्वस्थ बना सके? रोग होने के कारणों को तथा उसके सहयोगी अप्रत्यक्ष रोगों को दूर करने से हम बिना शल्य चिकित्सा पुन: स्वास्थ्य प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए रोग होने की विपरीत प्रक्रिया को अपनाना होगा। यदि शरीर में कहीं गांठ होती है तो वह बिखर भी सकती है, उसको संकुचित भी किया जा सकता है, उसको घोला भी जा सकता है। इन प्रक्रियाओं में शिवाम्बु-चिकित्सा, पंचगव्य चिकित्सा, सूजोक, बियोल मेरेडियन ऊर्जा संतुलन चिकित्सा, चुम्बकीय चिकित्सा, सूर्य किरण चिकित्सा, ध्यान एवं एक्यूप्रेशर चिकित्सा आदि के सहयोग से जो प्रभावशाली परिणाम सामने आ रहे हैं, उनको झुठलाया नहीं जा सकता। स्वावलंबी चिकित्सा पद्धतियाँ शरीर में विजातीय तत्त्वों को निष्कासित कर सन्तुलन बनाने के सिद्धान्त पर कार्य करती हैं, अवरोध मिटाने में तथा शरीर की प्रतिकारात्मक शक्ति बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जहाँ प्रकाश है, वहाँ अंधेरा रह नहीं सकता। शक्तिशाली राष्ट्र पर कोई आक्रमण की बात सोच नहीं सकता। जो अपनी प्रतिकारात्मक क्षमता बढ़ा लेता है, वहाँ शल्य चिकित्सा की आवश्यकता नहीं रहती।

जो आधुनिक चिकित्सा के दुष्प्रभावों को समझता है, वही अपनी सुषुप्त मानसिक एवं आत्मिक चेतना को जागृत कर विकल्प का मार्ग चुनता है। स्वावलम्बी बनने की इच्छा रखने वाला परावलम्बन को छोड़ता है। पाप से घृणा करने वाला ही धर्म की तरफ आकृष्ट होता है। पाप को अच्छा मानने वाला धर्मी नहीं बन सकता। अहिंसा में विश्वास रखने वाला

हिंसात्मक तरीके नहीं अपना सकता और हिंसा को प्रोत्साहित करने वाली चिकित्सा पद्धतियों का अनुमोदन भी नहीं कर सकता। परन्तु आज रोगी में धैर्य और सहनशीलता की कमी, अज्ञान एवं सम्यक् चिंतन के अभाव के कारण स्वयं की क्षमताओं के प्रति प्रायः हमारा विश्वास नहीं हो रहा है, जिससे निदान की सत्यता को समझे बिना अपनी असजगता एवं डॉक्टर पर अन्धविश्वास के कारण कभी-कभी अपने आपको डॉक्टरों की प्रयोगशाला बनाते व्यक्ति तनिक भी संकोच नहीं करता। रोगी स्वयं कुछ नहीं करना चाहता, इसीलिए शल्य चिकित्सा के दुष्प्रभाव एवं उपचार के अन्य प्रभावशाली विकल्प जनसाधारण को समझ में नहीं आते हैं, परन्तु जो सनातन सत्य है उसको नकारा नहीं जा सकता। पारस को पत्थर कहने से वह पत्थर नहीं हो जाता और पत्थर को पारस कहने मात्र से वह पारस नहीं बन जाता। जो कोई चिकित्सक अथवा वैज्ञानिक पूर्वाग्रह छोड़ अनेकान्त दृष्टि से शारीरिक क्षमताओं का अध्ययन करेंगे उनको इस तथ्य को स्वीकार करना पड़ेगा कि 'शरीर में स्वयं रोग मुक्त होने की क्षमता होती है।'

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com, Website: www.chordiahealthzone.in

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

जिनवाणी के इस अंक में प्रकाशित 'स्वास्थ्य-विज्ञान' स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित उपर्युक्त आलेख पर कुछ प्रश्न दिए जा रहे हैं, आप इनका उत्तर **15 जनवरी 2016** तक डॉ. चंचलमल जी चोरडिया के उपर्युक्त पते पर अपने फोन नं., ई-मेल एवं डाक पते सहित सीधे प्रेषित करें। विलम्ब से प्राप्त उत्तरों को प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किया जाएगा। इस प्रतियोगिता में किसी भी वय का व्यक्ति भाग ले सकता है। सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के अन्तर्गत 1000/-, 750/- एवं 500/- की राशि प्रेषित की जाएगी।

प्रश्नः-

1. क्या आधुनिक चिकित्सा अच्छी चिकित्सा पद्धति के मापदण्डों पर खरी उतरती है?
2. क्या मन, भाव एवं कर्मों से स्वास्थ्य प्रभावित होता है एवं उसका उपचार हेतु आधुनिक चिकित्सा में क्या प्रावधान है?
3. क्या राहत को ही पूर्ण उपचार मानना बुद्धिमत्ता है?
4. क्या आधुनिक निदान शत-प्रतिशत सही एवं विश्वसनीय होता है?
5. क्या चिकित्सक आपकी शंकाओं का सम्यक् समाधान करते हैं?
6. क्या आप स्वावलम्बी चिकित्सा को प्राथमिकता देते हैं? यदि नहीं तो क्यों?
7. स्वावलम्बी चिकित्सा पद्धति के बारे में आपके व्यक्तिगत अनुभव क्या हैं?

बाल-स्तम्भ

दीपावली पर्व एवं उत्तराध्ययनसूत्र

श्रीमती कमला सुराणा

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 जनवरी, 2016 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। **उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें।** श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

श्रेयांस- दादाजी! दीपावली का क्या जैन धर्म में भी महत्त्व है?

दादा- दीपावली का जैन धर्म में आध्यात्मिक महत्त्व है। कार्तिक अमावस्या के दिन भगवान महावीर का निर्वाण एवं मोक्ष हुआ और गौतम स्वामी को केवलज्ञान हुआ।

श्रेयांस- दादाजी, एक ही दिन में ये दोनों महान् कार्य हुए तभी दीपावली की रात को मम्मी-पापा माला फेरते हैं। अन्य लोग तो अमावस्या के दिन को अच्छा नहीं मानते हैं। कहते हैं अमावस्या के दिन नया कार्य नहीं करना चाहिए, क्यों?

दादा- यह मन की भ्राँति है, सभी तिथियों में सफल-असफल काम होते रहते हैं। यह अमावस्या तो हमारे लिए स्वर्णिम है। उस दिन मूल आगम 'उत्तराध्ययन सूत्र' पूर्ण हुआ। भगवान महावीर केवलज्ञानी थे। उन्हें भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों कालों की जानकारी रहती थी, वे त्रिकालदर्शी थे। भगवान महावीर ने निर्वाण से कुछ समय पूर्व पावापुरी के अंतिम समवसरण में, इस आगम की देशना दी थी। यह समवसरण 36 घण्टे तक चला और 'उत्तराध्ययनसूत्र' में 36 अध्ययन हैं।

श्रेयांस- समवसरण और देशना का अर्थ क्या है?

दादा- समवसरण अर्थात् तीर्थंकरों की उपदेश सभा। जिसकी विशेषता है, भगवान उपदेश देते समय सबको अपने सम्मुख ही लगते हैं, सामने स्थित लगते हैं। देशना

यानी उपदेश, शिक्षा। उस दिन भगवान के 'बेले' की तपस्या थी। अतः यह सूत्र भगवान महावीर की अंतिम पवित्र वाणी के रूप में अत्यन्त श्रद्धापूर्वक पढ़ा और सुना जाता है। अन्तिम वाणी को लिपिबद्ध किया गया, जिसको हम मूल आगम 'उत्तराध्ययन सूत्र' कहते हैं। सम्पूर्ण श्वेताम्बर परम्परा में 'उत्तराध्ययन सूत्र' उसी रूप में मान्य है, जैसे बौद्ध परम्परा में 'धम्मपद' और वैदिक परम्परा में 'भगवद् गीता'। उत्तराध्ययन का शाब्दिक अर्थ है- **उत्तर**- प्रधान या श्रेष्ठ, **अध्ययन** का अर्थ है- शास्त्र, ग्रंथ, श्रेष्ठ शास्त्र अथवा अध्यात्मशास्त्र।

श्रेयांस- अध्यात्म शब्द समझ में नहीं आया।

दादा- अध्यात्म एवं भौतिक ये दो शब्द हैं। भौतिक का अर्थ है- संसार सम्बन्धी। अध्यात्म का अर्थ है- आत्मा सम्बन्धी। उत्तराध्ययन जीवन्त शास्त्र है। इसके सूक्त, वचन एवं गाथाएँ सारपूर्ण एवं जीवनाचार से परिपूर्ण हैं। इसका स्वाध्याय करते समय साधक को नित्य नई उपलब्धि तथा अनुभूति होती है। गागर में सागर की तरह इसकी गाथाएँ अध्यात्म रस भर देती हैं। इसमें संवाद, कहानियाँ, कथाएँ आदि शैलियाँ अपनाई गई हैं। प्रति दीपावली तीन दिन इसका सवेरे-सवेरे वाचन होता है। भगवान महावीर की अंतिम वाणी की पुनरावृत्ति हो जाती है।

सुनो! श्रेयांस, समय तीव्र गति से दौड़ रहा है। समय में परिवर्तन आना आवश्यक है, स्वाभाविक भी है, कुछ हवा ऐसी चल रही है, जिसको सुसंस्कारों से ही रोका जा सकता है। हिंसात्मक प्रवृत्तियों एवं व्यभिचार ने हद तोड़ डाली है।

उपर्युक्त शास्त्र में 22 वां अध्ययन रथनेमीय है, उसकी आंशिक चर्चा करेंगे। यह बड़ी रोचक घटना है। शौर्यपुरी एक नगरी थी। वहाँ के राजा समुद्रविजय थे। उनकी भार्या का नाम शिवा था। उनके अरिष्टनेमि नामक यशस्वी पुत्र रत्न हुआ जो शुभ लक्षणों से सुशोभित था। अरिष्टनेमि द्वारिका के राजा श्री कृष्ण के चचेरे भाई थे। अरिष्ट कुमार को संसार से विरक्ति हो गई। वे मन से पूर्ण वैरागी थे। उनके माता-पिता और श्रीकृष्ण उन्हें विवाह बंधन में बांधना चाहते थे। उनके योग्य कन्या ढूँढ ली गई, जो सुशील और सर्वलक्षणों से सम्पन्न थी। कन्या का नाम राजीमती था और पिता का नाम राजा उग्रसेन था। अरिष्टनेमि के विवाह की तैयारियाँ होने लगीं। शुभ मुहूर्त्त में नेमिकुमार को वर के रूप में सुसज्जित किया गया। उन्हें श्री कृष्ण के गंध हस्ती पर आरुढ़ किया गया। राजसी ठाटबाट से बारात रवाना हुई। बारात जब ससुराल पहुँची तो उन्हें पशु-पक्षियों के क्रंदन के स्वर सुनाई दिए। भय से संत्रस्त बाड़ों और पिंजरों में बन्द पशु-पक्षीगण अत्यन्त

दुःखी तथा मांस के लिए खाए जाने वाले एवं मरणासन्न दशा को प्राप्त प्राणियों को देखा। महाप्राज्ञ अरिष्टनेमि ने सारथी (महावत) से पूछा- इतने सारे पशु-पक्षियों को एकत्रित क्यों किया गया है?

सारथी ने कहा- आपके विवाह के उपलक्ष्य में इन्हें मार कर इनके मांस का भात दिया जाएगा। भगवान अरिष्टनेमि थर्राने लग गए, कम्पकम्पाने लगे। उनके रोम-रोम खड़े हो गए। राजकुमार अरिष्टनेमि को निर्दोष जानवरों पर दया आई, उन्होंने सोचा-चिन्तन किया, इतने मूक प्राणियों का वध मेरे लिए होगा, यह हिंसक दुष्कृत्य कदापि उचित नहीं है। उसी समय उन्होंने सारथी को आदेश दिया कि इन सब जीवों को मुक्त करो और मेरा रथ यहीं से मोड़ दो। मुझे ऐसा विवाह नहीं करना है यह तो संसार परिभ्रमण का हेतु है। जीव हिंसा दुष्कृत्य मेरे से नहीं होगा। रथ को मुड़ते और सभी जानवरों को मुक्त होते देखकर यादवों और राजघराने में खलबली मच गई। मुक्त जीव आनन्द का अनुभव करते हुए भगवान् नेमि को मूक आशीर्वाद देते हुए अपने-अपने स्थान पर चले गए। राजीमति सुन्दर वस्त्रों और आभूषणों से सुसज्जित होकर, होने वाले पति की राह देख रही थी।

भगवान् नेमि ने उचित अवसर देखकर उसी समय उपस्थित सभी लोगों को मद्य-मांस छोड़ने का उपदेश दिया और जीवों पर दया-अनुकम्पा की सीख दी। फलस्वरूप यादव वंश में मद्य-मांस के परित्याग का व्यापक प्रचार हो गया।

अरिष्टनेमि को विवाह से विमुख देखकर उनके माता-पिता बहुत दुःखी हुए तब वे उन्हें समझाने लगे कि यह संसार नश्वर है, दुःखों का सागर है। उन्होंने माता-पिता से दीक्षा की अनुमति ले ली। राजीमति ने यह हाल सुना तो उन्होंने मन ही मन सोचा, चिन्तन किया कि धिक्कार है मेरे जीवन को, कि मैं संसार की असारता में लिप्त होना चाहती थी। जब अरिष्टनेमि दीक्षा ले रहे हैं तो मैं भी उसी पथ पर चलूँगी। दोनों दीक्षा लेकर मोक्षगामी बन गए। नेमिनाथ जैन चौबीसी में बाईसवें तीर्थंकर बने और राजीमति सोलह सतियों में पाँचवी सती बनी।

पाठकों के लिए संदेश- जब भगवान अरिष्टनेमि ने संसार त्याग कर अनेक जीवों की रक्षा की तो हम भी आगामी दीपावली पर बारुद-पटाखे का त्यागकर षट्काय जीवों की रक्षा कर सकते हैं। *-ई-123, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)*

प्रश्नः-

1. अरिष्टनेमि कौन थे? उनके माता-पिता कौन थे? वे कहाँ के राजा थे?
2. पशु-पक्षियों को मुक्त करने का प्रयत्न क्यों किया गया?

3. अरिष्टनेमि ने मद्य-मांस छोड़ने का उपदेश किन्हें और क्यों दिया?
4. विवाह के तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए।
5. जब अरिष्टनेमि ने रथ मोड़ लिया, राजीमति की मनोदशा कैसी हो गई? वर्णन करें।
6. जीव दया पर दस पंक्तियाँ लिखिए।

सूचना

प्रिय बच्चों! आप सभी बाल-स्तम्भ में सहभागिता निभाकर 'जिनवाणी' के सक्रिय पाठक बन रहे हैं। आपके द्वारा उत्तर भी बहुत अच्छे प्रेषित किये जा रहे हैं। कुछ बच्चों द्वारा उत्तर पोस्टकार्ड पर दिए जाते हैं, वे पठनीय नहीं होते हैं। अतः पोस्टकार्ड पर दिए गए उत्तर प्रतियोगिता में शामिल नहीं किए जायेंगे।**-सम्पादक**

बाल-स्तम्भ [अक्टूबर-2015] का परिणाम

जिनवाणी के अक्टूबर-2015 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'जैसी करनी वैसी भरनी' के प्रश्नों के उत्तर 35 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	अरिष्ट जैन-अजमेर (राज.)	28
द्वितीय पुरस्कार-300/-	आरोही श्रेणिक जैन-भुसावल(महा.)	27.5
तृतीय पुरस्कार- 200/-	अरिन चोरडिया-जयपुर (राज.)	27
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	मुकुल जैन-जयपुर(राज.)	26.5
	अमीषा कोठारी-अजमेर (राज.)	26
	दीपेश जैन-जयपुर(राज.)	26
	मानसी जैन-भरतपुर (राज.)	26
	कन्नू जैन-जयपुर (राज.)	26

जिनवाणी की सदस्यता अर्द्धमूल्य में

जिनवाणी सदस्यता प्राप्त करने के इच्छुक सभी महानुभावों को सूचित किया जाता है कि श्री पारसमलजी चौरड़िया, (वी. पारस भय्या), उज्जैन के सहयोग से अर्द्धमूल्य के अन्तर्गत 50 सदस्य बनाये जा रहे हैं। जो भी महानुभाव सदस्य बनना चाहे वे रूपये 500/- का चैक, जिनवाणी के नाम से भिजवाएं साथ ही अपना पूरा पता मय पिनकोड एवं फोन नं. सहित भिजवाएं, जिससे सदस्यता प्रदान की जा सके। 50 सदस्य बनने के पश्चात् यह स्कीम पूर्ण हो जाएगी। उसके पश्चात् अर्द्धमूल्य राशि में सदस्य नहीं बनाये जायेंगे। *-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)*

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

नन्दीसूत्रः स्वाध्याय और सर्जना- साध्वी डॉ. स्नेहप्रभा 'साधना', ***प्रकाशक***- उल्लेख नहीं, ***पृष्ठ***-80, ***मूल्य***- 30 रुपये मात्र

आत्मा क्या है? और उसका स्वरूप क्या है? उत्तर के रूप में कहा जाता है, आत्मा चेतनस्वरूप और अनन्त गुणों की खान है। आत्मा के इन गुणों का बोध ज्ञान के द्वारा होता है। अतः नन्दीसूत्र को लक्ष्य में रखकर मतिज्ञान, श्रुतज्ञान आदि पाँचों ज्ञानों का सुतरां विवेचन प्रस्तुत ग्रन्थ में हुआ है। नन्दीसूत्र में प्रयुक्त विशिष्ट शब्दावली पाठकों को सुगम्य हो, एतदर्थ लेखिका ने 108 शब्दों को संस्कृत व्युत्पत्तियों के माध्यम से परिभाषित किया है। यथा- 1. श्रुतः- "आत्मैव वा श्रुतोपयोगपरिणतान्यत्वात् शृणोतीति श्रुतम्" अर्थात् श्रुतोपयोग में परिणत आत्मा अनन्य होकर जो सुनती है, वह श्रुत है। 2- यक्षः- "यान्ति क्षयमिति यक्षाः" अर्थात् जो क्षय/निवास स्थान को शीघ्र बदल लेते हैं। 3- ईर्या- "ईरणं गमनमीर्या" अर्थात् सावधानी से चलता ईर्या है। इसके अतिरिक्त आचार्य परम्परा (स्थिरावली), एकादश गणधर, परिषद् श्रोता सम्बन्धी विवेचन और विशेष टिप्पणियाँ भी पुस्तक में योजित हैं। अन्त में अंग ग्रन्थों की तालिका भी दी गई है। स्वाध्यायी के लिए यह पुस्तक संग्राह्य है।

नियमसार (खण्ड 2)- ***सम्पादक***- डॉ. कमलचन्द सोगाणी, अनुवादक- श्रीमती शकुन्तला जैन, ***प्रकाशक***- अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जैन विद्या संस्थान, दिगम्बर जैन, अतिशय क्षेत्र, श्रीमहावीर जी (राजस्थान) 322220, फोन नं.- 07469-224323 ***पृष्ठ***-189+6, ***मूल्य***- 600 रूपये, सन् 2015

शौरसेनी प्राकृत में निबद्ध नियमसार दिगम्बराचार्य, कुन्दकुन्द रचित आगमसदृश ग्रन्थ है। नियमसार की कुल 187 गाथाओं में से प्रथम खण्ड में 1 से 76 गाथाएँ तथा द्वितीय खण्ड में 77 से 187 की गाथाएँ विवेचित हैं। प्रथम खण्ड में षड्द्रव्यों का विवेचन किया गया है तथा प्रस्तुत द्वितीय खण्ड में चारित्रिक दोषों के शमन के लिए प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान, आलोचना, प्रायश्चित्त का वर्णन करते हुए सिद्धावस्था की प्राप्ति के लिए आवश्यक, समाधि, आत्म-स्वाधीनता, ध्यान, केवलज्ञान का स्वरूप, केवली का व्यवहार तथा सिद्ध के स्वरूप का निरूपण किया गया है। इसमें हिन्दी अनुवाद के साथ

गाथाओं के शब्दों का अर्थ व अन्वय दिया गया है। अन्त में संज्ञा कोश, क्रिया कोश, कृदन्त कोश, विशेषण कोश, सर्वनाम कोश और अव्यय कोश संयोजित है। प्राकृत भाषा के जिज्ञासुओं, शोधार्थियों और स्वाध्यायियों के लिए यह ग्रन्थ उपयोगी है।

सविवेक विश्लेषणः स्वामी सत्यभक्त, संकलयिता- पं. शान्तप्रकाश सत्यदास ***प्रकाशक***- अनन्तानन्द प्रकाशन स्टार स्टूडियो, इन्दिरा चौक, नागदा (म.प्र.) 456335 ***पृष्ठ-119, मूल्य***- 120 रू, ***सन्***- 2015

लेखक ने अपने चिन्तन को एक, दो, तीन आदि संख्याओं में क्रम से मणियों की तरह संयोजित किया है। यथा- (1) दो दायित्व- नियोजित (सौंपा हुआ कार्य) और सहज (कर्त्तव्य समझकर स्वेच्छा से किया गया)। (2) तीन संतोष- सुख संतोष (सफलता पर होने वाला), दुःखसंतोष (अपने से अधिक दुःखीजनों की स्थिति पर विचारकर), भ्रमसंतोष (अवास्तविक को वास्तविक मान लेने पर) (3) चार चोर- धन चोर, यश चोर, उपकार चोर, उपयोग चोर। (4) पाँच सम्बन्ध- तादात्म्य सम्बन्ध, संयोग सम्बन्ध, औपमेय सम्बन्ध, विषय सम्बन्ध और स्थापना सम्बन्ध। (5) चार पश्चात्ताप - दिव्य पश्चात्ताप, मानवीय पश्चात्ताप, पाशविक पश्चात्ताप और शैतानी पश्चात्ताप।
इनके अतिरिक्त दाम्पत्य जीवन को सुख-शान्तिमय बनाने के अट्ठारह सूत्र आदि के द्वारा यह पुस्तक उपादेय है।

कविता वितान- शान्तप्रकाश सत्यदास, ***प्रकाशक***- अनन्तानन्द प्रकाशन, स्टार स्टूडियो, इन्दिरा चौक, नागदा (म.प्र.) 456335 फोन नं.- 097135-72538, ***पृष्ठ***-87, ***मूल्य***- 120/-, सन् 2012

मुक्तक वे होते हैं, जो मन्त्र मुग्ध कर देते हैं। समाज के परिदृश्य को मुक्तकों में नियोजित कर लेखक ने पाठक वर्ग को वास्तविकता से रूबरू कराया है। कतिपय शीर्षक इस प्रकार हैं- सशक्त गाँधी, दगा दिया, उनकी भूल, रिश्वत, अखण्ड मानवराष्ट्र, क्यों रहूँ मौन ?, है न अचम्भा आदि।

संसार की बदली- शान्तिचन्द्र मेहता, ***प्रकाशक***- सुमनचंद्र मेहता, फोन नं. 09351380441, ***पृष्ठ***- 122+10, ***मूल्य***- 40/-, सन् 2015

लेखक ने 61 लघु लेखों के माध्यम से समाज को जागरूक बनाने हेतु, कई तरह के संदेश दिए हैं:- पहले स्वयं को बदलना न भूलो, प्रकृति के साथ समन्वय करो, संघर्ष नहीं, सारी मानव जाति को एक मानकर चलो, जीवन पद्धति को अहिंसा आधारित बनाओ, सत्य व न्याय की पताका ऊपर उठाओ आदि।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के 380 स्वाध्यायियों द्वारा 151 क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधना सम्पन्न कराने का शेष विवरण

(जिनवाणी, नवम्बर 2015 से क्रमशः)

मध्यप्रदेश क्षेत्र

89	ग्वालियर	-	डॉ चंचलमल जी चौरडिया-जोधपुर
			श्री सुनील जी चौपडा-जोधपुर
90	उन्हैल	-	श्री विरेन्द्र जी झामड-जयपुर
			श्री त्रिलोक जी डागा-जयपुर
			श्री पुखराज जी कुचेरिया-जयपुर
91	धमतरी	-	श्री शांतिलाल जी गांधी-सिंगोली
			श्री संतोष जी गांधी-सिंगोली
			श्रीमती सौरभबाई जी गांधी-सिंगोली
92	दुर्ग	-	श्री मोहनलाल जी पीपाडा-इंदौर
		-	श्री अरविंद जी जैन-इंदौर
			श्रीमती पदमा जी जैन-इंदौर
93	कालुखेडा	-	श्री पवन जी जैन-अलीगढ
			सुश्री पूजा जी जैन-अलीगढ
			सुश्री वर्तिका जी जैन-सवाईमाधोपुर
94	कुकडेश्वर	-	श्री पदमचंद जी रांका-जयपुर
			श्री सुधीर जी जैन-जयपुर
95	आकोदिया मण्डी	-	श्री कविश जी जैन-जयपुर
			श्री रितिक जी जैन-जयपुर
			श्री सिद्धार्थ जी जैन-जयपुर
96	सिवनी माल्वा	-	श्री अभिषेक जी नाहर-इंदौर
			श्री राहुल जी तातेड-इंदौर
			श्री वीतराग जी नाहर-इंदौर
97	गरोठ	-	श्री आशीष जी जैन-जयपुर
			श्री अनिकेत जी जैन-जयपुर
			श्री रौनक जी जैन-जयपुर
98	सिद्धिकगंज मगरदा	-	श्री अखिल जी जैन-जयपुर
			श्री प्रदीप जी जैन-जयपुर
			श्री सुधांशु जी जैन-जयपुर

99	रत्नाखेरी	-	श्री प्रकाश जी कोठारी-इंदौर
			श्रीमती उर्मिला जी कोठारी-इंदौर
100	बागली	-	श्री विपुल जी जैन-जयपुर
			श्री पवन जी जैन-जयपुर
			श्री नितिन जी जैन-जयपुर

मेवाड़ क्षेत्र

101	मावली जंक्शन	-	श्री शिखरचंद जी छाजेड-करही
			श्री विमल जी तातेड़-इंदौर
102	आदित्यपुरम	-	श्री लल्लुलाल जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्री पदमचंद जी जैन-बजरिया
			श्री कनिष्क जी जैन-सवाईमाधोपुर
103	दरीबा माईन्स	-	श्री धर्मेन्द्र जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्री प्रेमबाबू जी जैन-सवाईमाधोपुर
104	अरनोदा	-	श्रीमती चंचलता जी सुराणा-बेगूं
			श्री कमलेश जी जैन-देई
105	चान्दरास	-	श्री अभिषेक जी जैन-जयपुर
			श्री अरविन्द जी जैन-जयपुर
106	बाड़ी	-	श्री आशीष जी जैन-जयपुर
			श्री अमित जी जैन-जयपुर
			श्री यशु जी जैन-जयपुर
107	छोटा भटवाड़ा	-	श्री अनुज जी जैन-जयपुर
			श्री सौरभ जी जैन- जयपुर
			श्री केतन जी जैन-जयपुर
108	सुरपुर	-	श्री अक्षत जी जैन-जयपुर
			श्री अभिषेक जी जैन-जयपुर
			श्री आदेश जी भण्डारी-जयपुर
109	आजाद नगर, भीलवाडा	-	श्री पुखराज जी जैन-भीलवाड़ा
			श्री दिलीप जी जैन-भीलवाड़ा
			श्रीमती तारा देवी जी भण्डारी-भीलवाड़ा

मारवाड़ क्षेत्र

110	बाड़मेर	-	श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना-जोधपुर
			श्री हस्तीमल जी डोसी-मेड़ता सिटी

			श्री हंसराज जी चौपड़ा-गोटन
111	खारिया मीठापुर	-	श्री अरूण जी मेहता-जोधपुर
			श्रीमती सुनीता जी मेहता-जोधपुर
			सुश्री राखी जी पारख-पीपाड़ सिटी
112	भोपालगढ	-	श्रीमती अकल कंवर जी मोदी-जोधपुर
			श्रीमती सायरबाई जी मेहता-जोधपुर
			सुश्री राजल जी शर्मा-जोधपुर
113	आगोलाई	-	श्री दिलरूपचंद जी भण्डारी-जोधपुर
			श्रीमती चंचलदेवी जी भण्डारी-जोधपुर
			श्री दीपक जी जैन-जयपुर
114	आसोप	-	श्री शांतिलाल जी सिंघवी-आसोप
			श्री कनकराज जी सुराणा-आसोप
115	प्रतापनगर, जोधपुर	-	सुश्री पूजा जी गुलेच्छा-जोधपुर(प्रतिक्रमण सेवा)

उत्तरप्रदेश क्षेत्र

116	लखनऊ	-	श्री जम्बुकुमार जी जैन-जयपुर
			श्री अशोक कुमार जी जैन-जयपुर
117	वाराणसी	-	श्री गजेन्द्र जी चौपड़ा-जोधपुर
			श्री निर्मल जी मुथा-पीपाड़ सिटी
118	मवाना	-	श्री राजेन्द्र जी चौरडिया-इन्दौर
			श्री शुभम जी जैन-जयपुर
			श्री शुभम जी जैन-जयपुर
119	बलरामपुर	-	श्री कुणाल जी जैन-जयपुर
			श्री मुकुल जी जैन-जयपुर
			श्री रितेश जी जैन-जयपुर

गुजरात क्षेत्र

120	हालोल	-	श्रीमती इन्द्रा जी पारख-जयपुर
			श्रीमती राजकुमारी जी मेहता-जयपुर
			श्री अरिहन्त जी जैन-जयपुर
121	बुहारी	-	श्री जितेश जी जैन-जयपुर
			श्री शुभम जी जैन-जयपुर
			श्री रविन्द्रसिंह जी जैन-जयपुर

जयपुर क्षेत्र

122	प्रतापनगर, जयपुर	-	श्री धर्मचंद जी जैन-जोधपुर

			श्री प्रकाशचंद जी पारख-धनारीकलां
			श्री सुशील कुमार जी जैन-जयपुर
			श्रीमती मधु जी चौरडिया-जयपुर
123	चाकसू	-	श्रीमती प्रेमकंवर जी भण्डारी-जोधपुर
			श्रीमती विमला जी मुल्तानी-जोधपुर

पश्चिम बंगाल क्षेत्र

124	कोलकाता	-	डॉ. प्रिया जी जैन-चेन्नई
			डॉ. वर्धमान जी लोढ़ा-मालेगांव
			श्री महावीर जी कोठारी-नादगांव

पोरवाल क्षेत्र

125	अलीगढ़	-	श्री कन्हैयालाल जी जैन-भीलवाड़ा
			श्री कांतिलाल जी पारख-जोधपुर
			श्री अम्बालाल जी चंडालिया-प्रतापगढ़
			श्री रतनलाल जी बम्ब-भीलवाड़ा
126	दूणी	-	श्री हरकचंद जी जैन-बजरिया
			श्री श्यामसुंदर जी जैन-बजरिया
127	उनियारा	-	श्री अशोक जी पितलिया-सिंगोली
			सुश्री अंकिता जी पितलिया-सिंगोली
			सुश्री रूचिका जी पितलिया-सिंगोली
128	कुश्तला	-	श्री धर्मचंद जी जैन-खेरली
			श्री मगनचंद जी जैन-फाजिलाबाद
129	देई	-	श्री राजमल जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्री रतनलाल जी जैन-कुश्तला
130	श्योपुर कलां	-	श्री अरिहन्त जी जैन-जयपुर
			श्री दीपेश जी जैन-जयपुर
			श्री अंशुल जी जैन-जयपुर
131	पचाला	-	श्रीमती प्रसन्न जी गांग-मुम्बई
			श्री संचय जी जैन-जयपुर
			सुश्री इशिका जी जैन-पचाला
132	बाबई	-	श्रीमती मोहनीदेवी जी जैन-आलनपुर
133	देवली	-	श्रीमती पुष्पा जी जैन-जयपुर
			श्रीमती सुशीला जी हीरावत-जयपुर

134	जरखोदा	-	श्री उम्मेदमल जी जैन-जरखोदा
			श्री शिवकुमार जी जैन-जरखोदा

पल्लीवाल क्षेत्र

135	खेरली	-	श्री इंद्रचंद जी कोठारी-भीलवाडा
			श्री महावीर जी रांका-पहुंना
136	नदबई	-	श्रीमती लाडबाई जी हीरावत-जयपुर
			श्रीमती संतोष जी पटवा-जयपुर
			श्री प्रशांत जी जैन- जयपुर
137	पहरसर	-	श्री मुन्नालाल जी भण्डारी-जोधपुर
			श्री जगदीशमल जी कुम्भट-जोधपुर
			श्री जेठमल जी मुणोत-जोधपुर
138	गोपालगढ़	-	श्रीमती लाडबाई जी खारेड-जयपुर
			श्रीमती युवराज जी मेहता-जयपुर
			श्री विवेक जी सुराणा-जयपुर
139	गंगापुर सिटी	-	श्रीमती शकुंतला जी तातेड़-बैतुल
			श्रीमती कमला जी जैन-बैतुल
			श्रीमती सरला जी जैन-बैतुल
140	बौंल	-	डॉ. विमलचंद जी जैन-हिण्डौन सिटी
			श्री प्रसुन्न जी जैन-खौह
141	हरसाना	-	श्री संजय जी देशलहरा-इन्दौर
			श्री अखिलेश जी नाहर-इन्दौर
142	मण्डावर	-	श्री रामप्रसाद जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्री नन्दलाल जी जैन-उनियारा
143	बीचगांवा	-	श्री महावीरप्रसाद जी जैन-गंगापुर सिटी
			श्री पारस जी जैन-गोपालगढ़, भरतपुर
144	भरतपुर	-	श्री गौरव जी जैन-जयपुर
			श्री वर्धमान जी जैन-जयपुर
			श्री नीतीश जी जैन-जयपुर
145	मलपुरा	-	श्री यश जी जैन-जयपुर
			श्री अक्षय जी जैन-जयपुर
			श्री आर्यन जी जैन-जयपुर
146	बरगमा	-	श्री महावीर प्रसाद जी जैन-जरखोदा
147	कठूमर	-	श्री ज्ञानचंद जी जैन-नदबई

			श्रीमती सुशीला जी जैन-नदबई
148	सहाडी	-	श्री महेन्द्र कुमार जी जैन-सहाडी
149	खौह	-	श्री विमलचंद जी जैन-खौह
			श्रीमती रेखा जी जैन-खौह
150	रसीदपुर	-	श्री सतीश जी जैन-रसीदपुर
			श्री मोहित जी जैन-रसीदपुर
151	नसिया गंगापुर	-	श्री भागचंद जी जैन-गंगापुर सिटी

-राजेश भण्डारी, सचिव

साधना के नौ अंग

आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

जैन साधना पद्धति में साधना की नौ विधियां बतलाई गई हैं। प्रत्येक विधि में सम्यक् गति करने से ही साधना में समग्रता एवं परिपूर्णता आ सकती है।

1. **कायोत्सर्ग** – देह से ममत्व हटाकर, निश्चल स्थिर बनने का अभ्यास।
2. **प्रायश्चित्त**– मन के गुप्त या व्यक्त विचारों, आवेगों के परिवर्तन का आत्म-निरीक्षण द्वारा पहचान, उसके पश्चात् उनका प्रायश्चित्त।
3. **भावना** – मैत्री, प्रमोद आदि पवित्र भावनाओं से मन को पवित्र एवं प्रसन्न रखने का अभ्यास।
4. **ध्यान** – किसी पवित्र ध्येय पर चित्त को एकाग्र करने का अभ्यास, इससे आत्मबल स्फूर्त होता है।
5. **स्वाध्याय** – सद्ग्रन्थों एवं सद्विचारों के चिन्तन-मनन में तन्मयता का अभ्यास। इससे मन में आनंद की मधुर अनुभूतियां जगती हैं।
6. **प्रतिसंलीनता** – इन्द्रियों को बाहर से हटाकर अन्तर की ओर उन्मुख बनाने का अभ्यास।
7. **योगासन** –दैहिक स्थिरता एवं स्वस्थता को बनाए रखने के लिए आसन आदि का अभ्यास।
8. **सुखमय सामुदायिक जीवन** – विनय, सेवा, प्रीति आदि के अभ्यास से सर्वत्र सुख एवं स्नेह की अनुभूति करना।
9. **आहार संयम** – भोजन आदि खाद्य पेय का नियमित एवं मर्यादा के अनुसार सन्तुलित सेवन।

नववर्ष-गीत

सूरज नया उगायें

प्रवर्तक श्री गणेशमुनि शास्त्री

नये वर्ष के अभिनन्दन में, सूरज नया उगायें।
नई भावना भर अंतर में, गीत खुशी के गायें।।

गये वर्ष क्या खोया-पाया, सही हिसाब लगायें।
भूल हुई जो पहले हमसे, फिर से नहीं दोहरायें।
सत्य अहिंसा दया धर्म को, कितना हमने पाला,
किस घर दीप जलाये हमने, किस घर दीप बुझाये।

अब भी सोते रात समझकर, आओ उन्हें जगायें।
नये वर्ष के अभिनन्दन में, सूरज नया उगायें।।

बीत गया सो बीत गया, अब नये काम की पहल करें।
खुशियों की सौगात हमारे, घर-आंगन में महक भरे।
वीतराग की वाणी गूंजे, जग जीवन सब अभय बने,
भय का कोहरा भूमंडल पर, कभी न छाये कदम धरे।

जीयो-जीने दो का नारा, जन-जन तक पहुँचायें।
नये वर्ष के अभिनन्दन में, सूरज नया उगायें।।

आज धर्म के पथ पर काँटे, कहो किसने बिखेरे।
संध्या कैसे द्वार खड़ी है, खोये कहाँ सवेरे।
अश्रु के घट कई चन्दनाएँ, ढुलकाती जाती है,
उत्तर देगा कौन आज, ये यक्ष-प्रश्न है मेरे।

'गणेश मुनि' हम मानवता का, नव परचम फहरायें।
नये वर्ष के अभिनन्दन में, सूरज नया उगायें।।

समाचार विविधा

हिण्डौन का ऐतिहासिक चातुर्मास सम्पन्न

वन्दना के रूप में भक्ति की पराकाष्ठा

आचार्यप्रवर के 53वें दीक्षा-दिवस पर तप-त्याग

तीन मुमुक्षु आत्माओं की भागवती दीक्षा 11 फरवरी 2016 को

आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, व्यसनमुक्ति, शीलव्रत एवं रात्रिभोजन-त्याग के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी सरसव्याख्यानी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा 6 के पावन रज से हिण्डौन की धरा धन्य हो गई। कहा जाता है जहाँ संत-भगवन्तों के पावन चरण पड़ते हैं और चार माह तक जिस धरा पर महापुरुषों का विराजना हो जाता है तो उस धरा की पुण्यशालिता, सौभाग्यशालिता का वर्णन शब्दातीत हो जाता है। यहाँ से अनेक चारित्रात्माएँ पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से संयम अंगीकार कर शासन की प्रभावना में योगदान कर रही हैं। स्थानकवासी सम्प्रदाय के आप पहले आचार्य हैं, जिनका हिण्डौन की धरा पर पहली बार चातुर्मास हो रहा है। समूचा पल्लीवाल क्षेत्र एवं हिण्डौन संघ, अष्ट सम्पदा से सम्पन्न, समाचारी पालन में श्रेष्ठ एवं समस्त आचार्यों में ज्येष्ठ आचार्य को पाकर धन्य-धन्य हो गया है। वर्षों की मुराद को कृपालु, दयालु भगवन् ने पूरा कर जो उपकार किया है, उसके लिए यह संघ सदैव उपकृत रहेगा।

चातुर्मास के उत्तरार्द्ध में भी श्रद्धालुओं के आने का क्रम अनवरत बना हुआ है। 30 अक्टूबर को सरवाड़ संघ सदस्य, 31 को भरतपुर संघ से अनेक भाई-बहिन चरण सन्निधि में पधारे। 1 नवम्बर से 15 से 45 वर्ष के मध्य आयु वर्ग वालों का 10 दिवसीय प्रातः कालीन शिविर 7.30 से 8.30 बजे के लिए प्रारम्भ हुआ। शिविरार्थियों को वीर भ्राता श्री कैलाशचंद जी जैन, मानसरोवर-जयपुर ने विशेष रूप से सामायिक प्रतिक्रमण का शुद्धता से शिक्षणाभ्यास करवाया। इस शिविर में 27 युवाओं ने लाभ लिया। अलीगढ़-रामपुरा से आए युवा भाई-बहिनों ने दर्शन के साथ 1008 बार तिक्खुत्तो से वन्दन का लाभ लिया। 4 नवम्बर को अमरावती संघ सदस्य तथा श्री अनिल जी दुधेड़िया अजमेर से उनकी मातुश्री सुश्राविका श्रीमती अनोपकंवर जी के स्वर्गवास पर परिवारजनों के साथ मांगलिक श्रवण करने पूज्य गुरुदेव की सेवा में पधारे। दशाश्रुतस्कंध की वाचनी पूर्ण हुई। 6 नवम्बर से

वृहत्कल्प सूत्र की वाचनी प्रारम्भ हुई। 7 नवम्बर को श्रीमती सीमा जी जैन धर्मपत्नी श्री अजय जी जैन ने पूज्य आचार्य भगवंत के पावन श्रीमुख से 31 दिवसीय तपस्या के प्रत्याख्यान लिये। सायं 4.30 बजे सोरापुर से समाचार मिले कि महासती श्री वैराग्यश्री जी म.सा. का स्वास्थ्य चिंताजनक है। पूज्य आचार्यप्रवर ने इस पर खयाल दिया कि स्वरोदय के अनुसार मोक्षाभिलाषी वाला स्वर लगता है, रात्रि भी निकाल सकें, संभव नहीं लगता। अतः किसी भी प्रकार का दोष नहीं लगायें। सायं 6.35 बजे समाचार मिले कि सतीजी ने नश्वर देह छोड़ दी है। इसके पश्चात् चार-चार लोगस्स का स्मरण किया गया 8 नवम्बर को प्रवचन बन्द रखा गया। झोंटवाडा व नित्यानन्दनगर संघ, जयपुर पूज्य गुरुभगवन्त की सन्निधि में पधारे। डॉ अरिहंत जी, डॉ रितेश जी व अमित जी जैन की संघ को दर्शनार्थ लाने में मुख्य भूमिका रही। 9 नवम्बर को दिवंगत महासती श्री वैराग्यश्रीजी म.सा. की गुणानुवाद सभा रखी गई- संघ मंत्री श्री प्रवीण जी जैन ने भावों की अभिव्यक्ति की। श्रद्धेय श्री मनीष मुनि जी म.सा., महान् अध्वसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने उनके संयमी जीवन पर प्रकाश डाला। श्रावकों में- श्री महेश जी जैन, श्री शांतिलाल जी डूंगरवाल- बैंगलोर, श्री लड्डूलाल जी जैन- अलीगढ़ रामपुरा, श्री सौभाग्यमल जी जैन-कुश्तला, श्री यलप्पा जी-गजेन्द्रगढ़ ने उनके निर्मल संयमी जीवन पर भाव प्रकट किये। परम श्रद्धेय पूज्य आचार्य भगवंत ने- 'आया है...सो जायेगा...।' गीतिका से प्रारम्भ करते हुए मार्मिक शब्दों में कहा कि मृत्यु एक ऐसी चीज़ है, जिसे आज तक कोई जान नहीं पाया। मृत्युलोक में रहने वाला जीव जीना चाहता है। यह आश्चर्य जैसा लगता है। चक्रवर्ती जिसकी 25 हजार देवता सेवा करते हैं, मृत्यु तो उसकी भी होती है। देवता अमर हैं, पर वे भी मनुष्य जन्म पाने की अभिलाषा रखते हैं। सती जी ने 13 महीने के लगभग संयम पाला। परिवार वालों ने भी ममता छोड़ दीक्षा दिलाई। आप भी सजग हो जाओ, जितना पाप छोड़ सकते हो, छोड़ो। मृत्यु किसी को छोड़ने वाली नहीं है। एक पल का संयम भी तिरने का कारण है। अन्त में दिवंगत महासतीजी को चार लोगस्स से श्रद्धांजलि दी गई। उसी दिन अलीगढ़-रामपुरा संघ की ओर से चातुर्मास की विनति रखी गई। 10 नवम्बर से प्रथम प्रहर में भगवान महावीर की अंतिम वाणी उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा. ने प्रारम्भ किया। जो 12 नवम्बर को गौतम प्रतिपदा पर पूरा हुआ। इस दिन दिल्ली चांदनी चौक से श्रावक गण एवं बैंगलोर से वीर पुत्र अमित जी अनंत जी मेहता अपनी सांसारिक माता महासती श्री वैराग्यश्रीजी म.सा. के सोरापुर में नश्वर देह त्याग पर मांगलिक श्रवण करने पावन श्री चरणों में उपस्थित हुए। 14 नवम्बर को जयपुर से श्री श्यामसुन्दर जी राजेन्द्र कुमार जी चकेरी वालों का परिवार श्रीमती सुभद्रा जी जैन के समाधिमरण पर, सवाईमाधोपुर से सुश्राविका

श्रीमती इन्द्राजी चौधरी अपने परिवारजनों की महिलाओं के साथ पति श्री राजमल जी चौधरी के स्वर्गवास पर मांगलिक श्रवण करने उपस्थित हुए। पाली से धारीवाल परिवार एवं बयाना संघ दर्शन लाभ लेने उपस्थित हुआ। पूज्य श्री ने संघ सदस्यों को नित्य सामायिक करने के नियम करवाये। श्रीमती संगीता जी जैन धर्मपत्नी श्री राजेश जी जैन क्षेत्रीय प्रधान जैन कॉलोनी, हिण्डौन सिटी ने पूज्य गरुदेव के पावन मुखारविन्द से 31 दिवसीय तपस्या के प्रत्याख्यान लिये। 15 नवम्बर को महिलाओं का दो दिवसीय ज्ञानवृद्धि शिविर प्रारम्भ हुआ। पीपाड़ संघ दीक्षा व चातुर्मास की, दूदू संघ दीक्षा प्रसंग की विनति लेकर उपस्थित हुए। चांगोटोला एवं करौली संघ के श्रावकों ने भी विनति प्रस्तुत की। 16 नवम्बर को हरसाना से महिला मण्डल अपनी भावना पावन श्री चरणों में प्रस्तुत करने आया।

17 नवम्बर को पूज्य आचार्यप्रवर की पावन दीक्षा का 53वां वर्ष था। इस पावन प्रसंग पर 60 के लगभग तेले की आराधना, 78 भाई-बहिनों द्वारा सिद्धि तप के एकासन की साधना, 71 दम्पतियों द्वारा शील व्रत के खंध ग्रहण, 170 भाई/बहिनों/युवाओं द्वारा 1008 बार तिक्खुत्तो के पाठ से वन्दना, श्री मुरारीलाल जैन द्वारा 5353 वन्दना का भक्तियुक्त आदर्श रहा तो बहिनों ने व्रत ग्रहण के लाभ से परिचित हो 12 व्रती बनने के संकल्प पत्र भरकर पूज्य गुरुदेव से नियम अंगीकार किये। सामूहिक सामायिक एवं सामूहिक एकाशन की आराधना विपुल संख्या में हुई। श्राविकाओं के शिविर का समापन हुआ। महासचिव श्रीमती बीना जी मेहता के अनुसार शिविर में 180 बहिनों ने भाग लेकर सामायिक प्रतिक्रमण का ज्ञानाभ्यास किया। भरतपुर संघ ने चातुर्मास की विनति पावन श्रीचरणों में रखी।

संयम-दिवस के 53वें वर्ष में प्रवेश करने के उपलक्ष्य में शुभ भावनाएँ अर्पित करने सवाईमाधोपुर, कोटा, जयपुर, जोधपुर, पीपाड़, भोपालगढ़, बैंगलोर, लासूर, नवसारी, मुम्बई, चेन्नई, दिल्ली, जलगांव, मैसूर, अलवर से संघ, सूरत, पाली आदि स्थलों व पल्लीवाल क्षेत्र से गुरुभक्तों का अच्छी संख्या में पधारना हुआ। श्री हस्तीमल जी गोलेच्छा ब्यावर ने 'ये हीरा जिनशासन को चमकायेगा' गुणगान किया। संघाध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा ने भावाभिव्यक्ति में कहा कि- आप स्वयं गुरुदेव होते हुए भी अपने गुरु के बताये मार्ग पर चलकर शासन को दीप्तिमान कर रहे हैं, आप स्वस्थता के साथ दीर्घायु हों, शतायु हों, आपकी छत्र-छाया अविरल बनी रहे।

नवदीक्षित श्री विनम्र मुनिजी ने 6 द्रव्यों से उपमित कर आचार्य श्री के गुणगान किए। **श्रद्धेय श्री आशीष मुनि जी म.सा.** ने गुरु की महिमा का संगान कर कहा- आचार्यप्रवर हीराचन्द्र महान हैं, उनके हम गाते गुणगान हैं। जब भी प्रवचन फरमाते हैं- अपने गुरुदेव का

नाम लेकर फरमाया करते हैं कि गुरुदेव ने ऐसा कहा- यह आपकी गुरुनिष्ठा का परिचायक है। गुरुदेव हर समस्या का समाधान शांत भाव व दूरदर्शिता रखकर ही करते हैं। **श्रद्धेय श्री मनीष मुनि जी म.सा.-** आज का शुभ दिवस संयम सुमेरु आचार्य भगवन्त के चरणों में वन्दना करने का दिन है। वन्दन कर निर्जरा करते हुए कृतज्ञता के भाव प्रदर्शित करें। 'वंदे! तद्गुण लब्धये।' जो गुण आपश्री में समाहित हैं, उन गुणों को प्राप्त करने के लिये मैं वंदना कर रहा हूँ। ऐसा भाव रख वन्दना करें। हर जीव में गुण निहित हैं, उनके प्रकटीकरण के लिये वन्दना भी एक साधन है। अपनी शक्तता के अनुसार वन्दना कर वन्दना का अर्घ्य अर्पित करें।

महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.- आचार्य भगवन्त का 53वां दीक्षा दिवस हिण्डौन संघ को मनाने का सौभाग्य मिला। पण्डित घेवर मुनि जी म.सा. ने आपश्री के वैयावृत्य-भाव को जोधपुर में प्रत्यक्ष देखकर कहा- आप आचार्य होते हुए भी सामान्य संत की सेवा कर रहे हैं। उपाध्यायप्रवर दीक्षा पर्याय में ज्येष्ठ हैं, आप आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होते हुए भी उनका पूरा सम्मान करते हैं। जोधपुर की संकरी एवं गंदी गलियों में, कपड़ों की परवाह नहीं करते हुए सविधिवंदन का प्रसंग देख भावुक गण अभिभूत हो गये। संथारे में सहयोग करना आपश्री की अनुपम भावना है। माणक मुनि जी म.सा. व कइयों का सहकार किया है। आपश्री सरल, सेवाभावी, विशाल हृदय, समाचारी पालना में सजग हैं।

परम श्रद्धेय पूज्य आचार्य भगवंत श्री हीराचन्द्र जी म.सा.- पक्षी आकाश में उड़ सकता है, जब दोनों तरफ के पंख सुरक्षित हों। इसी तरह आचरण रूपी सौरभ की विद्यमानता से जीव भी कहाँ से कहाँ पहुंच सकता है। इस जीव ने संवत् 2009 के नागौर चातुर्मास में सामायिक-प्रतिक्रमण-पच्चीस बोल-गुरु चरणों में 14 वर्ष की उम्र में सीख लिया था, फिर 11 वर्ष इस जीव ने यों ही निकाल दिये। समय पर जग गया था, फिर भी आगे नहीं बढ़ा, यह बात आज मुझे खल रही है। इस परम्परा में सभी आचार्य 10 से 14 वर्ष की आयु के मध्य दीक्षित होने से बाल ब्रह्मचारी कहलाये। बाल्यकाल की दीक्षा रत्नों का व्यापार है। जितने भी आचार्य चमके हैं- वे बाल ब्रह्मचारी ही हैं। आचार्य हस्तीमल जी म.सा. सबसे कम उम्र में दीक्षित हुए हैं। उन्हें एकान्त में पढ़ने का अवसर दिया गया। इससे बहिनों का चेहरा तो शिक्षणाभ्यास तक देखने का प्रसंग शायद ही आया हो। इसी कारण वे अखण्ड बाल ब्रह्मचारी कहलाये। वे पन्द्रह वर्ष की अल्प वय में तो आचार्य बना दिये गये। ऐसे रत्नों का जीवन अक्षुण्ण शुद्ध हो, ऐसा प्रयास संघ और श्रावकों का रहा। जो व्यवस्था आचार्य भगवंत हस्तीमल जी म.सा. की रही, वैसी व्यवस्था आज तक नहीं देखी। व्यवस्था की जिम्मेदारी किसकी? अम्मापियरो कौन? यह सब आप जानते ही हैं। आचार्य

की मर्यादा होती है, उसे बात करते समय सब ध्यान रखना पड़ता है। मुझे अखण्ड बाल ब्रह्मचारी का सान्निध्य मिला। पर पारिवारिक कारणों से समय पर आगे नहीं बढ़ पाने से अपने आपको सौभाग्यशाली नहीं मानता। यहाँ योगेश मुनि जी 14 साल की वय में व मनीष मुनि जी 11 साल में दीक्षित होने वाले संत हैं। आचार्य श्री ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमारे किसी भी कदम से संघ का अहित न हो। संघ की किसी भी प्रवृत्ति को गौण नहीं करना है। दिवाकरजी के पास सभी वर्ग के भाई बैठते थे। वे चले गये, उनके साथ 36 कौम थी, वे अब नहीं हैं। क्योंकि उन्होंने संघ से नहीं, उन्हें धर्म से जोड़ा। महत्ता व्यक्ति की नहीं संघ की है। व्यक्ति की महिमा संयम से है- संयम के कारण ही हम वन्दनीय बने हैं। प्रधानमंत्री है, न्यायाधीश है, करोड़पति है, तिक्खुत्तो के पाठ से उनको वन्दन कौन कर रहा है? संयम का ऐसा प्रभाव है कि तीन दिन का संयम पालने वाला एक भवावतारी बन सकता है। आप भी आचरण को जीवन में उतार कर जीवन शुद्ध एवं निर्मल बनायेंगे, ऐसी मंगल भावना है।

पूज्य आचार्यप्रवर के दीक्षा दिवस पर 53 की संख्या में हर तरह की साधना हो, ऐसा लक्ष्य रखा गया, साधना-आराधना में आशातीत सफलता मिली। 18 नवम्बर को लासूर स्टेशन संघ हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दर्शनार्थ उपस्थित हुआ। 19 को अजमेर संघ विनति करने एवं मदनगंज संघ दीक्षा प्रसंग के लाभ की भावना से विनति करने पधारे।

दीक्षा की स्वीकृति एवं चातुर्मास हेतु विनतियाँ

21 नवम्बर को पूज्य आचर्य भगवंत ने तीन मुमुक्षु आत्माओं, श्रीमती सज्जनकंवर जी मेहता, जोधपुर व सुश्री रुचिता जी व सुश्री नेहा जी खींवसरा-माण्डल (महाराष्ट्र) वालों की भागवती दीक्षा 11 फरवरी 2016 को आयोजित किये जाने की स्वीकृति फरमाई। अलवर संघ वाले भागवती दीक्षा के लिए कृपा बरसाने की भावना लेकर पूज्य गुरुदेव के पावन श्री चरणों में पधारे। 22 को मानसरोवर संघ, जयपुर वृहद् संख्या में आगामी संवत् 2073 के चातुर्मास की पुरजोर विनति रखने पूज्य आचार्य भगवन्त की सेवा में उपस्थित हुए। महावीर नगर संघ, जयपुर ने भी चातुर्मास की विनति रखी। 23 को अजमेर से श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, स्वाध्याय भवन पुष्कर रोड की ओर से दीक्षा प्रसंग का लाभ लेने की भावना से पूज्य श्री की सेवा में आया। 24 को बैंगलोर से दिवंगत महासती श्री वैराग्य श्री जी म.सा. के सांसारिक पति श्री धनरूपचंद जी मेहता मांगलिक श्रवण करने पधारे एवं दूरदर्शितामयी दृष्टि से महासती जी म.सा. के दोष नहीं लगाने वाले फरमाए संकेत पर प्रमोद अभिव्यक्त किया।

25 नवम्बर को कार्तिकी चौमासी महापर्व होने से चातुर्मास का आखिरी दिवस था।

पूज्य आचार्य भगवन्त सहित संतवृंद प्रवचन सभा में पधारे। आज क्रियोद्धारक महापुरुष श्री लोंकाशाह की जयंती का सुयोग भी था। श्रद्धेय श्री मनीष मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि भूल होना स्वाभाविक है, पर भूल स्वीकार नहीं करना, अहंवृत्ति का परिचायक है। अतः सरल हृदय से भूल स्वीकार करना ऋजुता का प्रतीक है। भूल स्वीकार करने के लिये कोई समय बुरा नहीं है। ऐसी सोच रखकर संस्कृति का पोषण करें। महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने फरमाया- ''लोंकाशाह ने शिथिलाचारियों को सन्मार्ग पर लाने के लिये क्रांति का बिगुल बजाया। जैन संघों में स्वच्छंदता इतनी बढ़ गई थी कि समूह में सब अपनी मनमानी करने लगे थे। बताते हैं 156 गच्छों में यह परम्परा बंट गई, दिगम्बर भी अछूते नहीं रहे। उनके भी 5 गच्छ थे। जैन गच्छों के श्रावकों को संगठित कर एक सूत्र में लाने का श्रेय वीर लोंकाशाह जी को है।''

परम श्रद्धेय पूज्य आचार्य भगवंत- मात्र गर्दन हिलाने से, बातें करने से यह शासन चलने वाला नहीं है। शासन चलेगा आचरण करने से। पूर्व समय में आगम भी लिपिबद्ध नहीं थे, मात्र श्रुत परम्परागत रूप से चले आ रहे थे। ज्ञान-क्रिया से संघ चलता है, मात्र ज्ञान से नहीं। जिनका आज जन्मदिन है, हेमचन्द्राचार्य जी ऐसे आचार्य थे- उन्होंने पहले राजा-महाराजाओं को जोड़ा। श्रावक अपने आप जुड़ते चले गये, क्रिया का ऐसा प्रभाव है। हिण्डौन वाले भी करणी करने में आगे आये हैं। सामायिक-प्रतिक्रमण सीख ज्ञान के क्षेत्र में चलने का प्रयास किया है। क्रिया करने के लिए स्वयं तैयार हुए हैं। इन्होंने इतनी संख्या में समाायिक पहली बार की है। वर्षा होने के बाद भी खेत हरा-भरा रहता है, तो उससे यह मालूम होता है कि यहाँ वर्षा हुई है, इसी तरह हमारे जाने के बाद सामायिक साधना हो तो समझेंगे कि यहां चातुर्मास हुआ है। कई ऐसे स्थान हैं, जहाँ 365 दिन ज्ञान की आराधना होती है। पल्लीवाल क्षेत्र में प्रवेश करने के बाद इतने सारे शीलव्रत के खंध हुए हैं, अभी तक मेरे विगत 24 वर्षो में किसी भी वर्ष में नहीं हुए। लगभग 800 शीलव्रत हो चुके हैं। युवा रत्न उत्साही सामाजिक कार्यकर्ता श्री प्रदीप जी जैन का 156 शीलव्रती बनाने में दलाली का सहकार रहा है। साधना के मार्ग में शंका की बजाय श्रद्धा की प्रमुखता रहनी चाहिये। जैसे मैं आपको सामायिक धर्मस्थान में करवाने का नियम कराता हूँ, यदि आप पूरा पालन नहीं कर रहे हैं तो क्या प्रेरणा बन्द कर दें? सामायिक प्रतिक्रमण की प्रेरणा पाप से हटाने में सहायक है। जितना आप पाप से हटेंगे, अहिंसक बनेंगे, शील का पालन करेंगे, उतना तो प्रतिफल मिलेगा। गुरुदेव कहा करते थे- जितनी देर पढ़ेगा, पाप से हटेगा। व्रत में आगे बढ़ाने के लिये प्रेरणा करते रहना है, धर्म करना है और कराना है। खुद यदि सामायिक करेंगे तो तीन कर लेंगे और यदि प्रेरणा करेंगे तो हजारों सामायिक हो सकती है।

26 नवम्बर को प्रातः संतों के विहार के पूर्व चातुर्मास की समाप्ति पर भावाभिव्यक्तियाँ

प्रार्थना श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा. के पावन मुखारविन्द से होने के पश्चात् **संघ मंत्री श्री प्रवीण जी जैन** ने कार्यक्रम की शुरूआत में वीरभ्राता सेवानिवृत्त **प्रधानाचार्य श्री नरेन्द्र जी जैन** को आमंत्रित किया- श्री नरेन्द्र जी ने कहा-गुण सौरभ गणि हीरा आगम मौजी-आगम खोजी हैं। आपश्री के विराजने से हिण्डौन सिटी पावन धाम बन गया। बालिका राशि जैन की टीम ने विदाई गान में कहा- जाये चमन का माली, हम धैर्य कहाँ से पाये। एक राह बता कर जाना पहले, फिर गुरुवर यहां से जाये। **श्रीअशोक जी जैन** प्रधानाचार्य ने बताया- स्वयं गुरुदेव सामायिक-प्रतिक्रमण के पाठ देकर सिखा-सिखा कर आगे बढ़ा रहे थे, हम ज्ञान सीखें और कषायों को कम करने की भेंट चढाएं। वीर पिता **डॉ. श्री विमलचंद जी जैन** ने गुरुदेव के गुणगान कर कहा- हस्ती पट्टधर, आचार्यप्रवर हीरा गुरुवर का क्या कहना! साथ ही उन्होंने वर्धमान नगर फरसने की विनति पावन चरणों में रखी। वरिष्ठ त्यागी श्रावक **श्री सौभागमल जी जैन, कुशतला-** महान आत्माओं की चरण सन्निधि में चार मास रहकर जीवन उन्नत करने के लिये बहुत कुछ पाया एवं सीखा। **श्री सुमत जी जैन-** आपश्री के चरणों मे रहकर ज्ञान-ध्यान सीखा, इसकी खुशी है तो यहाँ से आपके पदार्पण हो जाने से उदासीनता का अनुभव भी कर रहे हैं। **श्री बृजमोहन जी जैन** वरिष्ठ स्वाध्यायी ने कहा- पूज्य गुरुदेव ने चातुर्मास की कृपा बरसाई है, यह सबसे बड़ा उपहार है। **श्री गौतमचंद जी संकलेचा, कुम्भकोणम-** गुरुदेव ने जो तिरने का मार्ग बताया है उसका आचरण कर तप-त्याग नियम, प्रत्याख्यान की भेंट चढ़ायें। **श्री टीकमचंद जी जैन, सरपंच, शेरपुर-** पल्लीवालों को सबकुछ दे दिया। नगर सभापति अरविंद जैन को आपकी कृपा से निर्विरोध चुन लिया गया। **श्रीमती मोहिनी बाई जैन, आलनपुर-** बादाम कड़वी होने पर खारी लगती है, कम्बली भीग जाने पर भारी लगती है, पर गुरु भगवंत की वाणी कभी भी सुनो, प्यारी लगती है। **युवा कार्यकर्ता श्री राहुल जी जैन-** गुरुदेव को लाने के प्रयास वर्षों से चल रहे थे, पर व्यवस्था कैसे बैठ पायेगी, इसको लेकर हम चिंतित थे। किन्तु गुरुदेव के अतिशय से ऐसी कृपा बरसी, सब श्रेष्ठ हो गया, ऐसे गुरुवर को नमन। **श्री अशोक जी जैन-** यह चातुर्मास यशस्वी, ऐतिहासिक व सफल हुआ है। दर्जनों मासखमण- सैकडों शीलव्रत, हजारों वन्दना का क्रम चला है। अब क्षेत्र में सामायिक, प्रतिक्रमण, संवर, शीलव्रत, व्यसनमुक्ति अभियान वर्ष पर्यन्त चले। बालिका **आस्था जैन-** भारत के भूषण मारवाड़ के महापुरुष जगत् के जौहरी गुरुवर हीरा को

आचार्य हस्ती ने परखा और गुरु के रूप में हमें प्रदान किया। लाखों करोड़ों के हीरे देख लीजिये, आप श्री जैसी आभा नहीं है। **श्री उगमचंद जी कांकरिया, चेन्नई–** वर्तमान में मूल्यों का ह्रास हो रहा है। ऐसे समय में हीरा गुरुवर ही अवलम्बन हैं। यहां सन्निधि में रहने से संकल्प-विकल्प नहींवत् होने से शांति का अनुभव होता है। **श्री गगनचंदजी फाजिलाबाद–** आपके विराजने से धर्म ध्यान व तप त्याग का ठाट लगा। यह आप श्री की कृपा का प्रतिफल है। **श्रीमती सुरेखा जी जैन, सवाईमाधोपुर–** म्हारे मन दुःखडो पावे, आवे हीरा री ओल, गुरुवर जी तैयारी करके चाल्या उस पोल। मिंगसर री आई पडवा, सबको कर गई दुःख मां जो गुरुवर चाल्या उस ओर।

श्री विजय जी जैन, मंत्री–युवक परिषद– तेजस्वी, यशस्वी, वर्चस्वी गुरुदेव की छवि सदैव स्मृति में रहेगी। युवा टीम ने रात्रि-भोजन त्याग के क्षेत्र में 1200 संकल्प पत्र भरवाये। बहिन अंजलि ने सफल चातुर्मास की समस्त गतिविधियों का परिचय काव्य रूप में करके सुनाया। **श्री धीरज जी जैन**–वन्दना प्रभारी– श्रद्धा भक्ति के अनेक रूप हैं। बिन्दु रूप में वन्दना का कार्य प्रारम्भ हुआ, जिसने आज सिन्धु रूप ले लिया है। 1161 भाई-बहिनों ने 1008 वन्दना कर भक्ति प्रदर्शित की है। श्री राजेश जी ने 5656 एवं काजल जी ने सर्वाधिक 6111 वन्दना करने का विरुद पाया। **श्री कृष्ण मोहन जी जैन–** 'जाते हुए गुरुवर जी, इस हारे हुए दिल को समझा जाना' गीत प्रस्तुत किया। **संघ मंत्री श्री प्रवीण जी जैन–** चातुर्मास स्वीकृति, हिण्डौन नगर प्रवेश, चातुर्मास प्रारम्भ से आज तक हुई समस्त ज्ञानाराधना-तपाराधना, धर्माराधना करने वालों का, सहयोग करने वालों का, गुरुभगवंतों की कृपा प्रेरणा अतिशय विशेष आदि समस्त दैनिक गतिविधियों की विस्तृत रिपोर्ट धर्म सभा में सुन्दर व प्रभावी भाषा में प्रस्तुत की। **संघाध्यक्ष श्री शीतल प्रसाद जी जैन–** पूज्य आचार्य भगवंत, संत वृंद के उपकारों पर आभार प्रदर्शन करते हुए अविनय आशातना के लिये क्षमायाचना की। संघ के सभी सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं ने योगदान दिया, सहकार किया, चातुर्मास को सफल बनाया, इस पर धन्यवाद ज्ञापित किया।

महान् अध्यवसायी **श्रद्धेय श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा–** आज सुनने का दिन है– आप सबकी भावाभिव्यक्ति सुनी। हमारा यहाँ 127 दिन यानी लगभग 2948 घण्टे वर्षावास में विराजना हुआ। हिण्डौन संघ में भरपूर त्याग से चातुर्मास को दीपाया। अब...लो हम तो करें विहार, सुनो नर नार, यहाँ से जावें, बस माफी आज दिलायें। पूज्य आचार्य भगवंत ने प्रत्याख्यान करवाने के पश्चात् मांगलिक प्रदान की।

पूर्व सूचनानुसार दोपहर 2 बजे पूज्य आचार्य भगवंत ने मांगलिक फरमाई एवं विहार के

लिये पावन श्री चरण आगे बढ़ गए। सबसे आगे धवल वस्त्रों में धवल गज सदृश पूज्य गुरुदेव एवं उनके पीछे क्रम से रत्नाधिक संतवृंद चरण बढ़ा रहे थे। समूचे रास्ते में जयनिनाद का स्वर गुंजायमान रहा। सैकडों भाई/बहिनें अपने आराध्य को अश्रुमिश्रित नयनों से विहार-विदाई का दृश्य देख अधीर हो रही थी। 2.20 बजे के लगभग पत्थर वालों की धर्मशाला में पूज्य गुरुदेव का पदार्पण हुआ। वहाँ धर्मसभा ने शांति स्तवन का जाप कर, मांगलिक श्रवण कर उदास मन से अपने-अपने गन्तव्य स्थल की ओर चल दिये।

हिण्डौन संघ ज्यादा विशाल नहीं है, पर हृदय विशाल है। लक्ष्मी पैलेस में भोजन व आवास व्यवस्था उत्तम थी। कार्यकर्त्ता पुलकित भाव से आदर सम्मान के साथ पूरी मान मनुहार के साथ अतिथियों का स्वागत कर अतिथि सत्कार का सुलाभ ले आनन्दित होते। यहाँ के अध्यक्ष श्री शीतलप्रसादजी, मंत्री प्रवीणकुमारजी जैन व उनकी समस्त कार्यकारिणी अहर्निश सेवाभाव से हर समय उद्यत रहती। जो भी दर्शनार्थी यहाँ आया, मुक्तकण्ठ से प्रशंसा के पुल बांधकर ही गया। यहाँ के समस्त कार्यकर्त्ता अपने व्यवसाय को छोड़कर सेवा शुश्रूषा में रात-दिन डटे रहे। धर्माराधना करने वालों ने ज्ञान-ध्यान सीखने व संवर आदि करने में पूरा समय दिया। तप में जो सुन्दर पुरुषार्थ हुआ, वह प्रमोदकारी है। यहाँ निम्नानुसार तपाराधना का रूप रहा-

मासक्षपण- 1. श्रीमती पुष्पलता जी श्री विजेन्द्र कुमार जी जैन, आगरा वाले, वर्धमान नगर (31 दिवसीय) 2. श्रीमती हेमलता जी श्री पुष्पेंद्रकुमार जी जैन, मोहन नगर, हिण्डौन सिटी (30 दिवसीय) 3. श्री राजेश जी श्री हुक्मचंद जी जैन, जैन कॉलोनी, हिण्डौन सिटी (35 दिवसीय) 4. श्री पूरणचंद जी सुपुत्र स्व श्री फूलचंद जी जैन, अशोक कॉलोनी, हिण्डौन सिटी (31 दिवसीय) 5. श्रीमती वीणा जी श्री कल्याण प्रसाद जी जैन, वर्धमान नगर (करमपुरा वाले) (31 दिवसीय) 6. श्री अरुण जी भण्डारी सुपुत्र स्व. श्री दशरथमल जी भण्डारी, मणिनगर अहमदाबाद (65 दिवसीय) 7. श्रीमती कान्ताबाई जी श्री प्रकाशचंद जी जैन प्राचार्य, जलगांव वाले, जयपुर (30 दिवसीय) 8. श्रीमती गुड्डी बाई जी धर्मपत्नी स्व. श्री निर्मल कुमार जी जैन, अग्रसेन नगर, हिण्डौन सिटी (31 दिवसीय) 9. श्री मोहनलाल जी सुपुत्र स्व. श्री मोतीलाल जी जैन, एण्डवावाले, सवाईमाधोपुर (30 दिवसीय) 10. श्रीमती रेखा धर्मपत्नी श्री वीरपिता श्रीनिर्मल कुमार जी जैन, सिद्धार्थ नगर, हिण्डौन सिटी (31 दिवसीय) 11. श्रीमती सीमा जी अजय जी जैन, जैन कॉलोनी, हिण्डौन सिटी (31 दिवसीय) 12. श्रीमती संगीता जी श्री राजेश जी जैन, जैन कॉलोनी, हिण्डौन सिटी (31 दिवसीय) 13. श्रीमती निशा जी श्री ताराचंद जी जैन, जैन कॉलोनी, हिण्डौन सिटी (मासखमण)।

अन्य तपाराधन के अन्तर्गत इक्कीस की एक, उन्नीस की एक, सत्रह की एक, सोलह की एक, ग्यारह की तीन, नौ की तीन, छ की दो, पाँच की चार एवं चार की दो तपस्याएँ हुईं। 43 अठाई, 252 तेले, 272 बेले, 1357 उपवास, 165 आयंबिल, 3874 एकासन, 195 नींवी, 1381 दया, 4600 संवर-पौषध हुए। धर्मचक्र, नवरंगी तथा सिद्धितप (एकासन) की साधना का क्रम भी निरन्तर चलता रहा।

गोचरी में श्री सुमतचंद जी मुकेश जी, राजेश जी, पूरण जी जैन की सेवाएं उल्लेखनीय रहीं। चातुर्मास काल में अधिकतर श्री महेशचंद्र जी जैन, सेवानिवृत्त अध्यापक ने संचालन का दायित्व बखूबी संभाला।

विशेषः– श्री सुशील कुमार जी जैन एवं श्रीमती मायादेवी जी जैन नसियां कॉलोनी, गंगापुर सिटी वालों ने अपनी सुपुत्री खुशबू जी जैन का आज्ञापत्र पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन श्री चरणों में सहर्ष दिनांक 8 नवम्बर, 2015 को प्रस्तुत कर दिया है।

चातुर्मास काल में चार मास तक साधना आराधना-तप-त्याग का पूज्य आचार्य भगवंत की चरण सन्निधि में लाभ लेने वाले भाग्यशाली श्री बुधमलजी बोहरा-चेन्नई, श्री उगमचंदजी कांकरिया-चेन्नई, श्री प्रकाशचंदजी ओस्तवाल-चेन्नई, श्री पारसमलजी कोठारी-चेन्नई, श्री मदनलालजी कवाड़-पूनमल्ली, श्री गौतमचंदजी संकलेचा-कुम्भकोणम, वीर पिता श्री प्रेमचंदजी गांधी-दिल्ली, श्री हस्तीमलजी सुराणा-कोलकाता, श्री प्रकाशचंदजी प्राचार्य-जयपुर, वीर पिता श्री नरेंद्र मोहनजी जैन-सवाईमाधोपुर, श्री गणपतलालजी जैन-बजरिया, श्रीमती मोहिनीबाई जी जैन-आलनपुर, डॉ. श्रीमती मंजुलाजी जैन-जयपुर, श्रीमती चमेलीदेवीजी जैन-बजरिया, वीरपिता श्री शिवदयालजी जैन-हरसाना, वीर पिता श्री राजेशजी जैन-जलगांव, श्री सौभागमलजी जैन-कुशतला, श्री रामदयालजी जैन सर्राफ-बजरिया, श्री कैलाशचंदजी जैन-जयपुर, श्री मोतीलालजी कटारिया-पीपाड़ है। आवास व भोजन में अहर्निश बागडोर सम्भालने वाले श्री प्रकाशचंदजी जैन, वीरपिता श्री निर्मलकुमारजी जैन, श्री पुष्पेंद्रकुमारजी जैन, श्री राहुल कुमारजी जैन, श्री नरेंद्र कुमारजी जैन, श्री ताराचंदजी जैन, श्री अभयजी जैन, श्री विजयजी जैन, श्री दीपकजी जैन आदि अनेक उत्साही, कर्मठ, ऊर्जावान कार्यकर्त्ताओं के समयदान, सेवा सहकार से चातुर्मास में जो सुन्दर सुनियोजित प्रबन्ध दृश्यमान रहा। वह श्लाघनीय, अनुकरणीय एवं प्रेरणीय है।

परमाराध्य, परमोपकारी, पूज्य आचार्य भगवंत श्री विहार पश्चात् अग्रसेन धर्मशाला में 26 नवम्बर को रात्रि साधना कर, 27 को प्रातः स्टेशन रोड होते हुए वर्धमान नगर पधारे एवं प्रवचनामृत फरमाया। *-जगदीश जी जैन, हिण्डौन सिटी*

उपाध्यायप्रवर का जोधपुर-चातुर्मास रहा धर्माराधन का केन्द्र

शान्त-दान्त-गम्भीर पूज्य **उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.**, मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 6 के पावन सान्निध्य में जोधपुर क्षेत्र निरन्तर लाभान्वित हो रहा है। सन्तों के प्रवचनों, साधनाशीलता आदि से सभी प्रभावित हैं। चातुर्मास में कई श्रावक-श्राविकाओं ने चौका लगाकर धर्मसाधना का लाभ लिया है। दया-संवर, उपवास-पौषध आदि की साधना निरन्तर चल रही है। ज्ञानाराधना के क्रम में सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल, थोकड़ा आदि सीखे जा रहे हैं। उभयकाल प्रतिक्रमण एवं संवर आराधना बराबर चल रही है। इसी क्रम में थोकड़ों की परीक्षा में लगभग 150 व्यक्तियों ने भाग लिया है। सामायिक-स्वाध्याय भवन में धर्ममय वातावरण रहता है। कार्तिक शुक्ला षष्ठी को पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का दीक्षा दिवस एकाशन, उपवास, दया-संवर आदि की साधना के साथ मनाया गया तथा पूज्यश्री के गुणगान किए गए।

संत भगवन्तों के दर्शनार्थ पधारने वाले भक्त श्रावक-श्राविकाओं का क्रम निरन्तर बना हुआ है। दिल्ली, चेन्नई, बैंगलोर, अहमदाबाद, कंवलियास, जयपुर, पीपाड़, कोसाणा, पाली, हिण्डौन, सवाईमाधोपुर, मुम्बई, सूरत, जलगांव आदि स्थानों से आवागमन हुआ है। शासनसेवा समिति के संयोजक माननीय श्री रतनलाल जी बाफना एवं नव मनोनीत संघाध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा परिवार सहित उपाध्यायप्रवर की सेवा में उपस्थित हुए एवं धर्मलाभ लिया।

उपाध्यायप्रवर के पाइल्स एवं प्रोस्टेट के ऑपरेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गए हैं। युवकों एवं श्रावकों की उल्लेखनीय सेवाएं रही हैं। अभी विहार की स्थिति नहीं होने से उपाध्यायप्रवर एवं संत मण्डल नेहरूपार्क स्थानक में विराज रहे हैं। *-नवरतन डागा, संयोजक-चातुर्मास समिति*

महावीरनगर जयपुर का चातुर्मास रहा सफल

सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में 6 अक्टूबर से श्रावक एवं श्राविका वर्ग के एकाशन का सिद्धितप चल रहा था, जो 17 नवम्बर 2015 को पूर्ण हो गया। नवपद, आयंबिल की पूर्णता भी इसी दिन सम्पन्न हुई। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का इसी दिन 53 वां दीक्षा दिवस तप-त्याग के साथ मनाया गया। चारों ही संतों ने पूज्य गुरुदेव के गुणगान किए। दीपावली के अवसर पर तीन

दिन उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन हुआ। चातुर्मास में जीवाजीवाभिगम सूत्र, औपपातिक सूत्र, विपाक सूत्र एवं उपासकदशांग सूत्र की वाचनाएँ पूर्ण हुई हैं। श्रावक एवं श्राविकाओं में फुटकर तपस्याएँ चातुर्मास पर्यन्त चलती रहीं। दीपावली पर 20 तेले एवं 60 एकाशन की आराधना, रात्रि में संवर तथा पौषध की साधना हुई। कार्तिक पूर्णिमा की चौमासी पर 70 से अधिक उपवास, एकाशन एवं पौषध हुए। संस्कार हेतु साप्ताहिक पाठशाला प्रारम्भ करने के लिए श्री विरेन्द्र जी जामड़ ने प्रेरणा की। 26 नवम्बर को प्रातः 9.45 बजे विहार कर संत मण्डली मालवीय नगर पधारी।

महासती-मण्डल के चातुर्मासों में धर्मप्रभावना

पावटा-जोधपुर- साध्वी प्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 8 के सान्निध्य में दीपावली के अवसर पर पाँच दिवसीय कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें धन त्रयोदशी को धर्म त्रयोदशी के रूप में, रूप चतुर्दशी को स्वरूप चतुर्दशी के रूप में, दीपावली को निर्वाण दिवस के रूप में, प्रतिपदा को गौतम प्रतिपदा के रूप में तथा भाईदूज को सुदर्शना एवं नन्दीवर्धन की भांति बहन-भाई के प्रेमवर्धन के रूप में मनाने की प्रेरणा की गई है। 16 नवम्बर को श्रुतपंचमी की आराधना की गई। 17 नवम्बर को कार्तिक शुक्ला षष्ठी को आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 53 वें दीक्षा-दिवस पर महासती श्री दर्शनलताजी म.सा., महासती श्री उषाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवरजी म.सा., शासनप्रभाविका श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ने आचार्यप्रवर के जीवन एवं दर्शन पर प्रकाश डाला। श्री पुनवानचन्दजी ओस्तवाल ने आचार्यश्री की सरलता आदि गुणों पर प्रकाश डालते हुए अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए। कार्तिक पूर्णिमा को वीर लोकाशाह के योगदान पर प्रकाश डाला गया। इस दिन अनेकविध तप-त्याग हुए। 10 अष्टप्रहर पौषध उपवास, एकाशन, दया, संवर आदि की साधना हुई। स्वास्थ्य में समाधि न होने के कारण महासती मण्डल पावटा स्थानक में विराज रहे हैं।

मानसरोवर(जयपुर)- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 5 का विहार 26 नवम्बर को प्रात: 8.00 बजे पोरवाल भवन से हुआ। विहार में मानसरोवर के अतिरिक्त जयपुर शहर एवं उपनगरों से लगभग 400 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। इस चातुर्मास में मासक्षपण, 21 उपवास आदि तपस्याओं के साथ अनेकविध उल्लेखनीय तप हुए। एकाशन, बियासन के भी मासक्षपण हुए। संवत्सरी पर लगभग 400 सामूहिक उपवास एवं विशेष दिन 150 सामूहिक एकाशन हुए। उपवास, आयम्बिल, नींवी की तपस्याएँ भी सम्पन्न हुईं। प्रत्येक रविवार को प्रश्नोत्तर, बालकों के शिविर आयोजित हुए। तीन दिन बच्चों

का विशेष शिविर, तीन दिन महिलाओं का आगम-ज्ञानवर्धन शिविर आदि आयोजित किए गए। नित्य सामायिक एवं प्रार्थना की प्रेरणा की गई। 2015 के चातुर्मास से सभी संघ सदस्य अत्यन्त हर्षित हैं।

सूरत- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा 5 श्री सोहनलाल नाहर स्वाध्याय भवन से विहार कर शिव नन्दन एपार्टमेन्ट वेसू पधारे हैं। महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा. ने आत्मलक्ष्यी उद्बोधन से सबको आनन्दित कर दिया। चातुर्मास में उल्लेखनीय धर्मध्यान एवं तप-त्याग हुआ। कई श्रावकों, श्राविकाओं एवं बालक-बालिकाओं ने प्रतिक्रमण, थोकड़े एवं आगम कण्ठस्थ किए। स्वाध्याय भवन में यह प्रथम चातुर्मास था, जिससे सभी श्रावक-श्राविका लाभान्वित हुए एवं प्रमोद का अनुभव किया। विहार में लगभग 200 श्रावक-श्राविकाओं ने लाभ लिया। महासती मण्डल सूरत के उपनगर पाण्डेसरा, सचिन होते हुए नवसारी पधारें, ऐसी सम्भावना है।

गांधी नगर (दिल्ली)- पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की असीम कृपा से दिल्ली महानगर में प्रथम बार चातुर्मास कर रही व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 का यह चातुर्मास क्षेत्रवासियों के लिए उत्साहजनक एवं प्रेरणाप्रद रहा है। महासती जी की ओजस्वी वाणी सुनकर एवं सम्यक्त्व की प्रेरणा पाकर क्षेत्रवासियों ने ज्ञान-ध्यान एवं तप-त्याग में बढ़चढ़ कर भाग लिया है। चातुर्मास के प्रारम्भ से ही अठाई, तेला, उपवास, आयंबिल, एकाशन, बियासन एवं संवर की सतरंगी लड़ी प्रारम्भ हुई, जो चातुर्मास पर्यन्त चली। इस लड़ी में 35 अठाई एवं 275 तेले की तपस्याएँ भी सम्पन्न हुईं। आचार्यप्रवर की दीक्षा जयन्ती पर 57 तेले एवं अनेक एकाशन के तेले सम्पन्न हुए। एक माह से लेकर चार माह तक शीलव्रत के अनेक प्रत्याख्यान सम्पन्न हुए। आजीवन शीलव्रत के 15 प्रत्याख्यान हुए- 1. श्रीमती परमेश्वरी देवी एवं श्री गुग्गन यादव-महाराजपुरा, 2. श्रीमती गंगादेवी एवं श्री दिलीप सिंह यादव-महाराजपुरा, 3. श्रीमती किस्तूरी देवी एवं श्री रूपसिंह अग्रवाल-भिण्डु, 4. श्रीमती चारुदेवी एवं श्री विजयसिंह जैन-महरौली, 5. श्रीमती उषा एवं श्री रमेशचन्द जैन-शाहदरा-दिल्ली, 6. श्रीमती चंदा एवं श्री श्री मातादीन जाटव-तिजारा, 7. श्रीमती शीला एवं श्री छोटेलाल जी जाटव-तिजारा, 8. श्रीमती रतनमाला एवं श्री राजेन्द्र जैन-तिजारा, 9. श्रीमती शांतिदेवी एवं श्री सुभाषचन्द जी जैन-तिजारा, 10. श्रीमती निर्मला एवं श्री आनन्द जैन-बिहारी कॉलोनी-दिल्ली, 11. श्रीमती ओमवती एवं श्री ओमप्रकाश यादव-सबकावाली, 12. श्रीमती विद्यादेवी एवं श्री बलवन्तसिंह यादव-सबकावाली, 13. श्रीमती तारादेवी एवं श्री रघुबीर जी-नानकवास, 14. श्रीमती हंसाबाई एवं श्री अभयकुमार परमाज-कोल्हापुर, 15. श्रीमती कस्तुरी बाई एवं श्री दरबारीलाल जैन-बिलासपुर। यहाँ

अनेकों ने लीलोती, जमीकन्द, टी.वी. न देखने आदि के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। संवत्सरी महापर्व पर लगभग 180 पौषध हुए। प्रत्येक रविवार को धार्मिक परीक्षाओं का आयोजन हुआ। 'गुण सौरभ-गणि हीरा' प्रतियोगिता में लगभग 150 व्यक्तियों ने भाग लिया। 26 नवम्बर को महासती-मण्डल का विशाल जनमेदिनी के साथ शंकर नगर स्थानक की ओर विहार हुआ है।**-बिजेन्द्रकुमार जैन-महामंत्री, श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी सोसाइटी, गांधीनगर, दिल्ली।**

वैशालीनगर-अजमेर- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में 18 अक्टूबर को भक्तामर स्तोत्र का सामूहिक जाप किया गया, जिसमें लगभग 300 से 350 की उपस्थिति रही। ओली तप की आराधना पूरे 9 दिन 15 बहनों ने की। शरद् पूर्णिमा की रात्रि में 80-90 बहनों ने 15-15 सामायिकें की तथा कुछ बहनों ने 11-11 सामायिक की आराधना की। पूरे 9 दिन प्रतिदिन 11 घण्टे का नवपद का जाप हुआ। 8 नवम्बर को आध्यात्मिक'वनडे मैच में लगभग 100 बालकों ने भाग लिया। दीपावली पर पुच्छिंसु णं का 108 बार पाठ हुआ। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 53 वें दीक्षा दिवस पर विशेष धर्माराधना सम्पन्न हुई। त्रिदिवसीय कार्यक्रम के अन्तर्गत 15 नवम्बर को 108 वंदना, 16 नवम्बर को 'खुल जा सिम-सिम' प्रतियोगिता एवं 17 नवम्बर को आचार्य श्री हीरा के जीवन पर लघु नाटिका प्रस्तुत की गई। आचार्य श्री हीरा के जीवन पर आधारित डायमण्ड हाउस में लगभग 400 लोगों ने भाग लिया। उस दिन जयपुर, जोधपुर, भीलवाड़ा, किशनगढ़ आदि कई ग्राम नगरों के श्रद्धालु उपस्थित थे। श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने गुरुदेव के जीवन पर प्रकाश डाला। जयपुर से श्री प्रमोदजी लोढ़ा, पाली से युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजकुमारजी गोलेछा तथा जोधपुर से श्री महेन्द्र जी सुराणा भी पधारे। उपवास के 54 तेले तथा एकाशन के 200 तेले सम्पन्न हुए। श्रीमती सुशीला जी पीपाड़ा के आठ की तथा श्रीमती रीना रियावाले के 9 की तपस्या सम्पन्न हुई। एक वर्ष के लिए अनेकविध प्रत्याख्यान हुए- एक वर्ष में 300 सामायिक, 25 उपवास, 25 एकाशन, 25 आयंबिल, वर्ष पर्यन्त रात्रिभोजन त्याग, वर्ष भर शीलपालन आदि। किसी ने जीवन भर के लिए भी रात्रिभोजन त्याग का नियम ग्रहण किया। श्री नौरतनमलजी-श्रीमती पारसदेवीजी डोसी ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया। 17 नवम्बर को प्रवचन में लगभग 1200 की उपस्थिति रही। त्रिदिवसीय कार्यक्रम एवं तेले की तपस्या के पारणे का लाभ श्री प्रेमचन्दजी हरकचन्दजी बोथरा परिवार ने लिया। श्री हरकचन्दजी बोथरा ने अपने भाव प्रकट करते हुए कहा- "मुझे गुरुदेव भगवन्त के सान्निध्य में आये सिर्फ 4 साल हुए हैं, लेकिन इन 4 सालों में गुरुदेव मेरे रोम-रोम में बसते हैं। गुरुदेव का नाम लेते ही पूरा वातावरण आनन्दमय हो जाता है।"

उमरगांव (गुजरात)- व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में 6 सितम्बर को बालकों में ज्ञानवर्धक चार्ट स्पर्धा रखी गई, जिसमें सभी प्रकार के जैन बच्चों ने भाग लिया। पर्युषण पर्व में भी आशातीत धर्माराधना हुई। यहाँ 13 अठाई, 10-12 बेले, 35-40 तेले, एकाशन की अठाई आदि तपस्याएँ सम्पन्न हुईं। बालिकाओं ने भिक्षु दया की आराधना की। पर्युषण के पश्चात् एकाशन का सिद्धितप सम्पन्न हुआ। 14 से 16 अक्टूबर तक एम.के. मेहता हाई स्कूल में महासती वर्षा जी ने बालकों में अनुशासन एवं संस्कारों की प्रेरणा की। लगभग 950 से 1000 बच्चों ने पटाखे नहीं चलाने का नियम लिया। अण्डा, मांस-मदिरा का सेवन नहीं करने, जुआ नहीं खेलने आदि का भी नियम ग्रहण किया।

सवाईमाधोपुर- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलताजी म.सा. आदि ठाणा 7 के पावन सान्निध्य में आयंबिल ओली के अवसर पर नवकार मंत्र का 9 दिन तक जाप चला। नवकार मंत्र पर लिखित प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें 172 भाई-बहनों ने भाग लिया एवं पुच्छिंसु णं के पाठ में लगभग 1200 भाई-बहनों ने हिस्सा लिया। शरद पूर्णिमा के अवसर पर 180 बहनों ने 15-15 सामायिक कर रात्रि में धर्मजागरण किया। महासतीजी का विहार महावीर भवन के श्री बाबूलाल जी जैन समिधी वालों के यहाँ हुआ। महासती मण्डल सवाईमाधोपुर क्षेत्र में विचरण करे, ऐसी सम्भावना है।

माधवनगर (महा.)- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. का चातुर्मास प्राप्त कर माधवनगर निवासी अत्यन्त हर्षित हैं एवं आचार्य हीरा के प्रति आभार प्रदर्शित करते हैं। तप-त्याग, संगठन, साधना, प्रवचन, आतिथ्य सत्कार आदि सभी तरह से यह चातुर्मास सफल रहा है। महासतीजी ने धर्म से जोड़ने का सुन्दर प्रयास किया है। जो कभी स्थानक में नहीं आते थे, वे भी प्रतिदिन प्रवचन आदि में आने लगे हैं, सामायिक, तपव्रत आदि करने लगे हैं। नवकारसी तप नहीं करने वाली बहनों एवं श्रावकों ने बड़ी तपस्याएँ भी सम्पन्न की हैं।

-बिरदीचन्द बेदमुथा, अध्यक्ष

पीपाड़शहर- व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में अच्छा धर्माराधन हुआ है। प्रारम्भ के 2 माह में लगभग 12 अठाई तप एवं 70 तेले सम्पन्न हुए हैं। 40 जनों ने ओली तप की आराधना की है। पाँच जनों ने एकाशन से भद्रोत्तर तप सम्पन्न किया है। 130 महिलाओं द्वारा शरद् पूर्णिमा पर धर्मजागरणा की गई। 25 भाइयों ने राता उपासरा में धर्मजागरणा की। बहिनों द्वारा नियमित रूप से स्थानक में संवर साधना की जाती रही। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा-दिवस पर प्रातः सामूहिक सामायिक का आयोजन हुआ। लगभग 25 जनों ने 36 वंदना, 200 जनों ने 108 वंदना तथा

8 जनों ने 1008 वंदना की। ज्ञानपंचमी से ज्ञार्नाजन हेतु 16 से 20 नवम्बर तक श्राविकाओं का धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 65 से 70 श्राविकाओं ने उत्साह से भाग लिया। शिविर में तत्त्वज्ञान का विवेचन महासती जी द्वारा किया गया। श्रीमती पुष्पाजी मेहता ने अध्यापन कार्य में सेवा दी। 25 जनों द्वारा रस परित्याग तप किया गया। चातुर्मास में अनेक प्रतियोगिताएँ सम्पन्न हुईं, जिसका पारितोषिक वितरण 25 नवम्बर को किया गया। अग्रविहार गोटन, हरसोलाव की ओर संभावित है। *-नमन मेहता*

बीकानेर- व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 की सन्निधि में यह चातुर्मास प्रभावी रहा। यहाँ तेले, उपवास, आयंबिल आदि की लड़ी चलती रही। 15 दिवसीय दो तपस्याएँ, 11 की तपस्याएँ एवं 6 अठाई तप हुए हैं। 9 एवं 7 की तथा चोले, पचोले, एकाशन का मासक्षपण आदि तपस्याएँ हुई हैं। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा दीवस पर बेले, उपवास, एकासन की तपस्या के साथ पाँच-पाँच सामायिक की तपस्याएँ भी सम्पन्न हुईं।

आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आचार्य पदारोहण रजत वर्ष-2015-2016

जिनशासनगौरव परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्य पदारोहण के रजत वर्ष में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा ज्ञानाराधन, तपाराधन व धर्माराधन हेतु कतिपय कार्यक्रम निर्धारित किए गए हैं। सभी गुरुभ्राताओं से निवेदन है कि इस कार्यक्रम को आपके परिवार में, संघ में प्रचारित एवं प्रसारित करने के साथ अपनी श्रद्धानुसार ज्ञानाराधना-तपाराधना एवं धर्माराधना से स्वयं जुड़ें तथा अपने सम्पर्क में आने वाले अन्य महानुभावों को जोड़कर रजत वर्ष के पावन प्रसंग पर गुरुदेव के प्रति सच्ची श्रद्धा की अभिव्यक्ति करें। आपके क्षेत्र में व्यक्तिगत अथवा संघ स्तर पर सम्पन्न कार्यक्रमों की रिपोर्ट संघ कार्यालय को प्रेषित करावें, ऐसा विनम्र अनुरोध है।

संघ द्वारा निर्धारित कार्यक्रम

(अ) ज्ञानाराधन-

वर्ग-प्रथम- 1. प्रतिक्रमण सूत्र विधि व अर्थ सहित, 2. हीराष्टक-हिन्दी पद्यानुवाद, 3. चयनित 25 थोकड़े, 4. वीर स्तुति-मूल एवं अर्थ, 5. उत्तराध्ययनसूत्र- प्रथम अध्ययन का सार।

वर्ग-द्वितीय-1. दशवैकालिक अध्ययन 1 से 4 तक अर्थ सहित, 2.उत्तराध्ययन सूत्र-9 वां अध्ययन का सार, 3.आचार्य-उपाध्याय के गुण, 4. विनीत शिष्य के कर्त्तव्य, 5.

आचार्य श्री हीरा एवं उपाध्याय श्री मान के जीवन की प्रमुख विशेषताएँ।

नोट:–आवश्यकतानुसार पाठ्य सामग्री जिनवाणी में आलेखों एवं साहित्य के माध्यम से उपलब्ध कराई जायेगी।

(ब) तपाराधन– 1. कम से कम 2500 व्यक्तियों को न्यूनतम एक वर्ष की अवधि के लिए सामूहिक रात्रि भोजन त्याग हेतु प्रेरित करना (एक वर्ष की समयावधि तक अभ्यास के साथ इसमें आगे बढ़ने हेतु विनम्र अनुरोध), 2. कम से कम 2500 व्यक्तियों को जमीकन्द त्याग हेतु प्रेरित करना, 3. कम से कम 250 वर्षीतप (एकान्तर/एकाशन) का लक्ष्य, 4. श्रावक-श्राविकाओं को इस वर्ष में कम से कम 25 आयंबिल/नींवी तप हेतु प्रेरित करना। 5. वर्ष पर्यन्त अथवा मासपर्यन्त कषायविजय हेतु अभ्यास।

(स) धर्माराधन– 1. कम से कम 25 प्रमुख क्षेत्रों में नियमित संवर-साधना हेतु श्रावक-श्राविकाओं को प्रेरित करना, 2. स्वाध्याय संघ का कार्य क्षेत्र देश के 25 प्रमुख प्रान्तों तक फैलाना, 3. कम से कम 125 दम्पतियों को शीलव्रत हेतु प्रेरित करना, 4. कम से कम 125 व्यक्तियों को चौविहार हेतु प्रेरित करना, 5. श्रावक-श्राविकाओं को वर्ष में कम से कम 25 पौषध करने हेतु प्रेरित करना।

(द) व्यसन –मुक्ति–

आचार्य श्री हीरा के सन्देश 'हीरा गुरु का यह आह्वान, व्यसनमुक्त हो हर इन्सान' को लेखों, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों एवं प्रचार-यात्रा के माध्यम से देश के कोने-कोने में प्रचारित व प्रसारित करना।

आइए! आप-हम सभी त्याग-तप की आराधना के साथ लक्ष्य सिद्धि हेतु अग्रसर हों। संघनायक साधना सुमेरू महापुरुष के चरण सरोजों में यही हमारा विनम्र श्रद्धा समर्पण होगा। - *पूरणराज अबानी-राष्ट्रीय महामंत्री*

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा की हिण्डौनशहर में बैठक सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं उसकी सहयोगी संस्थाओं, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न बहू बालिका मण्डल, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की संयुक्त वार्षिक साधारण सभा **रविवार दिनांक 04 अक्टूबर, 2015** को मध्याह्न

12-30 बजे बाबा पैलेस, मण्डावरा रोड़, हिण्डौनशहर में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

सभा में संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्रीमान मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा-जयपुर, शासन सेवा समिति के सह-संयोजक श्रीमान कैलाशचन्दजी हीरावत-जयपुर, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री पी. एस. सुराणा-चेन्नई, राष्ट्रीय संघ महामंत्री श्री आनन्दजी चौपड़ा-जयपुर, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री कैलाशमलजी दुगड़-चेन्नई, अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा-जयपुर, अ. भा. श्री जैन रत्न बहू बालिका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती इन्दिराजी बोहरा-चेन्नई, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, हिण्डौनशहर के अध्यक्ष श्री शीतलप्रसादजी जैन सहित संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के शीर्ष पदाधिकारीगण, कार्यकारिणी सदस्यगण एवं विभिन्न क्षेत्रों से पधारे संघ सदस्य महानुभावों ने भाग लिया।

बैठक का शुभारम्भ श्री मानेन्द्रजी ओस्तवाल के मंगलाचरण से हुआ।

सर्वप्रथम राष्ट्रीय संघाध्यक्ष महोदय श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना ने बैठक में पधारे हुए सभी पदाधिकारियों एवं संघ सदस्यों का स्वागत किया। राष्ट्रीय संघाध्यक्ष महोदय ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए परम पूज्य आचार्यप्रवर, परम पूज्य उपाध्यायप्रवर, श्रद्धेय गुरु भगवन्तों व पूज्या महासतीवृन्द के पावन आशीर्वाद, संघ-संरक्षक मण्डल के मार्गदर्शन, कार्याध्यक्ष महोदय, सभी उपाध्यक्षगण, संघ महामंत्री प्रभृति सभी साथियों के सहयोग के साथ सभी संघ बन्धुओं के मार्गदर्शन, सहयोग व सहकार के प्रति श्रद्धा व आभार व्यक्त किया।

राष्ट्रीय संघ महामंत्री श्री आनन्दजी चौपड़ा-जयपुर ने दिनांक 14 सितम्बर, 2014 को कोटा में आयोजित गत साधारण सभा की कार्यवाही का पठन किया, जिसे सर्वसम्मति से अनुमोदित किया गया।

राष्ट्रीय संघ महामंत्री श्री आनन्दजी चौपड़ा ने 03 अक्टूबर, 2015 की कार्यकारिणी की बैठक के निष्कर्षों एवं लिए गये निर्णयों की जानकारी सदन को दी। आचार्य श्री हीरा : आचार्य पदारोहण रजत वर्ष, संघ भवन नियमावली व धार्मिक पाठशाला संचालन आदि सभी निर्णयों को सर्वानुमति से अनुमोदित किया गया।

राष्ट्रीय संघ महामंत्री श्री आनन्दजी चौपड़ा ने कहा कि गत वर्ष में संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं द्वारा की गई प्रगति एवं उपलब्धियों की जानकारी वार्षिक प्रतिवेदन में प्रकाशित है जिसे आप सभी सदस्यों को वितरित किया जा चुका है। संघ सदस्यों द्वारा हर्ष ध्वनि के साथ वार्षिक प्रतिवेदन को स्वीकार किया गया। संघ कार्यालय द्वारा किये गये कार्यों की क्रियान्विति की जानकारी सदन को दी।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मंत्री श्री विनयचन्दजी डागा-जयपुर ने सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा गत वर्ष में सम्पन्न गतिविधियों की विस्तृत रिपोर्ट सदन के समक्ष प्रस्तुत करते हुए सभी संघ सदस्यों का सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया। जिनवाणी, साहित्य प्रकाशन, विद्वत परिषद् आदि कार्यक्रमों को सफलीभूत बनाने में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान करने वाले महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री कैलाशमलजी दुगड़-चेन्नई ने अपने वक्तव्य में कहा कि संघ ने मुझे मण्डल में कार्य करने का अवसर प्रदान किया जिसके लिए मैं संघ का आभारी हूँ जिनवाणी, साहित्य प्रकाशन आदि सभी गतिविधियों में कार्याध्यक्ष महोदय श्री सम्पतराजजी चौधरी-दिल्ली एवं मंत्री श्री विनयचन्दजी डागा-जयपुर जिनवाणी के सम्पादक डॉ. धर्मचन्दजी जैन-जोधपुर एवं मण्डल की पूरी टीम ने मुझे सहयोग प्रदान किया, उसके लिए सबको धन्यवाद। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मानसरोवर-जयपुर स्थित भूखण्ड पर आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान की तर्ज पर बालिकाओं के लिए छात्रावास निर्माण का कार्य प्रारम्भ हो गया है। पाँच-पाँच लाख का अर्थ सहयोग प्रदान करने वाले कई दानदाता तैयार हुए हैं। आप सभी इस कार्य हेतु हमारा सहयोग करें।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा-जयपुर ने गत वर्ष में श्राविका मण्डल द्वारा सम्पन्न गतिविधियों की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए सभी सहयोग करने वाले संघ सदस्यों का हार्दिक आभार व्यक्त किया।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अतिरिक्त महासचिव श्री लोकेशजी कुम्भट-जोधपुर ने युवक परिषद् की गतिविधियों की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत कर सहयोग करने वाले सभी पदाधिकारियों एवं संघ सदस्यों का आभार ज्ञापित किया तथा क्षमायाचना की।

संघ के राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष श्री बसन्तजी जैन-मुम्बई द्वारा संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के वर्ष 2014-2015 के अंकेक्षित लेखे व वर्ष 2015-2016 का अनुमानित बजट साधारण सभा के समक्ष प्रस्तुत किया गया, जिसे सर्वसम्मति से अनुमोदित किया गया।

संघ के राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष श्री बसन्तजी जैन-मुम्बई ने संघ के वर्ष 2015-2016 के आय-व्यय एवं वित्तीय अभिलेखों के अंकेक्षण हेतु रवि आर. जैन एसोसियेट-जोधपुर को नियुक्त करने का प्रस्ताव रखा जिसे सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया।

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष श्री बसन्तजी जैन-मुम्बई ने बताया कि इस वर्ष हमने संघ-सेवा सोपान के माध्यम से 20 लाख रूपये एकत्रित किये है। आने वाली नई टीम भी इस

कार्यक्रम को आगे बढ़ायेगी, ऐसी अपेक्षा है। गत बैठक तक गजेन्द्रनिधि/गजेन्द्र फाउण्डेशन के 98 ट्रस्टी थे, इस वर्ष 10 नये ट्रस्टी बनाये गये। कतिपय संघ सदस्यों की और स्वीकृति प्राप्त हुई है।

साधारण सभा में उपस्थित कुछ संघ सदस्यों से संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के सम्बन्ध में कुछ सुझाव प्राप्त हुए, जिनका यथोचित समाधान राष्ट्रीय संघाध्यक्ष महोदय द्वारा किया गया।

राष्ट्रीय संघाध्यक्ष महोदय श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना ने गत तीन वर्षों के मुख्य कार्यक्रमों, गतिविधियों, उपलब्धियों की ओर दृष्टिपात करते हुए भावाभिव्यक्ति दी कि जो कुछ हुआ है वह परम पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के मंगलमय आशीर्वाद, परम पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., परम पूज्य उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म.सा., निर्ग्रन्थ गुरु भगवन्तों एवं पूज्या साध्वीप्रमुखा प्रभृति पूज्या महासतीवृन्द के पावन कृपातिशय व आशीर्वाद से ही सम्भव हुआ है। जो कुछ भी कार्य मैं कर पाया उसमें परम पूज्य गुरुदेव के पावन सान्निध्य से प्राप्त बोध, उज्ज्वल पारिवारिक विरासत, पूज्य माता-पिता से प्राप्त संस्कारों, क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़ की मिट्टी से प्राप्त सैद्धान्तिक प्रतिबद्धता व मेरी मातृ संस्था श्री जैन रत्न विद्यालय में गुरुजनों से प्राप्त शिक्षा का ही सुपरिणाम है। संघ-संरक्षक मण्डल, साथी कार्यकर्त्ताओं व संघ-सदस्यों का पूर्णरूपेण सहयोग, स्नेह व समादर प्राप्त हुआ, उससे मेरा हृदय अभिभूत है। आधारभूत दृष्टिकोण की प्रस्तुति, संचालन समिति को सक्रिय किया जाना, उपाध्यक्षगण एवं मंत्रीगणों में विभागों व कार्यों का विभाजन, संघ एवं संघ की शाखाओं के दस्तावेज की सार-सम्भाल, विधिक कार्यवाही पूर्ति करने का विनम्र प्रयास, संघ कोष के सुदृढ़ीकरण का प्रयास, संघ विधान व सहयोगी संस्थाओं की नियमावलियों के पुनरवलोकन का प्रयास, मुमुक्षुजनों व चतुर्विध संघ के समीचीन अध्ययन की व्यवस्था, मुमुक्षु शिविरों का आयोजन, मुमुक्षुजनों के स्वास्थ्य-परीक्षण आदि कई कार्यों से मन में संतोष है। इस कार्यकाल में सम्पन्न दीक्षाओं के अवसर पर संघ ने मुझे संघ की ओर से आज्ञा प्रदान करने का अवसर प्रदान किया एवं परम पूज्य आचार्यप्रवर का मेरे में व्यक्त विश्वास मेरे इस कार्यकाल का ही नहीं जीवन में प्राप्त सर्वोत्तम उपहार है। कार्यकाल के प्रारम्भ में ही प्रेरणादायी धर्मपत्नी सुमित्राजी व कार्यकाल के अन्त में प्रज्ञाधनी दौहित्री मानसी का असामयिक बिछुड़ना मेरी इस संघीय यात्रा में दु:खद घड़िया रही हैं। चिन्तक साथी भाई अमिताभजी हीरावत का प्रतिभा पूर्ण मार्गदर्शन, कर्मठ साथी भाई श्री आनंदजी चौपड़ा का सतत सहयोग, भाई डॉ. पी. एस. लोढ़ा व डॉ. अशोकजी कवाड़ का सहयोग, प्रतिपल

प्रतिछाया की तरह साथ निभाने वाले भाई मानेन्द्रजी का साथ जीवन्त रहकर मेरे जीवन के माधुर्य में अभिवृद्धि करते रहेंगे। भाई प्रकाशजी, प्रभृति सभी कार्यालय के सहयोगियों का सहयोग, मेरे पुत्रों आदित्य व शुभेन्द्र, पुत्रवधुओं रिद्धि व सिद्धि का सहयोग, पूज्या मातुश्री का पावन आशीर्वाद तथा मेरी पुत्री प्रीति व सुधा की प्रेरणा संघ यात्रा को सुगम बनाने में सहयोगी रही है, उन सबके प्रति कृतज्ञता ही ज्ञापित कर सकता हूँ।

संघ सेवा सोपान (छात्रावास व स्वास्थ्य सहयोग हेतु जोधपुर, जयपुर, अहमदाबाद, चेन्नई व मुम्बई) के क्षेत्र में कार्य आगे न बढ़ पाना व देश के मुख्य स्थानों पर विधिवत् सुव्यवस्थित धार्मिक पाठशालाओं का शुभारम्भ न हो पाना मेरी असफलताएं रही हैं, जिनका मुझे मलाल रहेगा। वक्तव्य समाप्ति के साथ ही संघाध्यक्ष महोदय ने निवर्तमान संघाध्यक्ष का आसन ग्रहण करते हुए आगे कार्यवाही संचालन के लिए संघ संरक्षक मण्डल के सम्माननीय संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत से अनुरोध किया।

संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत ने रत्नसंघ की गौरव-गरिमा एवं चयन की प्रक्रिया पर विस्तृत रूप से प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें गर्व है कि हम सशक्त व गौरवशाली संघ के सदस्य हैं और यह गौरव गरिमा कायम रहे, यह हमारा दायित्व है। जैन धर्म का मौलिक इतिहास के दूसरे भाग में संघ संचालन की प्रणाली का वर्णन प्राप्त होता है। मुख्य रूप से दो प्रणालियाँ हैं :- (1) प्रजातंत्रीय प्रणाली (चुनाव) (2) मनोनयन प्रणाली (तंत्रीय)। यदि प्रजातंत्रीय प्रणाली अपनाई जाती है तो इस प्रणाली का कटु सत्य है कि प्रत्येक व्यक्ति में आगे बढ़ने की या अधिनायक बनने की भावना प्रबल होगी। उसके परिणामस्वरूप संघ में जोड़-तोड़, दलबदली, अनुशासनहीनता, कलह व मात्सर्य आदि विनाशकारी प्रवृत्ति पनपने लगती है। इसीलिये धार्मिक संघों में प्रजातंत्रीय प्रणाली सफल नहीं होती है।

जहाँ धर्मसंघ की व्यवस्था का प्रश्न है वहाँ मनोनयन प्रणाली में इस तरह के दोष उत्पन्न नहीं होते। जिन उद्देश्यों के साथ धर्म संघ की स्थापना की जाती है वे इस प्रणाली में प्राप्त किये जाते हैं। रत्नवंश की संघ-व्यवस्था में मनोनयन प्रणाली को ही संविधान में अपनाया गया है।

इस प्रणाली में संघ-संरक्षकगण व शासन सेवा समिति सदस्य मिलकर कार्यकारिणी का मनोनयन करते हैं। उपर्युक्त वर्णित इकाई स्वेच्छा से चुनाव नहीं करती है, बल्कि निर्णय करते समय पूर्ण निर्लिप्तता, निर्मोहता रखी जाती है। एक अध्यक्ष का चुनाव करते समय उसमें निम्न बातें देखी जाती है-

1. वह संघ व संघनायक के प्रति निष्ठावान हो।
2. गरिमामय व्यक्तित्व का धनी हो अर्थात् संघ में प्रभाव रखता हो।

3. समन्वय की शक्ति रखता हो, सब को साथ लेकर चलने वाला हो।
4. उदारमना हो, केवल वित्तीय नहीं, बल्कि सभी मायनों में नेतृत्व की क्षमता हो।
5. साधु-आचार व रत्नसंघ आचार का जानकार हो।
6. लिखने व बोलने की क्षमता रखता हो।
7. जीवन में साफ सुथरा हो।

मनोनयन हेतु सुझाव देने वाले सदस्य निम्न बातों का ध्यान रखावें-

1. यह धर्म संघ है, राजनैतिक संघ नहीं।
2. सुझाव व्यक्तिगत हो न कि किसी व्यक्ति विशेष को लाभ देने वाला।
3. सुझाव संघहित में हो न कि व्यक्तिगत हित में।
4. सुझाव देने वाले की स्वयं की पद प्राप्त करने की इच्छा प्रत्यक्ष या परोक्ष में न हो।
5. शक्ति प्रदर्शन के रूप में सुझाव को प्रस्तुत न करें।
6. यह ऐसा चुनाव नहीं है कि जिसमें मतपत्र पर ठप्पा लगाना आवश्यक हो या मुद्रित पत्र पर हस्ताक्षर करना। प्रस्तावित प्रत्याशी के गुण व सुझाव से संघ को लाभ होना चाहिये।

चयन प्रक्रिया के बारे में काफी भ्रान्तियाँ हैं। तीन वर्ष के कार्यकाल में द्वितीय वर्ष समाप्त होने के बाद व एक वर्ष शेष रहने पर यह प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। सुझाव आते हैं, उन पर विचार होता है। संरक्षक मण्डल की सभा होती है, जिसमें सभी पहलुओं पर चर्चा होती है। जो उपस्थित नहीं, उनसे सम्पर्क करके वरिष्ठ श्रावकों का परामर्श लिया जाता है।

यह हमारा सौभाग्य है कि हमारे संघ में व्यक्ति पद से सेवानिवृत्त होता है, कार्य से नहीं। बिना पद के निरन्तर सेवा का लाभ संघ को प्राप्त हो रहा है। संघ-सेवा कर्म निर्जरा का कारण है। यहाँ जो भी संघ की सेवा करना चाहता है, उसका स्वागत है। संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के सभी पदाधिकारी निष्ठावान हैं और उन्होंने तन-मन-धन से सेवाएँ प्रदान की हैं। अतः वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

संरक्षक-मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत ने संघ-संरक्षक मण्डल में नये संरक्षक के रूप में श्री रतनलालजी बाफना-जलगाँव, श्री नवरतनमलजी कोठारी-जयपुर, श्री सरदारसिंहजी कर्नावट-मुम्बई व श्री सुमेरसिंहजी बोथरा-जयपुर को तथा शासन सेवा समिति में डॉ. मंजुलाजी बम्ब-जयपुर को लिये जाने की जानकारी सदन को प्रदान की।

संरक्षक-मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत ने संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के अध्यक्षों एवं प्रमुख पदाधिकारियों की घोषणा करते हुए अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष हेतु श्री पी. एस. सुराना-चेन्नई, कार्याध्यक्ष हेतु श्री आनन्दजी चौपड़ा-जयपुर एवं डॉ. अशोकजी कवाड़-चेन्नई सम्यग्ज्ञान प्रचारक

मण्डल जयपुर के अध्यक्ष हेतु श्री पारसचन्दजी हीरावत-मुम्बई कार्याध्यक्ष हेतु श्री पदमचन्दजी कोठारी-अहमदाबाद एवं श्री प्रमोदजी महनोत-जयपुर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के अध्यक्ष हेतु श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा-जयपुर, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष हेतु श्री राजकुमारजी गोलेच्छा-पाली, कार्याध्यक्ष हेतु श्री राजेन्द्रजी लुंकड़-ईरोड़ व श्री लोकेशजी कुम्भट-जोधपुर तथा महासचिव हेतु श्री मनीषजी पी. लोढ़ा-जोधपुर के नाम घोषित किये। सदस्यों ने चारों नव-निर्वाचित अध्यक्षों एवं पदाधिकारियों को बधाई देते हुए अपना हर्ष व्यक्त किया।

मुणोत साहब ने बहू-बालिका मण्डल को श्राविका मण्डल के अन्तर्गत एक इकाई के रूप में मान्य करने की भी घोषणा की। उन्होंने संघ-संरक्षक मण्डल के निर्णयानुसार संघ, मण्डल, श्राविका-मण्डल एवं युवक परिषद् में दो कार्याध्यक्षों के होने का उल्लेख किया। श्री मोफतराजजी मुणोत ने कहा कि जब तक नई कार्यकारिणी का गठन नहीं हो जाता तब तक पुराने पदाधिकारी मनोनीत पदाधिकारियों के साथ यथावत् संघ कार्यो का संचालन करते रहेंगे।

नव निर्वाचित संघ अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराना ने उपस्थित सदस्यों का आभार व्यक्त करते हुए सदस्यों को बताया कि सर्वप्रथम जिनशासन गौरव परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का उपकार रहा कि उन्होंने मुझे स्वाध्याय एवं ब्रह्मचर्य की प्रेरणा प्रदान की। दूसरा उपकार तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. का रहा जिन्होंने अंगुलि पकड़कर धर्म-मार्ग पर चलना सिखाया एवं धर्म साधना करने के साथ संघ-सेवा की प्रेरणा प्रदान की। तीसरा उपकार संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत का रहा जिन्होंने मुझे अक्रियता के अंधकार से निकालकर सक्रियता के प्रकाश में लाकर खड़ा किया है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप सदैव मुझे सहयोग एवं सहकार देते रहेंगे। संघ में आत्मीय प्रेम, वात्सल्य एवं सौहार्द भावना बढ़े, ऐसा आप-हम-सब मिलकर प्रयास करें। मेरे सहयोगी के रूप में श्री आनंदजी चौपड़ा एवं डॉ. अशोकजी कवाड़ के रूप में सशक्त टीम दी है। मैं इस अवसर पर आप सभी संघ सदस्यों के समक्ष तीन सूत्रीय कार्यक्रम प्रस्तुत करना चाहूँगा (1) **गुरुभक्ति**-आप-हम सभी संघ सदस्य गुरुभक्ति में तल्लीन हो जायें। गुरुभक्ति स्वरूप गुरु हीरा के प्रति श्रद्धाभिव्यक्त करते हुए 'जन-जन प्यारा रे हीरा गुरु म्हारा रे' भजन की पंक्तियाँ प्रस्तुत की। गुरुभक्ति के रूप में गुरुदेव द्वारा प्रेरित सामूहिक रात्रिभोजन-त्याग महाअभियान में आज के दिन ही आप-हम-सब यह संकल्प करें कि सामूहिक रात्रि-भोज में हम भोजन नहीं करेंगे। सभा ने उसी समय हाथ खड़े कर सहमति जताई। (2) हम संघ-सदस्यों में आपसी प्रेम-सौहार्द एवं

वात्सल्य की भावना वृद्धिगत हो। मतभेद-मनभेद मिटाकर प्रेम के साथ संगठित होकर संघ के विकास हेतु कार्य करें। (3) हमारा संघ उत्तमोत्तम बने। आप और हम सभी कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करेंगे तो हमारा संघ ऊँचाईयों को छुएगा। मैं आपसे वादा करता हूँ कि आप लोगों के द्वारा दिए गए सुझावों का ध्यान रखूँगा एवं आपके सुझावों को व्यर्थ नहीं जाने दूँगा। जहाँ तक हो सकेगा, समाधान करने का प्रयास करूँगा। बस आप-सभी संघ-सदस्यों का सहकार एवं सहयोग मुझे प्राप्त होता रहे। गुरु हस्ती द्वारा रचित इस कविता की दो पंक्तियाँ प्रस्तुत करते हुए अपनी वाणी को विराम दूँगा- ''जगो जैनी सुनो बातें पड़े हो व्यर्थ क्यों बेगम, हमारे तुम तुम्हारे हम''।

संघ महामंत्री श्री आनंदजी चौपड़ा ने संघ-संरक्षक मण्डल, संघ व सहयोगी संस्थाओं के सभी पदाधिकारियों, कार्यालय-सदस्यों आदि का आभार व्यक्त करते हुए साधारण सभा की सुन्दर व्यवस्था के लिए श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, युवक परिषद्, श्राविका मण्डल हिण्डौनशहर के सभी कार्यकर्त्ताओं का हार्दिक धन्यवाद एवं आभार ज्ञापित किया तथा कहा कि सभी संघ-सदस्य हिण्डौन संघ की सेवाओं के प्रति हृदय से प्रसन्न हैं।

अन्त में एक लोगस्स के ध्यान से गत साधारण सभा से अब तक दिवंगत संत-सतीवृन्द व श्रावक-श्राविकाओं को श्रद्धांजलि समर्पित की गई। हर्ष-हर्ष, जय-जय के साथ बैठक समापन की घोषणा की गई। *-आनन्द चौपड़ा, तत्कालीन महामंत्री*

प्रमुख पदाधिकारियों का मनोनयन/चयन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, अखिल भारतीय, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के प्रमुख पदाधिकारियों का मनोनयन/ चयन इस प्रकार किया गया है-

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

1. श्री पी.शिखरमलजी सुराणा-चेन्नई	राष्ट्रीय अध्यक्ष
2. श्री आनन्दजी चौपड़ा-जयपुर	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
3. डॉ. अशोकजी कवाड़-चेन्नई	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
4. श्री पूरणराज अबानी-जोधपुर	राष्ट्रीय महामंत्री
5. श्री कैलाशमलजी भण्डारी-जोधपुर	राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री
6. श्री बसन्त जी जैन-मुम्बई	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
7. श्री नगराज जी मेहता-जोधपुर	राष्ट्रीय सह कोषाध्यक्ष

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

1. श्री पारसचन्दजी हीरावत-मुम्बई	अध्यक्ष
2. श्री पदमचन्दजी कोठारी-अहमदाबाद	कार्याध्यक्ष
3. श्री प्रमोदजी महनोत-जयपुर	कार्याध्यक्ष
4. श्री विनयचन्दजी डागा-जयपुर	मंत्री
5. श्री श्रीचन्दजी बेताला-जयपुर	कोषाध्यक्ष

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल

1. श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा-जयपुर	अध्यक्ष
2. श्रीमती मीनाजी गोलेछा-जयपुर	कार्याध्यक्ष
3. श्रीमती प्रमिलाजी दुग्गड़-चेन्नई	कार्याध्यक्ष
4. श्रीमती बीनाजी मेहता-जोधपुर	महासचिव
5. श्रीमती रेखाजी सुराणा-जोधपुर	कोषाध्यक्ष

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

1. श्री राजकुमारजी गोलेच्छा-पाली	अध्यक्ष
2. श्री राजेन्द्रजी लुंकड़-इरोड़	कार्याध्यक्ष
3. श्री लोकेशजी कुम्भट-जोधपुर	कार्याध्यक्ष
4. श्री मनीषजी पी. लोढ़ा-जोधपुर	महासचिव

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ

1. श्री ओमप्रकाशजी बांठिया-बालोतरा	संयोजक
2. श्री गोपाल जी अब्बाणी-जोधपुर	सचिव

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड

1. श्री अशोकजी चोरडिया-जोधपुर	संयोजक
2. श्री नवरतनजी गिड़िया-जोधपुर	सचिव

संघ-सेवा सोपान के अंतर्गत संघ एवं संघ से सम्बन्धित संस्थाओं के संचालन में निम्नानुसार सहयोग कर पुण्यार्जन करें

संघ-सेवा में योगदान

1. गजेन्द्र निधि/फाउण्डेशन ट्रस्टी-	1100000/- रुपये का अर्थ सहयोग।
2. संघ भूषण-	कम से कम तीन वर्ष तक प्रतिवर्ष 251000/-
3. संघ प्रभावक-	कम से कम तीन वर्ष तक प्रतिवर्ष 100000/-
4. संघ हितैषी-	कम से कम तीन वर्ष तक प्रतिवर्ष 51000/-
5. संघ पोषक-	कम से कम तीन वर्ष तक प्रतिवर्ष 21000/-
6. संघ सहयोगी-	कम से कम तीन वर्ष तक प्रतिवर्ष 11000/-
7. संघ प्रोत्साहक-	कम से कम तीन वर्ष तक प्रतिवर्ष 5000/-
8. अन्य सहयोग-	इच्छानुसार

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को सहयोग

1. साहित्य निधि संरक्षक-	100000/- एक मुश्त
2. साहित्य निधि स्तम्भ-	51000/- एक मुश्त
3. साहित्य निधि पोषक-	21000/- एक मुश्त
4. साहित्य प्रकाशन हेतु-	इच्छानुसार
5. साहित्य सदस्यता-	4000/-रुपये
6. जिनवाणी स्तम्भ सदस्यता-	21000/- रुपये
7. जिनवाणी संरक्षक सदस्यता-	11000/- रुपये
8. जिनवाणी सदस्यता (20 वर्ष)-	1000/ रुपये

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ को सहयोग

1. स्वाध्याय निधि संरक्षक-	100000/- रुपये एक मुश्त
2. स्वाध्याय निधि स्तम्भ-	51000/- रुपये एक मुश्त
3. स्वाध्याय निधि पोषक-	21000/- रुपये एक मुश्त
4. वार्षिक सदस्यता-	2100/- रुपये
5. अन्य सहयोग-	इच्छानुसार

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड हेतु

1. शिक्षा निधि संरक्षक-	100000/- रुपये एक मुश्त

2. शिक्षा निधि स्तम्भ- 51000/- रुपये एक मुश्त
3. शिक्षा निधि पोषक- 21000/- रुपये एक मुश्त
4. पाठ्यक्रम पुस्तक प्रकाशन सहयोग
5. वरीयता सूची में स्थान प्राप्त करने वाले परीक्षार्थियों को पदक
6. परीक्षार्थी पुरस्कार हेतु सहयोग
7. विशिष्ट वार्षिक सहयोग- 10000/- रुपये
8. संस्कार केन्द्र संचालन हेतु सहयोग
9. संस्कार केन्द्र पुरस्कार हेतु सहयोग

शरद्चन्द्रिका मोफतराज मुणोत श्री जैन रत्न वात्सल्य निधि हेतु

1. सदस्यता- 100000/- रुपये एक मुश्त
2. पारिवारिक सहयोग- 12000/- रुपये
3. छात्रवृत्ति- 6000/- रुपये प्रतिछात्र

सामायिक-स्वाध्याय भवन योजना हेतु सहयोग

1. बड़े स्थानक- प्रति स्थानक- 1100000, 500000, 251000, 100000 रुपये प्रतिवर्ष
2. छोटे स्थानक- प्रति स्थानक- 251000, 100000, 51000, 21000 प्रतिवर्ष

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना हेतु

छात्रवृत्ति- 12000/- रुपये प्रतिछात्र

जैनागम स्तोक वारिधि परीक्षा 10 जनवरी 2016 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ों) की कक्षा 1 से 7 तक की आगामी परीक्षा 10 जनवरी, 2016 को दोपहर 12.30 बजे से आयोजित की जाएगी। इच्छुक भाई-बहिनों से निवेदन है कि स्वयं बोर्ड की परीक्षा में भाग लें तथा अन्य को भी प्रेरित करें।

1. परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन पत्र भरकर बोर्ड कार्यालय में जमा कराने की अन्तिम तिथि 20 दिसम्बर 2015 है।
2. कम से कम 10 परीक्षार्थी होने पर परीक्षा केन्द्र नया प्रारम्भ किया जा सकता है।
3. परीक्षा से सम्बन्धित पुस्तकें शिक्षण बोर्ड कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।

4. सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार व मेरिट में आने वालों को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें- सुरेश बी. चोरड़िया, संयोजक-94440-28841, नवरतन गिड़िया, सचिव-94141-00759, धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार-93515-89694, शिक्षण बोर्ड कार्यालय, जोधपुर-0291-2630490, 2622623, फैक्स: 2636763, Website: jainratnaboard.com, E-mail: Shikshanboard jodhpur@gmail.com, info@jainratnaboard.com

संस्कार केन्द्रों के अध्यापकों की कार्यशाला सम्पन्न एवं केन्द्रों का परिवीक्षण

रविवारीय संस्कार शिविर तथा संस्कार केन्द्रों के अध्यापकों की गुणवत्ता में अभिवर्धन हेतु 22 नवम्बर 2015 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर में कार्यशाला आयोजित हुई। इसमें संस्कार शिविर के 13 केन्द्रों के 45 अध्यापक, 7 संयोजक एवं 8 कार्यकर्त्ता; जोधपुर के दस संस्कार केन्द्रों से 11 अध्यापक एवं 5 निरीक्षक तथा भोपालगढ़, बिलाड़ा, नागौर, बेगूं, मोरवन बांध केन्द्रों के अध्यापक उपस्थित थे। कार्यशाला श्री नरपतराज जी चौपड़ा के मुख्य आतिथ्य, श्री पूरणराज जी अब्बाणी, राष्ट्रीय महामंत्री अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की अध्यक्षता एवं श्री कैलाशमल जी भंडारी, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री व सुशीला जी बोहरा मार्गदर्शक, श्री नवरतन जी डागा, संयोजक, चातुर्मास व्यवस्था समिति नेहरू पार्क के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुई। श्री धर्मचन्द जी जैन, रजिस्ट्रार के मंगलाचरण के पश्चात् सचिव श्री नवरतन जी गिड़िया द्वारा स्वागत भाषण हुआ। कार्यशाला में श्री नेमीचंद जी जैन, प्रबंधक ने योग-प्राणायाम, ध्यान, प्रार्थना, प्रतिज्ञा, पाठ, गत पढ़ाई गई विषय-वस्तु का पुनरावर्तन, नया ज्ञान कैसे दिया जाए? आदि बिंदुओं को छूते हुए Demonstration देते हुए शिक्षण दिया। श्री धर्मचन्द जी जैन, रजिस्ट्रार ने उच्चारण शुद्धि के नियमों को उदाहरण सहित समझाते हुए सरल सुबोध भाषा में जानकारी कराई। अनेक महानुभावों तथा अध्यापिकाओं ने समस्याएँ व सुझाव भी रखे, उन सभी सुझावों को बोर्ड की कार्यकारिणी की बैठक में गंभीरता से विचार करने हेतु नोट किया गया और कुछ का समाधान भी किया गया। श्री राजेश जी भंडारी, पाठशाला प्रभारी द्वारा संस्कार केन्द्रों व रविवारीय शिविरों की प्रगति के बारे मे जानकारी देते हुए सभी अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यशाला से पूर्व श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर के प्रबंधक श्री नेमीचन्द जी जैन ने 8 से 13 अक्टूबर 2015 तक पोरवाल क्षेत्र में महावीर भवन,

आलनपुर, हाउसिंग बोर्ड, बजरिया (सवाईमाधोपुर), चौथ का बरवाड़ा, सूरवाल, कुश्तला, अलीगढ़-रामपुरा की धार्मिक संस्कार पाठशालाओं का परिवीक्षण किया तथा आवश्यकतानुसार निर्देश दिये।

श्राविका मण्डल का पल्लीवाल क्षेत्र में दो दिवसीय प्रवास कार्यक्रम सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता-जोधपुर, श्रीमती अरूणाजी कर्नावट-जयपुर, श्रीमती जयाजी गोखरू-जयपुर ने 13 अक्टूबर, 2015 को आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त कर हिण्डौनशहर के श्री राजेश जी जैन, श्रीमती मोहिनीदेवी जैन- आलनपुर के सहयोग से सर्वप्रथम भरतपुर, पहरसर एवं नदबई में श्रावक-श्राविकाओं से सम्पर्क साधकर संघ के प्रति श्रद्धा समर्पण एवं सामायिक, प्रतिक्रमण, धोवन पानी के लिए विशेष प्रेरणा कर आत्मीयता बढ़ाने का प्रयास किया। 14 अक्टूबर, 2015 को बरगमा ग्राम शाखा में आई शिथिलता को दूर करने का प्रयास कर साप्ताहिक सामायिक सामूहिक रूप से स्थानक में करने एवं धोवन पानी का उपयोग करने की प्रेरणा की गई।

सैवाला ग्राम में नई शाखा का गठन किया गया, जिसमें श्रीमती मायाजी जैन को अध्यक्ष एवं श्रीमती हेमलताजी जैन को मंत्री मनोनीत किया गया। तत्पश्चात् गंगापुरसिटी, नसिया कॉलोनी-गंगापुरसिटी एवं करौली में शाखाओं का दौरा कर आई शिथिलताओं को दूर करने का प्रयास किया गया।

15 अक्टूबर, 2015 को श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा एवं श्रीमती बीनाजी मेहता द्वारा अलवर क्षेत्र में प्रवास कार्यक्रम के माध्यम से शाखा को उन्नत करने की प्रेरणा की गई। श्राविका मण्डल द्वारा प्रतिमाह प्रवास कार्यक्रम के माध्यम से धर्म-प्रभावना की जा रही है। सन्त-सतियों के दर्शन-वन्दन के साथ राष्ट्रीय श्राविका-मण्डल के सदस्यों द्वारा स्थानीय श्राविका-मण्डल को संघ की विविध गतिविधियों से जोड़ने की प्रेरणा की जाती है। सूरत, उमरगांव रोड़ में अगस्त में तथा पीपाड़ आदि स्थानों पर नवम्बर में पधारने पर भी श्राविका मण्डल की पदाधिकारियों द्वारा ऐसी ही प्रेरणाएं की गईं। *-पूर्णिमा लोढ़ा*

द्विदिवसीय आध्यात्मिक चेतना आयाम शिविर सम्पन्न

आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 53 वीं दीक्षा जयन्ती के शुभ अवसर पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा 15-16 नवम्बर, 2015 को हिण्डौन शहर में 'आध्यात्मिक चेतना आयाम' क्षेत्रीय शिविर का आयोजन किया गया। प्रातः 6 बजे से

ध्यान, प्रार्थना, भक्तामर स्तोत्र, संकल्प के साथ शिविर का प्रारम्भ हुआ। शिविर के पाठ्यक्रम में बारह व्रत, चौदह नियम, देव-गुरु-धर्म के प्रति श्रद्धा, गुरु के प्रति समर्पण आदि पर आगम के माध्यम से प्रकाश डाला गया।

इस शिविर में श्राविका मण्डल के शीर्ष पदाधिकारी श्रीमती मीनाजी गोलेच्छा-कार्याध्यक्ष, महासचिव तथा पल्लीवाल क्षेत्र के हिण्डौनशहर, गंगापुरसिटी, सवाईमाधोपुर, भरतपुर, नदबई, बरगमा आदि क्षेत्रों से 200 श्राविकाओं व बालिकाओं ने भाग लिया। स्वाध्याय विद्यापीठ के प्राचार्य श्री प्रकाशचन्दजी जैन-जयपुर, श्री राकेशजी जैन-जयपुर, श्रीमती मोहनकौरजी जैन-जोधपुर ने अध्यापन का कार्य करवाया तथा श्राविका मण्डल सचिव श्रीमती अरूणाजी कर्नावट-जयपुर ने शिविरार्थियों को ध्यान करवाया।

रात्रि भोजन-त्याग के अभियान में बढ़ें आगे

चेन्नई- आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की विशेष प्रेरणा से रात्रि-भोजन त्याग के अभियान में अधिक से अधिक सदस्यों को जोड़ने हेतु एक संगठन बनाया गया है। श्री विमलचंद सुराणा, श्री आर. नरेन्द्र कुमार कांकरिया एवं श्री प्रकाशमल जी बोथरा इस संगठन के प्रमुख सदस्य हैं। इस कार्य में जुड़ने वाले कार्यकर्त्ताओं की सूची इस प्रकार हैः- **साहुकारपेट-कोंडीतोप-** श्री आर. नरेन्द्रकुमार जी कांकरिया (9841148948), श्री चंपालालजी बोथरा (9444008284), श्री प्रकाशचंदजी ओस्तवाल (9444489872), श्री महावीरचंदजी नाहर (7200099000), श्री गौतमचंद जी बागमार (9940083434), श्री कमलेश किशोर जी कांकरिया (9380904400), **किलपाक-केलिश-** श्री सुगनचंदजी बोथरा (9444367995), श्री दिनेशकुमारजी बाफना (9444477200) **सुलै-पुरूषवाक्कम-** श्री प्रकाशमलजी बोथरा (9383691647), श्री महावीरचंदजी ओस्तवाल (9445383075), श्री जवाहरलालजी कर्णावट (9444063432), श्री महेन्द्रकुमारजी बोहरा (9444072714) **नंगनल्लूर-** श्री गौतमचंदजी कटारिया (8148282816) **आलन्दूर-सैदापेठ-** श्री प्रकाशचंदजी मूथा (9884554801) **वेलेचेरी-सेल्यूर-** श्री पन्नालालजी कोठारी (9444165821) **अन्नानगर-पाडी-कोरटुर-** श्री उम्मेदराजजी हुण्डीवाल (9840718382) **कलाडीपेठ-टोलगेट-नई धोबी पेठ-** श्री रमेशकुमारजी कांकरिया (9841045921) **तिरूवानमियूर-बेसन्त नगर-बेसिन बीच-अडियार-** श्री अशोक कुमारजी बागमार (9841028917) **चिन्तादरीपेठ-** श्री महावीरचंदजी ललवानी- (9840110357) **पल्लीपेठ-** श्री प्रकाशचंदजी लुणिया (9443482380) **अयनावरम-विल्लीवाक्कम-** श्री

राजेन्द्रकुमारजी सांखला (9444455575), श्री पदमचंदजी सुराणा (9043905742) **वेपेरी-** श्री बी नवरत्नमलजी बागमार (9840036251) **आवड़ी एवं अम्बतूर-** श्री गौतमचंदजी कवाड़ (9444054522) **एम.एम.डी.ए. कोलोनी-चूलैमेडु** -श्री गौतमराजजी सुराणा (9940558888) **पल्लावरम-क्रोमपेठ-ताम्बरम-** श्री दिनेशकुमारजी हुण्डीवाल (9444341567) **मैलापुर-** श्री पदमचंदजी सुराणा (9940664242) **एम.के.बी. नगर-मांदावरम-** श्री ए. नवरत्नमलजी बागमार (9444051065) **कुरूकपेट-एम.सी. रोड़-** श्री रतनलालजी बोथरा (8015333894) **अध्यक्ष-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु-** श्री महेन्द्रकुमारजी कांकरिया (9444051313)

जिन्होंने दिन में प्रीति भोज रखने के लिये अपनी सहमति प्रदान की है, उनकी सूची इस प्रकार है:-1. श्री दुलीचंद जी अरूणकुमार जी बागमार, किलपाक, चेन्नई 2. श्री गणपतराज जी हेमन्तकुमारजी बागमार, कोयम्बतूर 3. श्री पदमचंदजी सेठिया, साहूकारपेठ, चेन्नई 4. श्री शान्तिलाल जी विजयराजजी चौधरी, चेन्नई 5. श्री प्रसन्नराजजी पदमचंदजी कवाड, करयानचावड़ी, चेन्नई 6. श्री रूपराजजी राजेन्द्रकुमारजी सेठिया, साहुकारपेट, चेन्नई।

-विमलचंद सुराणा (मो. 9444511110)

अलवर में वीतराग ध्यान-साधना शिविर

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान में आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिंतक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में एवं सुश्री नेहा जी चौरड़िया के संचालन में वीतराग ध्यान साधना शिविर निम्नानुसार आयोजित होने जा रहा है-**आयोजन तिथि-** 17 दिसम्बर, 2015 सायं 4 बजे से 27 दिसम्बर, 2015 सायं 4 बजे तक। **आवेदन पत्र भेजने की अंतिम तिथि-** अलवर के लिये- 26 नवम्बर, 2015। **अलवर के बाहर से आगुन्तकों के लिये-** 7 दिसम्बर, 2015, **शिविर स्थल-** श्री अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा, बी-ब्लॉक, हसन खां, मेवात नगर, अलवर (राज.) **सम्पर्क सूत्र-** श्री नवरतनमल जी भंसाली, संयोजक-9844158943, 7737361611, 9314506509, **कार्यालय-** आचार्य हस्ती, आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) **सादर सौजन्य-** श्री स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, अलवर, फोन-0144-2343837

संस्कारम् आराधना का परीक्षा परिणाम घोषित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न बहू-बालिका मण्डल द्वारा 'संस्कारम्' पुस्तक पर अप्रैल 2015 में खुली किताब प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इसके अन्तर्गत

मूल्यांकन हेतु 1330 उत्तर पुस्तिकाएँ प्राप्त हुईं। सभी प्रतिभागियों को परीक्षा परिणाम पोस्टकार्ड द्वारा भेजा गया है। वरीयता सूची इस प्रकार है-

आदर्श उपासिका-21,000 रुपये-	श्रीमती भावना जैन-ठाणे	536.50
सुसंस्कृत- 11,000 रुपये-	श्रीमती मोना मेहता-पाली	536.00
प्रज्ञावान- 5,100 रुपये-	श्रीमती मधुबाला ओस्तवाल-नासिक	535.50

ज्ञानवान- 3,100 रुपये- 1. श्रीमती संगीता बोहरा, पाली (534.50) 2. श्रीमती संगीता जैन, जोधपुर (534.50) 3. श्रीमती स्वीटी छल्लाणी, अजमेर (535.00) 4. श्रीमती रुचिका लुणावत, जोधपुर (535.00) 5. श्रीमती वंदना नाहर, चंगोटोला (535.00) 6. श्रीमती मंगला पीचा, गोठी (535.00) 7. सुश्री दिव्या सालेचा, जोधपुर (535.00) 8. सुश्री प्रतीक्षा सालेचा, जोधपुर (535.00) 9. सुश्री रुचिता सुराणा, गोठी (535.00) 10. श्रीमती रेखा भण्डारी, बैंगलुरू (535.00)।

दर्शनवान- 2,100 रुपये- 1. श्रीमती सुनीता मेहता, जोधपुर (532.50) 2. श्रीमती कविता जैन, जलगाँव (532.50) 3. श्रीमती अर्पिता मेहता, अहमदाबाद (532.50) 4. श्रीमती ममता जैन, बैंगलुरू (532.50) 5. श्री भगवानराज सिंघवी, पाली (533.00) 6. श्रीमती भावना जैन, काड़ी (533.00) 7. श्रीमती ममता सिंघवी, पाली (533.00) 8. सुश्री अक्षिता जैन, दिल्ली (533.00) 9. श्रीमती रानू बोहरा, पाली (533.50) 10. सुश्री राजुल जैन, अजमेर (534.00)

दृढ़धर्मी- 1,100 रुपये- 1. श्रीमती सरिता चौरडिया, जोधपुर (531.50) 2. श्रीमती शीतल छाजेड, खारगांव (531.50) 3. श्रीमती शशि भण्डारी, मुम्बई (531.50) 4. श्रीमती वनिता बोहरा, जोधपुर (531.50) 5. श्री पंकज भण्डारी, जोधपुर (531.50) 6. श्रीमती अपना रांका, जलगाँव (531.50) 7. श्रीमती हेमलता सिंघी, देवलानी (531.50) 8. श्रीमती प्रतिभा गाँधी, पुणे (531.50) 9. श्रीमती स्नेहा पटोरा, बारां (531.50) 10. श्रीमती विद्या सिंघवी, धार (532.00) 11. श्रीमती रेखा मोदी, अजमेर (532.00) 12. सुश्री अंकिता नाहर, अजमेर (532.00) 13. श्रीमती सोनिया चौपड़ा, मुम्बई (532.00) 14. सुश्री भाग्यवंती तातेड़, जोधपुर (532.00) 15. श्री देवेन्द्रनाथ मोदी, जोधपुर (532.00) 16. श्री महेन्द्र कुमार सुमन, पाली (532.00) 17. श्रीमती रेखा तलेसरा, बैंगलुरू (532.00) 18. सुश्री श्वेता जैन, धूले (532.00) 19. सुश्री ज्योति, पाली (532.00) 20. श्रीमती सुधा मारू, बारां (532.00)।

प्रियधर्मी- 500 रूपये- 1. श्रीमती सुरेखा भण्डारी, नासिक (528.50) 2. श्री संदीप छाजेड, बाड़मेर (528.50) 3. श्रीमती पल्लवी किशोर हिरण, नासिक (528.50) 4. सुश्री

सपना बोकड़िया, बाड़मेर (528.50) 5. श्रीमती नीलम मेहता, जोधपुर (529.00) 6. श्रीमती मनीषा भण्डारी, जोधपुर (529.00) 7. श्रीमती जयश्री सेठिया, धुले (529.00) 8. श्रीमती सुवर्णा जगदीश बोथरा, भरुच (529.00) 9. श्रीमती अलका गोलेच्छा, झालावाड़ (529.00) 10. श्रीमती निधि जैन, सवाईमाधोपुर (529.00) 11. श्रीमती आशा गोगड़, अहमदाबाद (529.00) 12. श्रीमती विद्या संचेती, जोधपुर (529.00) 13. श्रीमती मधुबाला लुणावत, नागौर (529.00) 14. श्रीमती कोमल ओस्तवाल, नागौर (529.00) 15. श्री कार्तिक सर्राफ, पाली (529.00) 16. सुश्री प्रेक्षा सालेचा, बालोतरा (529.50) 17. श्रीमती प्रमिला कीमती, इन्दौर (529.50) 18. सुश्री दीपिका जैन, अलीगढ़ (529.50) 19. श्रीमती भारती चतुरमूथा, शिरपुर (529.50) 20. श्रीमती समीक्षा नाहर, नन्दुरा (529.50) 21. श्रीमती स्वीटी कोचेटा, किशनगढ़ (529.50) 22. श्रीमती वंदना बोरा, नासिक (530.00) 23. श्रीमती पूर्णिमा चोरडिया, जलगाँव (530.00) 24. श्री वैभव जैन, आगरा (530.00) 25. सुश्री दक्षा कुमारी सालेचा, बालोतरा (530.00) 26. श्रीमती डिम्पल ओस्तवाल, पाली (530.00) 27. दीपेश जैन, अलीगढ़ (530.00) 28. श्रीमती कविता बांठिया, जोधपुर (530.00) 29. श्रीमती डिम्पल कुम्भट, पाली (530.00) 30. सुश्री जया जैन, भरतपुर (530.00) 31. श्री महावीर जैन, धुले (530.00) 32. सुश्री नेहा भण्डारी, पीपाड़ (530.50) 33. सुश्री रक्षिता मेहता, जोधपुर (530.50) 34. श्रीमती मैनादेवी नाहटा, कोलकाता (530.50) 35. श्रीमती स्नेहा ओस्तवाल, जलगाँव (530.50) 36. श्री विजेश कुमार जैन, झालावाड़ (530.50) 37. श्रीमती आरती जैन, जोधपुर (530.50) 38. श्रीमती कमला चौपड़ा, जोधपुर (530.50) 39. सुश्री पूजा जैन, जोधपुर (530.50) 40. सुश्री बबीता जैन, भरतपुर (530.50) 41. सुश्री स्मिता जैन, धुले (530.50) 42. श्रीमती सुनीता मरलेचा, अहमदनगर (531.00) 43. श्री राजकुमार बांठिया, पाली (531.00) 44. श्रीमती प्रमिला जैन, इन्दौर (531.00) 45. सुश्री आरती तातेड़, जोधपुर (531.00) 46. सुश्री राशि जैन, कोटा (531.00) 47. सुश्री सारिका पीचा, गोठी (531.00) 48. श्रीमती पूजा जैन, बैंगलुरू (531.00) 49. श्री प्रवीण कुमार जैन, बैंगलुरू (531.00) 50. श्रीमती अंशिता जैन, जयपुर (531.00)।

-नीलू डागा, बीकानेर

आचार्य श्री हीरा के 53वें दीक्षा दिवस पर गुणगान एवं तप-त्याग

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर जिनशासन गौरव पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा का 53वां दीक्षा दिवस कार्तिक शुक्ला षष्ठी दिनांक 17 नवम्बर, 2015 को सामूहिक

सामायिक-साधना, एकाशन व्रत आदि के साथ मनाया गया तथा विभिन्न स्थानों पर पूज्य आचार्यप्रवर के गुणगान किए गए। जहाँ पर आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं सन्त-सतियाँ जी विराजित हैं, वहाँ तो तप-त्याग की आराधना हुई ही, अन्यत्र भी तप-त्याग एवं गुणानुवाद किए गए। सन्त एवं महासती मण्डल के सान्निध्य में सम्पन्न साधना आदि का विवरण पृथक् से तत् तत् स्थलों पर दिया गया है। यहाँ चेन्नई से प्राप्त विवरण प्रकाशित है। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान में अनेक श्रद्धालु भाई-बहनों की उपस्थिति में आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 53वां संयम ग्रहण दिवस जप-तप-त्याग, तीन-तीन सामायिक साधनापूर्वक मनाया गया। प्रातःकाल स्थानांग सूत्र व दशवैकालिक सूत्र के वाचन के साथ प्रारम्भ हुए कार्यक्रम में श्री पी.एम. चोरडिया, महावीर तातेड़, सुरेश जी हिंगड़, श्रीमती संगीताजी बोहरा, श्री चंपालालजी बोथरा, श्री गौतमचन्दजी सुराणा, श्री तरुणजी बोहरा, श्री कैलाशमलजी दुग्गड़, श्री जवाहरलालजी कर्णावट, श्रीमती विनीताजी सुराणा, श्री आनन्दजी चोरड़िया, श्री ज्ञानचन्दजी बागमार ने आचार्य भगवन्त के व्यक्तित्व व प्रभावी प्रेरणाओं पर अपनी भावाभिव्यक्ति की। श्राविका मण्डल ने हीराष्टक प्रस्तुत किया। संघ की ओर से संघ सह-सचिव श्री आर.नरेन्द्र जी कांकरिया ने पूज्य आचार्य श्री के चेन्नई चातुर्मास में समाज-सुधार की अभिनव क्रान्ति व अनेक उपलब्धियों का वर्णन करते हुए आचार्य भगवन्त के दीर्घायु होने की संघ की ओर से भावना की। दीक्षा दिवस कार्यक्रम का संचालन करते हुए सहसचिव ने आचार्य भगवन्त की प्रभावी प्रेरणा सामूहिक रात्रिभोज का आयोजन न हो, इस हेतु श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु के अंर्तगत श्री विमलचंदजी सुराणा के नेतृत्व में एक संगठन रूप में पूरे चेन्नई महानगर के क्षेत्रों में कार्यरत टीम की घोषणा की। वर्षा से पीड़ित कच्ची बस्ती व सड़कों पर जन-जीवन को संघ की ओर से त्रिदिवसीय नाश्ता व भोजन उपलब्ध करवाया गया। दीक्षा-दिवस के पुनीत अवसर पर सिद्धि-तप करने वाले भाई-बहनों का सम्मान सत्कार किया गया।

-आर. नरेन्द्र कांकरिया, सह-सचिव

संक्षिप्त-समाचार

हैदराबाद- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, ग्रेटर हैदराबाद एवं जैन स्वाध्याय संघ, हैदराबाद के संयुक्त तत्त्वावधान में जैन धार्मिक शिक्षण संस्कार शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 177 बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल आदि के अध्ययन के साथ स्तवन, भाषण आदि प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं।

जोधपुर- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर द्वारा आयोजित स्वधर्मी वात्सल्य योजना के

अन्तर्गत सभी केन्द्रों पर संचालित पाठशालाओं एवं रविवारीय संस्कार शिविर में पढ़ने वाले बालक-बालिकाओं को दान पेटी दी गई है, जिसमें उन्हें नित्य 1 रूपये की राशि दान-पेटी में दान करनी है। यह राशि जरूरतमंद, गरीब बच्चों के स्कूल फीस, किताबें-कॉपी तथा अन्य जगह पर खर्च की जाएगी। इस योजना की अधिक जानकारी हेतु आपके क्षेत्र में चल रही पाठशाला एवं रविवारीय संस्कार शिविर के केन्द्र पर सम्पर्क कर सकते हैं तथा निम्नांकित व्यक्तियों से भी आप इस योजना हेतु सम्पर्क कर सकते हैं- 1. धीरज डोसी, प्रभारी (9462543360) 2. अंकित लोढ़ा, संयोजक (9352775694) 3. कौशल बोथरा, कार्याध्यक्ष (9414133266) *- धीरज डोसी, योजना प्रभारी*

पाली- आचार्य श्री शुभचंद्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती श्री गुणवंतमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 2 एवं महासतीजी श्री पूरिमाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 6 के सान्निध्य में सामायिक-स्वाध्याय भवन में विजयदशमी का दिवस पूज्य आचार्य श्री भूधरजी म.सा. के जन्म-स्मृति दिवस के रूप में धर्म-ध्यान, त्याग-तप एवं साधना-आराधना के साथ मनाया गया। पंचरंगी की आराधना, उपवास, आयम्बिल, नीवी, एकासन आदि व्रत के प्रत्याख्यान हो रहे हैं।

बधाई

मोहला- श्री तेजकरण जी जैन (श्री श्रीमाल) को 01 नवम्बर 2015 को छत्तीसगढ़ शासन द्वारा 'छत्तीसगढ़ राज्य अलंकरण' से विभूषित किया गया। श्री जैन को यह अलंकरण अहिंसा एवं गौरक्षा के क्षेत्र में अविस्मरणीय कार्यों के लिए राज्यपाल महामहिम बलरामदास टंडन की अध्यक्षता, केन्द्रिय वित्त, सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री अरुण जेटली के मुख्य आतिथ्य एवं डॉ. रमनसिंह छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के विशिष्ट आतिथ्य में दिया गया। सम्मान स्वरूप उन्हें शाल, श्रीफल, स्मृति चिह्न, सम्मान-पत्र सहित 2 लाख रुपये की राशि भी भेंट की है।

सुमेरगंजमण्डी- श्री कविश कुमार जैन पुत्र श्री पारस चंद जैन ने दिल्ली विश्वविद्यालय के माइक्रोबायोलॉजी विभाग से "Enhanced cellulose production from a thermophilic mould Thermoascus aurantiacus RCKK and its applications" विषय पर शोध-कार्य पूर्ण किया है। हाल ही में आपने स्पेन की यूनिवर्सिटी ऑफ बार्सिलोना, बार्सिलोना शहर में आयोजित शोध कार्यशाला Biomicroworld-2015 में अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। आपका चयन पूर्व में भारतीय खाद्य निगम में भी हो चुका है। वर्तमान में आप दिल्ली विश्वविद्यालय में ही रिसर्च क्षेत्र मे कार्यरत हैं। आप एवं आपका सम्पूर्ण परिवार देव-गुरु-धर्म के प्रति पूर्ण समर्पित है।

श्रद्धाञ्जलि

महासती श्री वैराग्य श्री जी म.सा. का देवलोकगमन

सोरापुर(कर्नाटक)- आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा की सुशिष्या महासती श्री वैराग्य श्री जी म.सा. का तेरह माह पाँच दिन के संयम-पर्याय में 7 नवम्बर, 2015 को देवलोकगमन हो गया। आपकी भागवती दीक्षा 3 अक्टूबर, 2014 को शांतिनगर, बैंगलोर में महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के मुखारविन्द से सम्पन्न हुई थी। दीक्षा से पूर्व आप श्रावकरत्न श्री धनरूपचंद जी मेहता, पीपाड़-बैंगलोर की धर्म सहायिका रही। आपने जीवन के संध्याकाल में संयम धारण कर प्रबल पुरुषार्थ का परिचय दिया। संयम जीवन में भी सेवाभावना, स्वाध्याय-साधना से आप आत्मशुद्धि के मार्ग पर बढ़ती रहीं। इस वर्ष सहवर्ती साध्वीवृन्द के साथ विचरण करते हुए कर्नाटक के काफी क्षेत्रों को फरसा। हिण्डौन में आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं जोधपुर में उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. की सन्निधि में साध्वी वैराग्यश्री की विशेषताओं का गुणानुवाद सभा में उल्लेख करते हुए श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई।

बैंगलोर में 10 नवम्बर, 2015 को प्राज्ञ सम्प्रदाय के आचार्य श्री सुदर्शनलाल जी म.सा. के सान्निध्य में महासती वैराग्यश्री जी म.सा. की गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। सभी वक्ताओं ने महासतीजी के जीवन-चरित्र के विभिन्न पक्षों को रेखांकित करते हुए भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। अन्त में चार लोगस्स का काउस्सग कर आचार्य श्री द्वारा मंगल पाठ प्रदान किया गया।

जोधपुर- संघनिष्ठ, समर्पित, सुश्रावकरत्न श्री रिखबचन्दजी मेहता का 30 अक्टूबर,

2015 को मुम्बई में परलोकगमन हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक एवं स्वाध्याय करते थे। अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्व तिथियों पर दया-संवर करने वाले घोड़ों के चौक स्थानक के प्रमुख श्रावकों में अग्रणी थे। आप संत-सतीवृन्द की सेवा में पधारकर नियमित दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त करते थे। आप अनेक थोकड़ों के जानकार थे। जब भी मौका मिलता सन्त-सतीवृन्द एवं श्रावक-श्राविकाओं को थोकड़े सिखाने में सदैव तत्पर रहते थे। जरूरतमन्द भाई-बहिनों का गुप्त रूप से सहयोग करने में तत्पर रहे। आगत महानुभावों के आतिथ्य-सत्कार में भी उनकी महनीय सेवाएँ रही हैं।

आपने श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के संयुक्त मंत्री तथा श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर में सचिव के रूप में संघ को

अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान कीं। श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के माध्यम से उन्होंने वरिष्ठ स्वाध्यायी के रूप में वर्षों तक पर्युषण सेवाएँ प्रदान कीं। रत्नसंघ द्वारा संचालित सभी प्रवृत्तियों में मेहता परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता रहा है।

सूरवाल (सवाईमाधोपुर)- सुश्राविका श्रीमंती पुष्पादेवी जी जैन धर्मपत्नी स्व.श्री

रामकरण जी जैन चौधरी का समाधिभावों में 10 नवम्बर 2015 को देवलोकगमन हो गया। श्राविकारत्न धर्माराधना-तपाराधना में सदैव अग्रसर रहती थीं। प्रतिदिन सामायिक, प्रार्थना एवं नवकारसी तप की आराधना किया करती थी। लगभग पिछले 40 वर्षों से रात्रि चौविहार के त्याग थे। इन्होंने दो बार वर्षीतप की आराधना भी की। ग्राम में पधारने वाले चारित्रात्माओं की सेवा-शुश्रूषा के साथ आतिथ्य-सत्कार में सदैव आगे रहा करती थी। विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा आदि ठाणा के शेखेकाल लगभग 10 दिन विराजने पर शय्यातर का लाभ लिया। आपके बड़े सुपुत्र आतिथ्य-सत्कार एवं सामाजिक कार्यों में सक्रिय हैं वहीं छोटे सुपुत्र आयुर्वेदिक राजकीय चिकित्सक होने से यथासमय चारित्रात्माओं की श्रमणोचित उपचार में समर्पित रहते हैं।

जोधपुर- कर्मशील व्यक्तित्व, गंभीरमना सुश्रावक श्री करोड़ीमलजी लूंकड सुपुत्र स्व. श्री

किशोरमल जी लूंकड का 71 वर्ष की वय में 8 नवम्बर 2015 को समताभावपूर्वक स्वर्गगमन हो गया। कर्त्तव्यपरायणता, सहजता, सेवाभावना जैसे गुणों से समलंकृत आपका जीवन संत-सतीवृन्द की सेवा में सदैव समर्पित रहा। आपकी धर्मसहायिका सुश्राविका श्रीमती संतोषजी तप-प्रत्याख्यान के साथ साध्वी प्रमुखा शासन प्रभाविका श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. एवं संत-सतीवृन्द की सेवा में सदैव अग्रणी रहती हैं।

जोधपुर- दृढ़धर्मी सुश्राविका श्रीमती बुद्धकंवरबाईजी का 05 नवम्बर 2015 को

परलोकमगन हो गया। सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना जैसे सद्‌गुणों से आपका जीवन दीप्तिमान था। वे सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदैव तत्पर रहती थीं। संत-सतीवृन्द की आहार-विहार सेवा में भी उनकी व खिंवसरा परिवार की महनीय सेवाएँ प्राप्त होती रही हैं। प्रतिदिन घोड़ों के चौक स्थानक पधार कर सामायिक-स्वाध्याय तथा अष्टमी-चतुर्दशी आदि पर्व-तिथियों पर दया-संवर की आराधना करने वालों में आप अग्रणी थीं। अपने सम्पर्क में आने वाली श्राविकाओं को भी आप दयाव्रत आराधन की प्रेरणा करती थीं।

जयपुर- श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री प्रकाशचंदजी कटारिया (सांभर वाले) का 21 अक्टूबर, 2015 को 69 वर्ष की वय में निधन हो गया। आप नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय करते थे। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि संतों के प्रति आप पूर्ण समर्पित थे। मानसरोवर के महावीर भवन स्थानक में आपने समय-समय पर अपनी सेवाएँ प्रदान कीं।

जयपुर- सरल स्वभावी सुश्राविका श्रीमती सुभद्रा जी जैन धर्मसहायिका श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन का 2 नवम्बर, 2015 को 59 वर्ष की वय में संथारे के साथ स्वर्गवास हो गया। पिछले 25 वर्ष से आप नवकारसी तप कर ही थीं। आपने अपने जीवन में वर्षी तप के साथ कई अन्य तपस्याएँ, उपवास, आयंबिल, एकासना आदि किए हैं। आपकी प्रेरणा से पिछले सात वर्षों से घर में प्रतिदिन सायंकाल 20 मिनट सामूहिक जाप व प्रार्थना होती है। आचार्य गुरुदेव के जयपुर चातुर्मास 2012 के समय आपने आजीवन शीलव्रत का नियम अंगीकार किया था।

चेन्नई- सुश्राविका श्रीमती कंचना जी चौपड़ा धर्मपत्नी श्री पदमचन्दजी चौपड़ा का 62 वर्ष की आयु में 25 नवम्बर 2015 को स्वर्गवास हो गया। अजमेर के कवि और पत्रकार स्व. जीतमलजी चौपड़ा की पुत्रवधू श्रीमती कंचनाजी को अन्तिम समय में उनकी सखी श्रीमती कमला एस. मेहता (पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा- जैन कॉन्फ्रेंस, महिला शाखा) ने संथारा करवाया तथा देव-गुरु-धर्म के भजन सुनाये। *-तरुण चौपड़ा*

नेवासा (अहमदनगर)- सुश्राविका श्रीमती पुष्पाबाईजी धर्मपत्नी श्री मनसुखलाल जी शिंगी का 72 वर्ष की वय में 7 नवम्बर, 2015 को संथारा पूर्वक स्वर्गगमन हो गया। आप सरल एवं धर्म में रुचि रखने वाली श्राविका थीं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

मुक्तक

डॉ. रमेश 'मयंक'

वाणी

साधु-संन्यासी-अल्प भाषी
उनकी सरस- मधुर वाणी
सुनने के लिए
गृहस्थ अभिलाषी।

वचन

व्यक्ति आगम वचन सुनकर
आत्मा के नजदीक जाता है,
चित्त वृत्तियों को शान्त कर
मुक्ति पाता है।

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15517 से 15528 तक 12 सदस्य बने।

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

5100/- श्रीमती सुमनजी धर्मपत्नी श्री नौरतनजी एवं श्रीमती खुशबुजी धर्मपत्नी श्री पुनीतजी डागा, जोधपुर, श्री नौरतनजी डागा के 8 की तपस्या के उपलक्ष्य में।

5100/- श्रीमती पुष्पाजी लोढ़ा, जोधपुर, जिनवाणी में सहयोगार्थ।

2100/- श्री प्रकाशचन्दजी, शांतिलालजी, महावीरचंदजी लोढ़ा, नाडसर-बेंगलोर-चेन्नई।

2100/- श्री मंगलचन्द, धर्मीचन्दजी, राजेन्द्रजी भंसाली (गिरी वाले), चेन्नई, राजकीय विद्यालय में सहयोग कर नए भवन का उद्घाटन के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्रीमती सुशीलाजी, श्री देवेन्द्रकुमारजी, मितेषजी, जिनेशजी कटारिया 'सांभरवाले', मानसरोवर-जयपुर, श्री प्रकाशचन्दजी कटारिया का 21 अक्टूबर 2015 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

2100/- श्रीमती संतोषजी धर्मपत्नी स्व. श्री करोड़ीमल जी लूंकड़, श्री मनोजजी, श्रीमती सीमाजी, डॉ. दलवीरजी, चारूजी, तरुणाजी ढढ्ढा, जोधपुर, श्री किरोड़ीमलजी सुपुत्र स्व. श्री किशोरमलजी लूंकड़ का 8 नवम्बर 2015 को स्वर्गवास हो जाने पर भावांजलि स्वरूप।

1101/- श्री राजेन्द्रजी जैन (चकेरी वाले), जयपुर, श्रीमती सुभद्राजी जैन का संथारे सहित महाप्रयाण 02 नवम्बर 2015 को हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1101/- श्री पारसचन्दजी, जितेश कुमारजी जैन, सुमेरगंजमण्डी-बूंदी, कविश कुमारजी जैन का शोधकार्य पूर्ण होने पर एवं स्पेश में शोध कार्यशाला में भाग लेने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती ललिताजी गांग, सूरत, श्रीमहेन्द्रमलजी गांग सुपुत्र स्व. श्री मनमोहनमलजी गांग (जोधपुर वाले) के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री मंगलचन्दजी, धर्मीचन्दजी, राजेन्द्रजी भंसाली, चेन्नई, सुपुत्री पिंकीजी भंसाली के नौ की तपस्या सुख-शान्ति के साथ करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती लाडकँवरजी हीरावत, जयपुर, श्रीमती केलादेवीजी हीरावत के 61 दिन के संथारे की आठवीं पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्रीमती लाडकँवरजी हीरावत, जयपुर, श्री मेहताबचन्दजी हीरावत की 22वीं पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्रीमती ललिताजी महेन्द्रमलजी गांग, सूरत, अपनी पुत्रवधु स्वातिजी धर्मपत्नी श्री अनुपमजी गांग (यू.एस.ए.) एवं पुत्रवधु प्रियदर्शनीजी धर्मपत्नी श्री अभिषेकजी गांग

(मुम्बई) के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री कमलकिशोरजी, पीयूषजी कटारिया, रायपुर (छतीसगढ़), सहयोगार्थ।

1100/- श्री राजेन्द्रचन्दजी सिंघवी, मधुजी, मोहितजी एवं मेधनाजी सिंघवी, दिल्ली, पूज्य माताश्री श्रीमती मानकँवरजी सिंघवी का 07 दिसम्बर 2015 को प्रथम पुण्य स्मृति के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री दौलतजी, दीपकजी चोरड़िया, चेन्नई, भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण महोत्सव पर सजोड़े गुरुदर्शन, तेले की तपस्या, 1008 वंदना श्रीमती उत्तमजी द्वारा करने पर एवं 53वीं दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री अमीरचन्दजी जैन (सेवा निवृत्त आर.ए.एस.), गंगापुरसिटी, धर्मपत्नी स्व. श्रीमती पुष्पलताजी जैन की 25वीं पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री उम्मेदमलजी, नरेन्द्रजी, आदेशजी लुणावत, जोधपुर, सहयोगार्थ।

1100/- श्री राजेन्द्रप्रसादजी, शिरीषकुमारजी, मनीषजी जैन 'चकेरीवाले', जयपुर, श्रीमती सुभद्राजी जैन धर्मपत्नी श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन का 2 नवम्बर 2015 को स्वर्गगमन होने की स्मृति में।

1100/- श्री अशोकजी, चिरागजी खिंवसरा, जोधपुर, श्री जौहरीमल जी खिंवसरा की बारहवीं पुण्यतिथि पर उनकी पुण्य स्मृति में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के सत्साहित्य के लिए अर्थसहयोग

11000/- श्रीमती चान्दबाई पूनमचन्दजी बरड़िया, अहमदाबाद, मंडल से प्रकाशित सत्साहित्य के प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

5100/- श्रीमती पुष्पाजी लोढ़ा, जोधपुर, मंडल से प्रकाशित सत्साहित्य के प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

2500/- श्री माँगीलालजी, उम्मेदमलजी मेहता, अहमदाबाद, स्व. श्री जौहरमलजी मेहता की पुण्य स्मृति में सत्साहित्य प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

संघ-सेवा सोपान के अन्तर्गत साभार प्राप्त

11000/- श्री आशीषजी, सचिनजी,सुनीलजी बागरेचा, शिरपुर (महा.), पूज्य मातुश्री सौ. पुष्पाबाई जी सुभाषचन्दजी बागरेचा के 26 जनवरी 2016 को जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में संघ सहायतार्थ।

11000/- श्री सागरजी हुकुमचन्दजी नागसेठिया, होलनांथा (महा.), संघ सदस्यता हेतु।

11000/- सौ. मंगलाबाईजी, रमेशचन्दजी बागरेचा, शिरपुर (महा.), संघ सहायतार्थ।

1121/- श्रीमती प्रेमलताजी सोहनलालजी जीरावला, जोधपुर, चातुर्मासकाल में 121 एकाशन तप सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में जीवदया में सहयोगार्थ।

1100/- श्रीमती चन्द्रकलाजी जैन, जोधपुर, स्व. श्री इन्द्रसिंहजी जैन के 37 वें पुण्य स्मृति दिवस पर।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार प्राप्त

पर्युषण सहयोग-2015

रुपये	स्थान	रुपये	स्थान
3100	सातारा	1500	कुकडेश्वर

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड हेतु साभार प्राप्त

5000/- श्रीमती उगमाबाईजी-मोहनलालजी बोहरा 'ब्यावर वाले', तिरुवन्नामलै, पुस्तक प्रकाशन हेतु।

5000/- श्रीमती मदनबाईजी-पारसमलजी बोहरा 'ब्यावर वाले', तिरुवन्नामलै, पुस्तक प्रकाशन हेतु।

5000/- श्रीमती सरोजाबाईजी-सुशीलजी बोहरा 'ब्यावर वाले', तिरुवन्नामलै, पुस्तक प्रकाशन हेतु।

5000/- श्रीमती चन्द्राजी-आनन्दजी बोहरा 'ब्यावर वाले', तिरुवन्नामलै, पुस्तक प्रकाशन हेतु।

5000/- श्री अरविन्दजी,विशालजी बोहरा 'ब्यावर वाले', तिरुवन्नामलै, पुस्तक प्रकाशन हेतु।

5000/- सुश्री दिव्याजी, प्रीतिजी, मनीषाजी बोहरा 'ब्यावर वाले', तिरुवन्नामलै, पुस्तक प्रकाशन हेतु।

गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

24000/- श्रीमती देवबालाजी-राजेन्द्रजी भण्डारी, मुम्बई, सहयोगार्थ।

12000/- श्री गगनजी जैन, भरतपुर, श्रीमती प्रेमलताजी जैन (अध्यक्ष- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, वासनगेट, भरतपुर), सहयोगार्थ।

12000/- श्री सोहनलालजी, बुधमलजी, सम्पतजी, राजनजी बाघमर, मैसूर (कर्नाटक), सहयोगार्थ।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***Sh. M. Harish Kawad****, No. 5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600056(T.N.) (Mob. 9543068382)*

आगामी पर्व तिथि

मार्गशीर्ष शुक्ला 8, शनिवार	19.12.2015	अष्टमी
मार्गशीर्ष शुक्ला 11, सोमवार	21.12.2015	मौन एकादशी
मार्गशीर्ष शुक्ला 14, गुरुवार	24.12.2015	चतुर्दशी
मार्गशीर्ष शुक्ला 15, शुक्रवार	25.12.2015	पक्खी
पौष कृष्णा 8, शनिवार	02.01.2016	अष्टमी
पौष कृष्णा 14, शनिवार	09.01.2016	चतुर्दशी, पक्खी
पौष शुक्ला 8, रविवार	17.01.2016	अष्टमी
पौष शुक्ला 14, शुक्रवार	22.01.2016	चतुर्दशी, आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. का 106 वां जन्मदिवस
पौष शुक्ला 15, शनिवार	23.01.2016	पक्खी

संघ-सेवा का सुन्दर, अनुपम सुनहरा योग अपनी प्रतिभा, क्षमता व समय का करें सदुपयोग!

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं द्वारा विभिन्न प्रकार की धार्मिक गतिविधियों का नियमित रूप से संचालन किया जा रहा है। संघ-सेवा महान् निर्जरा का कारण है, ऐसा समझकर जिन महानुभावों के पास **नियमित सेवा देने की अनुकूलता है, जिनमें प्रतिभा, योग्यता, क्षमता एवं रुचि है** उनसे विनम्र निवेदन है कि वे संघ की निम्नांकित गतिविधियों में से जिसमें भी सक्रिय रूप से जुड़ना चाहते हैं, वे निम्नांकित पते पर अपनी संक्षिप्त जानकारी के साथ अपनी भावना भिजवाने का कष्ट करावें:-

1. **विहार-सेवा-** हमारे पूजनीय सन्त-सतीवृन्द के विचरण-विहार में विहार-सेवा का लाभ लेना एवं अन्य को भी जोड़ना।
2. **प्रचार-प्रसार-** (1) सामायिक-स्वाध्याय एवं निर्व्यसनता हेतु, (2) धर्माराधना करवाने हेतु, (3) संगठन को मजबूत करने हेतु।
3. **अध्यापन-**(1) स्थानीय एवं क्षेत्रीय धार्मिक शिक्षण शिविरों में अध्यापन, (2) धार्मिक पाठशालाओं में अध्यापन, (3) पाठशालाओं के व्यवस्था एवं संचालन में सहयोग, (4) शिक्षण बोर्ड की परीक्षा देने हेतु प्रेरित करना।
4. **कार्यालय व्यवस्था-** संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के कार्यालयों के कुशल संचालन एवं व्यवस्था में सहयोग।
5. **अर्थ सहयोग-** (1) संघ के लिए अर्थ सहयोग हेतु प्रेरणा करना, (2) आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना हेतु दानदाताओं को प्रेरित करना, (3) स्वधर्मी वात्सल्य योजना हेतु दानदाताओं को प्रेरित करना।

यदि संघ-सेवा करने की हो आपकी इच्छा।
आपके प्रत्युत्तर की आतुरता से रहेगी प्रतीक्षा।।

आपके सकारात्मक सहयोग की अपेक्षा के साथ......

निवेदक

पी. शिखरमल सुराणा, *राष्ट्रीय अध्यक्ष*

सम्पर्क सूत्र- (1) अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. 0291-2636763/2641445, ई-मेल-abshrhssangh@yahoo.com

(2) Sh. P. Shikharmal Surana, **International Law Centre**,61-63, Dr. Radhakrishan Sallai, Mailapore, Chennai-600004 (T.N.) Ph. 044-28120000, 098844-30000, E-mail-pss@lawindia.com

(3) श्री पूरणराजजी अबानी, राष्ट्रीय महामंत्री, पूज्यकृपा, 32-नेहरूपार्क, जोधपुर-342003 (राज.), फोन नं. 0291-2432218/93147-10985

अलविदा बाईपास सर्जरी

अब बाईपास सर्जरी के बारे में कभी ना सोचिये

काउन्टर पलसेशन थैरेपी

(ई.ई.सी.पी.)

द्वारा प्राकृतिक बाईपास करवायें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी (ई.ई.सी.पी.) में क्या होता हैं :-

हृदय रोगी को साधारणतया 35 दिन तक प्रतिदिन एक घंटे की थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन जो कि एफ.डी.ए., अमेरिका द्वारा मान्यता प्राप्त है, पर दी जाती है । यह थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन के विशेष प्रकार के बिस्तर पर रोगी को लिटाकर दी जाती है। तीन बड़े हवा से फूलने वाले कफ पैड जो ब्लड प्रेशर उपकरण के कफ पैड की तरह के होते हैं, उन्हें रोगी की पिंडलियों, जांघ एवं कमर के निचले हिस्से पर बाँधा जाता है एवम् इन कफ पैड के इनफ्लेशन एवम् डिफ्लेशन की क्रिया को मशीन से जुड़े कम्प्यूटर द्वारा निर्देशित किया जाता है। इस सारी प्रक्रिया का इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ मशीन के पर्दे पर अवलोकन किया जाता है। मशीन पर उपचार के दौरान कफ पैड के फैलने पर रक्त पूर्ण दबाव से हृदय की ओर जाता है एवं इस दबाव के कारण हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियों में रक्त तीव्र गति से प्रवाहित होकर इन धमनियों को क्रियाशील कर देता है व हृदय को पर्याप्त मात्रा में रक्त मिलने से व्यक्ति को एन्जिना दर्द (छाती दर्द) नहीं होता हैं। 35 दिन तक यह थैरेपी लेने से हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियाँ स्थायी रूप से खुल जाती है और छोटी-छोटी धमनियाँ आपस में जुड़कर नई धमनियों का निर्माण करती हैं।

श्रीमती गुलाब कुम्भट मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

समर्पण हार्ट एण्ड हैल्थ केयर सेन्टर

ए - 12, इण्डस्ट्रीयल एस्टेट, उद्योग भवन के पास, न्यू पावर हाऊस रोड, जोधपुर (राज.)

Email : samarpanjodhpur@gmail.com

फोन : 2432525

सम्पर्क : धीरेन्द्र कुम्भट 93147 14030

卐 चारित्र आत्माओं के लिए ट्रस्ट द्वारा निःशुल्क उपचार 卐

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

साधना के मार्ग में प्रगतिशील वही बन सकता है,
जिसमें संकल्प की दृढ़ता हो।

- आचार्य श्री हस्ती

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhmal Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurabh, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

Gurudev

SURANA™

yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

Electric Arc Furnace

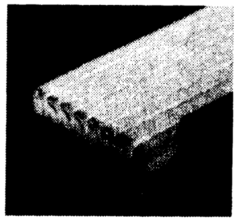
Billets

Rolling Mill

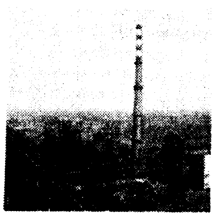
Captive Power Plant

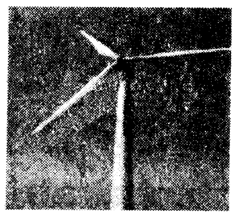
Windmill

With best wishes from

ISO 9001 : 2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

।। पुण्यार्जन का सुनहरा अवसर ।।

सदस्यता अभियान से जुड़िये, गुरु भाईयों की शिक्षा में सहयोग करिये।

आदरणीय रत्नबंधुवर,

अत्यधिक हर्ष का विषय है कि छात्रवृत्ति योजना की लाभार्थी सुश्री श्वेता और सुश्री स्मिता सुपुत्री श्रीमान् मुकेश जी बुरड़, शिरपुर के कम्प्यूटर इजिंनियर बनने के बाद शिरपुर में A.R. Patil CBSE School में दोनों प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। लाभार्थी छात्राओं ने अपनी भावना से प्रथम वेतन में से एक-एक छात्र की छात्रवृत्ति राशि का सहयोग किया है। संघ द्वारा ऐसी छात्राओं का तहेदिल से धन्यवाद एवं आभार।

छात्रवृत्ति योजना संघ की महत्त्वपूर्ण योजनाओं में से एक योजना है, अब इस योजना की निरन्तरता के लिए समिति के पदाधिकारियों ने निर्णय लिया है कि छात्रवृत्ति योजना में अर्थसहयोग के लिए सदस्यता अभियान प्रारम्भ किया जायेगा, जिसमें सदस्यों द्वारा प्रतिवर्ष अर्थसहयोग किया जायेगा। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है -

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य
(5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	(1 लाख रुपये प्रति वर्ष)

नोट-सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह छात्रवृत्ति योजना के आरक्षित पृष्ठ पर प्रकाशित किया जायेगा।

जो भी अनन्य गुरुभक्त योजना में अर्थ सहयोग करके सदस्यता ग्रहण करना चाहते हैं एवं एक छात्र के लिए 12000/- रुपये अथवा उनके गुणक में छात्रवृत्ति राशि का सहयोग करने के लिए चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि द्वारा जमा या भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है -

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai,Chennai(TN) IFSC Code - UTIB0000168
PAN No. - AAATG1995J
Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची -

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई। युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन	श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस,चैन्नई। श्रीमान् लक्ष्मीमल जी लोढ़ा,जोधपुर। श्रीमान् दलीचंद जी सुरेश जी कवाड़, पून्नामल्लई। गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् गणपत जी हेमन्त जी बाघमार, चैन्नई।

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें-
B.Budhmal Bohra - Poojaa Foundation, Door No. 921, 1st Floor, Poonamallee High Road, EVR 1st Lane, CHENNAI-600084 (TN)
छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें- मनीष जैन, चैन्नई (Mob.095430 68382)

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

।। जैनं जयति शासनम्।।

With Best Compliments from:

Dharamchand Paraschand Exports

Paras Chand Hirawat

CC 301-302, Bandra Kurla Complex, Bandra (E),
Mumbai-400 051 (MH)
Tel. : +91 22 2363 0320/ +91 22 4018 5000
Fax : +91 22 2363 1982, Email : dpe90@hotmail.com

KANTILAL SHANTILAL RAJENDRA LUNKER

PACHPADRA-PALI-ERODE

K.L. ASSOCIATES

'Sanskar', 177-B, Adarsh Nagar, Pali-306401 (Raj.)
Mobile : 094141-22757
135, N.M.S. Compound, ERODE-638001 (T.N.)
Tel. : 3205500 (O), Mobile : 093600-25001

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V. Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road, Vile Parle (E),
Mumbai-400057 (MH) Tel. : 26185801, 32940462 (O),
E-mail : bhansalidevelopers@yahoo.com

S.D. GEMS & SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga
Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

FC51, Bharat-Diamond Bourse,
Bandra Kurla Complex,
Bandra (E), Mumbai-400051 (MH)
Ph. : 022-23684091, 23666799 (o), 022-28724429
Fax : 22-40042015, Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Basant Jain & Associates, C.A.
BKJ & Associates, C.A.
BKJ Consulting Pvt. Ltd.,
Megha Properties Pvt. Ltd.
Ambition Properties Pvt.Ltd.

बसंत के जैन

अध्यक्ष: श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट
601, Dalamal Chambers, New Marine Lines,
Mumbai - 400020 (MH)
Ph. : 022-22018793, 22018794 (o), 022-28810702

NARENDRA HIRAWAT & CO.

N.H. Studios ***Launches*** **N.H. Jewells**

A/1502, Naman Midtown, S.B. Road, Elphistone Road, Mumbai-400013 (MH)
Web. www.nhstudioz.tv, Tel. : 022-24370713

।।श्री महावीराय नमः।।

।।जय गुरु हस्ती।। ।।जय गुरु हीरा-मान।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

रात्रि भोजन त्याग रूप व्रत को आत्म-कल्याण के लिए स्वीकार करना चाहिए।
– भगवान महावीर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

रात्रि भोजन त्याग के साथ-साथ भक्ष्य-अभक्ष्य का विचार करके ही अन्न ग्रहण करना चाहिए।
– आचार्य हस्ती

अहिंसा परमो धर्म

रात्रि भोजन सदोष व तामसी आहार होता है। समाधि का अभिलाषी साधक ऐसी तामसी आहार से दूर ही रहता है।
– आचार्य हीरा

रात्रि भोजन करें या न करें, अगर त्याग नहीं है तो उसे दोष लग ही रहा है। अतः रात्रि भोजन का प्रत्याख्यान करना आवश्यक है।
– उपाध्याय मान

सामूहिक रात्रि भोजन आयोजन त्याग हेतु विनम्र अपील

प्रभु वीर का शासन मिला, गुरु भगवन्तों का सानिध्य मिला ।
श्रद्धा-भक्ति के भाव जगे, सामूहिक भोज रात्रि को तजे ।।

रात्रि भोजन त्याग जैनों की प्रमुख पहचान है।

रात्रि भोजन करना दुर्गति का कारण है।

रात्रि भोजन अनर्थदण्ड व पाप का कारण है।

आओ - हम सब संकल्प करें कि सामूहिक रात्रि भोजन का आयोजन कदापि नहीं करेंगे।

विनीत – समस्त जैन समाज

सौजन्य से : मधु कवाड़, चैन्नई

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 दिसम्बर, 2015
वर्ष : 73 ★ अंक : 12 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 दिसम्बर, 2015★मार्गशीर्ष, 2072

waterfront
at KALPATARU
riverside
PANVEL

Premium 2 & 3 BHK residences

✆ 022 3064 3065

Promoters: **M/S Kalpataru + Sharyans**
Site Address: Opp. Panch Mukhi Hanuman Temple, Old Mumbai - Pune Highway, Panvel - 410 206. | **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. Tel.: + 91 22 3064 3065 | Fax: + 91 22 3064 3131 | Email: sales@kalpataru.com | visit: www.kalpataru.com

Images are for representative purposes only. This property is secured with Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate / Permission would be provided, if required. Conditions apply.

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन